treatment and the arrangement of the subject. The Source Method also by its means can be followed as much as possible, with the help of the illustrations and maps, supplemented by suitable questions from the teacher, so as to create interest for the student. The geographical peculiarities of India, explained in the introductory lesson and the chronological chart of the world's celebrities should be clearly noted and supplied by the teacher, so as to lead the student ultimately to view the world's history as a comprehensive whole

The book being originally meant for Marathi students only naturally contained such feature as would appeal to their environment in the peninsular part of India. In this Hindi edition, however, I have tried, as far as I could to bring in the special features [illegible] the North Indian History through the various stages [illegible] in the present atmosphere of the [illegible] is what the student needs [illegible] the [illegible] idea of a [illegible] the harmful pr[illegible] eleminated [illegible] history will be [illegible] the [illegible] this much desired unity [illegible]

ग्यारहवाँ अध्याय

नारायणराव और सवाई माधवराव

१—नारायणराव का वध और राज्य का हास
२—प्रथम अंग्रेज़-मराठा युद्ध
३—महादजी द्वारा बादशाही का प्रबंध
४—खर्दा की लड़ाई
५—सवाई माधवराव व अन्य कर्णधारों की मृत्यु

बारहवाँ अध्याय

छत्रपति द्वितीय शाहू, पेशवा द्वितीय बाजीराव

१—पेशवा द्वितीय बाजीराव
२—नाना फड़नवीस की मृत्यु
३—सैनाती फौज़
४—अंग्रेज़ मराठों का दूसरा युद्ध
५—होल्कर के साथ युद्ध . .

तेरहवाँ अध्याय

महाराष्ट्र शक्ति का अंत

१—तीसरा मराठा युद्ध
२—भोंसले और होल्कर के साथ युद्ध
३—पिंडारी युद्ध
४—मराठाशाही का अंत
५—मराठाशाही के अन्त होने के कारण

३—भारत के समुद्री किनारों पर अनेक बन्दरगाह हैं। ये भारत के प्रवेश द्वार हैं। ऐसे बन्दरगाह पश्चिम-तट पर अनेक हैं, लेकिन पूर्वी तट पर केवल इने गिने ही हैं और वे भी पश्चिमी बन्दरगाहों के समान अच्छे नहीं हैं।

४—व्यापार की सुविधा के लिए पूर्व काल में बड़े बड़े नगर केवल बड़ी बड़ी नदियों के किनारे बसाये जाते थे। लेकिन योरपीयों के भारत में आने से बड़े बड़े जहाज़ों के सुभीते के लिए कलकत्ता, मद्रास, बम्बई, कराँची इत्यादि नगर व्यापार की बड़ी से बड़ी मंडी बन गये हैं। इसीलिए ये बड़ी बड़ी रेलवे लाइनों के केन्द्र बनाये गये हैं।

५—सतपुड़ा की खाड़ी से लेकर महानदी के सुहाने तक जो जंगल पश्चिम से पूर्व तक फैला हुआ है उसके बीच में विन्ध्याचल पहाड़ की श्रेणी है। इस श्रेणी से भारत को उत्तर और दक्षिण—इन दो भागों में बाँट दिया है। भारत के ये दो विभाग बहुत प्राचीन काल से माने जाते हैं। प्राचीन काल में यह जंगल इतना सघन था कि इसको पार करना बड़ा कठिन काम था।

६—उत्तर भारत एक लम्बा-चौड़ा मैदान है। इस भाग में सिन्धु और गंगा दो बड़ी नदियाँ तथा इनकी अनेक सहायक नदियाँ बहती हैं, जिससे यह देश बड़ा उपजाऊ बन गया है इसी देश को पहले 'आर्यावर्त' कहते थे, यहीं 'आर्य-सभ्यता' की उन्नति हुई थी। इसलिए इन नदियों की रचना और देश पर पड़नेवाले प्रभाव की बात जाननी और समझनी ज़रूरी है।

३—भारत के उत्तर में [illegible] है और दक्षिण में

३—भारत के समुद्री किनारों पर अनेक बन्दरगाह हैं। ये भारत के प्रवेश द्वार हैं। ऐसे बन्दरगाह पश्चिम-तट पर अनेक हैं लेकिन पूर्वी तट पर केवल इने-गिने ही हैं और वे भी पश्चिम बन्दरगाहों के समान अच्छे नहीं हैं।

४—व्यापार की सुविधा के लिए पूर्व काल में बड़े बड़े नग केवल बड़ी बड़ी नदियों के किनारे बसाये जाते थे। लेकि योरपीयों के भारत में आने से बड़े बड़े जहाज़ों के सुभीते लिए कलकत्ता, मद्रास, बम्बई, करांची इत्यादि नगर व्याप की बड़ी से बड़ी मंडी बन रहे हैं। इसीलिए ये बड़ी बड़ी रेल लाइनों के केन्द्र बनाये गये हैं।

५—सतपुड़ा की खाड़ी से लेकर महानदी के मुहाने तक अंगुल पश्चिम से पूर्व तक फैला हुआ है उसके बीच में विन्ध्याच पहाड़ की श्रेणी है। इस श्रेणी ने भारत को उत्तर औ दक्षिण—इन दो भागों में बाँट दिया है। भारत के ये दो विभा बहुत प्राचीन काल से माने जाते हैं। प्राचीन काल यह अंगुल इतना सघन था कि इसको पार करना बड़ा कठि काम था।

६—उत्तर-भारत एक लम्बा-चौड़ा मैदान है। इस भाग सिन्धु और गंगा दो बड़ी नदियाँ तथा इनकी अनेक सहाय नदियाँ बहती हैं, जिससे यह देश बड़ा उपजाऊ बन गया है इसी देश को पहले 'आर्यावर्त' कहते थे, यहीं 'आर्य-सभ्यता' की उन्नति हुई थी। इसलिए इन नदियों की रचना औ देश पर पड़नेवाले प्रभाव की बात जाननी और समझनी उचित है।

७—भारत के उत्तर में हिमालय-पर्वत माला है और दक्षिण

अगाध भारत-महासागर है। इसलिए उत्तर-भारत में निश्चित रूप में वृष्टि होती है। उपजाऊ भूमि और सिंचाई के लिए जल सुलभ होने से इस देश का मुख्य धंधा खेती है। अन्य धंधे इसी के सहारे पनपते हैं।

८—अनुकूल जलवायु, उपजाऊ भूमि और उद्योगशील तथा बुद्धिमान लोगों के बसने से यह देश पूर्व-काल में ही अपार सम्पत्ति का घर बन चुका था। यहाँ अनेक विद्याओं तथा कलाओं की उन्नति हुई। इसीलिए यह सारे संसार में इतना प्रसिद्ध हो गया कि विदेशों की दृष्टि इसी पर गड़ गई।

९—भिन्न भिन्न प्रकार के जल-वायु, फल-फूल, वनस्पतियाँ, पक्षी एवं अन्य प्राणी, खनिज-सम्पत्ति इत्यादि सभी इस देश में प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। इसलिए पश्चिमी तट के बंदरगाहों पर विदेशों के जहाज़ इन चीज़ों को लेने के लिए आते थे। इससे यहाँ का व्यापार बहुत बढ़ा-चढ़ा था। इस व्यापारिक उन्नति के कारण ही इसे लोग 'सुवर्ण-भूमि' कहते थे। श्रीकृष्ण की सोने की द्वारका-नगरी और सुदामा को दी गई सोने की सुदामापुरी (पोर बंदर) की कथायें उस समय का वैभव आज भी हमें बताती हैं।

२—स्थल-निर्देश

आज-कल रेल-पथों के खुल जाने से यात्रा के प्राचीन कार्वान मार्ग और लड़ाई तथा प्रबंध के स्थानों का महत्व कुछ भी नहीं रह गया। इसलिए पहले की घटनाओं को यथावत समझने के लिए उस समय की स्थिति को ध्यान में रखना ज़रूरी है। हिमालय पर्वत-श्रेणी के दक्षिण का भूभाग गंगा का और दक्षिण में दक्षि

२—पृथिवी का क्षेत्र-फल और जन-संख्या

(वर्ण और धर्म)

देश	क्षेत्रफल वर्ग मील	जन-संख्या	पृथिवी भर की वर्ण-संख्या		
ग्रेट ब्रिटेन व आयर्लैंड	१ ला० २१ ह०	४ क० ७० ला०	गौर (काकेशियन)	७७ करोड़	
र ब्रिटिश राज्य	१ क० २५ ला०	३९ क० ८५ ला०	पीत (मंगोलियन)	५४ करोड़	
टिश साम्राज्य का योग	१ क० २७ ला०	४४ क० ५५ ला०	कृष्ण (इथिओपियन)	१७॥ करोड़	
टिश भारत	१० ला० ९३ ह०	२४,६९,९७,११२	ताम्र (अमरीकन)	२ करोड़	
				२० ला०	
रतीय राज्य	७ ला० ९ ह०	७,१२,२९,०८९		५० करोड़	
				७० ला०	
कुल भारत	१८ ला० २ ह०	३१,८९,३६,९०१	कुल जोड़		

योरप	३७ लाख	३८ करोड़	पृथिवी भर के धर्म	संख्या
एशिया	१६८ लाख	८० करोड़	ईसाई	४७ करोड़
अफ्रीका	१२० लाख	२० करोड़	बौद्ध	४२ करोड़
अमरीका	१६५ लाख	१२ करोड़	हिन्दू	२१ करोड़
आस्ट्रेलिया	३० लाख		मुसलमान	२० करोड़
कुल पृथिवी	५२० लाख	१५० कोटि	यहूदी	८० लाख
थी का भाग	१४५० लाख	१	अन्य	२० करोड़
पृथिवी	१९७० लाख		कुल योग	१५८ क

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
		[illegible]	[illegible]

(३) भारत के नगरों की जन-संख्या

(सन् १९२१ की मनुष्य-गणना के अनुसार)

कलकत्ता	१३,२७,५४७	नागपुर	१,४५,१२२
बम्बई	११,७५,९१४	श्रीनगर	१,४१,७३५
मद्रास	५,२६,९११	मथुरा	१,३८,८९४
हैदराबाद (दक्षिण)	४,०४,१८०	बरेली	१,२९,४५९
रंगून	३,४१,९६२	मेरठ	१,२२,६०६
दिल्ली	३,०४,४२०	त्रिचनापली	१,२०,४२२
लाहौर	२,८१,७८१	जयपुर	१,२०,२०७
अहमदाबाद	२,७४,००७	पटना	१,१९,९७६
लखनऊ	२,४०,५६६	ढाका	१,१९,४५०
बंगलोर	२,३७,४९६	सूरत	१,१७,४३४
कराँची	२,१६,८८३	अजमेर	१,१३,५१२
कानपुर	२,१६,४३६	जबलपुर	१,०८,२९३
पूना	२,१८,७९६	पेशावर	१,०८,४५२
बनारस	१,९८,४८७	रावलपिण्डी	[illegible]
आगरा	१,८५,५३२	बड़ोदा	[illegible]
अमृतसर	१,६०,२१८	इन्दौर	[illegible]
इलाहाबाद	१,५७,२२०	मैसूर	[illegible]
मंडाले	१,४८,९१७	ग्वालियर	[illegible]

छोटी नावें काम में लाना, देवता के संतोष के लिए मनुष्य की बलि देना इत्यादि बातों का प्रारम्भ।

७ से ६ हज़ार—पश्चिमी एशिया और मिस्र में दीवारों से घिरे हुए नगरों का बसाना, विशेषतः मेसोपोटामिया या इराक़ में उनके कपड़े बिनने का प्रारम्भ, मछली पकड़ने के लिए नावों का बनना।

५ से ४ हज़ार—दजला (Tigris) और फ़ुरात (Euphrates) नामक नदियों के बीच के प्रदेश सुमेरिया तथा नील-नदी के तट पर मिस्र-देश में ज्यामितिविद्या की उन्नति, अन्य विषयों में सुधार, आर्यों के वेद, गीता इत्यादि ग्रन्थों का समय। ४२४१ मिस्र की वर्ष-गणना का आरम्भ।

४ से ३ हज़ार—मिस्र-देश में पिरामिड का निर्माण। अयोध्यापति श्रीरामचन्द्र का समय। सुमेरिया में नहरों का बनना (सिन्धप्रान्त में मोहंजोदारो और मुलतान के पास हरप्पा नाम के दो प्राचीन नगरों का पुरातत्त्वविदों-द्वारा हाल में पता लगा है, उनके खंडहरों से उनकी मूल-रचना ईसाई सन् से पूर्व तीन हज़ार वर्ष प्राचीन सुमेरियन के समकालीन अनुमान की गई है। इस सम्बन्ध में अभी मत बदलना सम्भव है) रेशमी वस्त्र का उपयोग चीन में होने लगा।

३१०१—युधिष्ठिर के संवत्सर का प्रारम्भ।

२४००—सुमेरिया का पहला राजा सार्गन।

२०००—असीरियाई साम्राज्य की स्थापना। आर्यों की पूर्व शाखा कैस्पियन समुद्र के पास से पश्चिम की ओर योरप में डानूब नदी के तट तक थी। वहाँ से उनका आगमन

कोने से उत्तर-अफ़ग़ानिस्तान के मार्ग-द्वारा भारत में प्रवेश। दक्षिण में ईरान और पश्चिम में बाल्कन प्रायद्वीप से होकर इटली में आर्यों की तीन शाखाओं का प्रयाण। भारतीय युद्ध ३०००—२५००० के बीच में। वराहमिहिर इस युद्ध का समय २४४८ वाँ वर्ष बताता है।

२०००—१५००—आर्यों की उन्नति। गेहूँ, लोहा, और घोड़ों का व्यवहार।

१६००—मिस्र में फ़ेरोह राजा का ऐश्वर्य उसका असीरिया वालों के साथ युद्ध।

१५००—१०००—असीरिया और बेबीलोनिया में सुधार की बाढ़, यहूदी धर्म-संस्थापक मोज़ेज़ (मूसा) का समय, कपड़ा, लोहा तथा काँच का उपयोग होना और लोगों का रहन सहन लगभग आज-कल जैसा समृद्धिपूर्ण होना। भारत में आर्यों के ऋग्वेद की ऋचाओं का संग्रह होना और उनका जीवन सुसम्पन्न बनना, उपनिषदों की रचना। पेलेस्टाइन-देश में यहूदी लोगों के पूर्वज अब्राहम के वंश का उदय।

१०००—९६०—हिब्रू राजे डेविड और सालोमन का जेरुसलम शासन।

१०००—८००—ग्रीक जाति का उत्तर में विस्तार, भारत में आर्य का आग्नेय में विस्तार, मिस्र का उद्धार और वहाँ लिपि का विकास।

८००—सिसली के सामने उत्तर-अफ्रीका के तट पर कार्थे नगर की उन्नति। इसकी जन-संख्या १० लाख थी पारसी ज़रथोस्ती धर्म के संस्थापक जरथोस्त का सम

१—१००—पुरुषपुर अर्थात् पेशावर के राजा कनिष्क का शासन-काल, उनका राजवैद्य चरक; नैयायिक गौतम; सेनापति ऐग्रिकेला का इङ्गलैंड जीत कर दीवार बनाना; ग्रीस के ज्यामितिकार यूक्लिड का समय।

७८—शालिवाहन-शक का प्रारम्भ।

१००-२००—बुद्धचरित्रकार अश्वघोष।

११७—रोमन-साम्राज्य की उन्नति की चरमावस्था; बादशाह ट्रेजन की मृत्यु; हेड्रियन का राज्यारोहण।

१३०—ज्योतिषी टॉलेमी का जीवन-काल।

२००—विष्णु-स्मृति; कवि भास; सुश्रुत।

३५०—याज्ञवल्क्य; मुद्राराक्षस के लेखक विशाखदत्त का जीवन-काल।

१६१-१८०—मार्कस आरेलियस।

७३-२२५—पैठण का शालिवाहन-वंश; भाजे, कार्ले, नासिक, कान्हेरी इत्यादि गुफाओं का बनना।

३१२-३३७—सम्राट् कान्स्टेंटाइन दि ग्रेट की ईसाई-धर्म में दीक्षा।

३००-४००—कवि कालिदास का जीवन काल; बुद्ध-धर्म का चीन में प्रवेश; वाग्भट।

३२०-५१०—गुप्तवंश; मगध के पाटलिपुत्र में चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य; (३७५-४१३) विद्या-कला का परमोत्कर्ष; अजंटा, सारनाथ, देवगढ़ इत्यादि में गुफाओं का बनना;

३५०—वेरुल की गुफा।

३५०—बीज-गणित का यूरोप में व्यवहार; ३९९-४१४ फ़ाहियान की भारत-यात्रा।

४७६—बीज-गणित का प्रथम रचयिता आर्यभट्ट; ४९५-५८७

७३२—फ्रांस में टूर्स में चार्ल्स मोर्टेल-द्वारा मुसलमानों की हार।

८-९७३—मान्यखेट का राष्ट्रकूट-वंश।

७६०—येरूल के कैलास की गुफा तैयार हुई।

४-७९५—खलीफा अलमंसूर } अरेबियन नाइट्स नामक
६-८०९—खलीफा हारूं रशीद } ग्रन्थ के नायक।

८-८१४—मध्य-यूरोप में शार्लमेन बादशाह का शासन-काल।

८-८२०—आदि-शंकराचार्य।

७०४—धारापुरी की गुफा।

३-८१३—राष्ट्रकूट-वंशी तीसरे गोविन्द ने दक्षिण से जाकर कन्नौज तक का देश विजय किया।

८१५-८७७—राष्ट्रकूट-वंशी राजा अमोघवर्ष का जीवनकाल। अरब-प्रवासी सुलेमान इस राजा की गिनती संसार के चार बड़े राजों में करता था। इस राजा के समकालीन राजे—बंगाल का राजा धर्मपाल, और उसका पुत्र देवपाल पाटलिपुत्र (पटना) में पराक्रमी और यशस्वी राजे हुए।

८७१-९०१—इङ्गलैंड के राजा अल्फ्रेड। जावा में बोरबुदुर के प्रचंड बुद्ध-जैन देवालय की स्थापना।

१००-१०००—

९३२—मुंजाल नामक आर्य-ज्योतिषी।

९६७—गज़नी की स्थापना।

२८३—मैसूर में श्रवणबेलगोला स्थान में धर्मगुरु गोमत की ५६॥ फुट ऊँची भव्य मूर्ति तैयार की गई।

१०००-११००—

२८४-१०१०—राजराज चोला ने तंजोर का मन्दिर निर्माण

[illegible] विस्तार ही नष्ट [illegible] था। [illegible] के [illegible] साथ [illegible] आर्य-संस्कृ-ति का प्रसार हुआ। प्राचीन [illegible] के साथ साथ इस [illegible] का [illegible] भी [illegible] मिलता है। इससे यह पता चलता है कि, पंजाब के लोगों में [illegible] अधिक हुआ है। इसके बाद [illegible] के साथ साथ इस देश में लोगों का [illegible] प्रसार हुआ। और बाद को [illegible] का [illegible] भी [illegible] हुआ। [illegible] के [illegible] शक, हूण, [illegible], गुर्जर इत्यादि लोगों की अनेक जातियाँ इस देश में आईं। इनमें से अनेक यहाँ के इस देश में अपने राज्य भी स्थापित किये। विदेशी लोग [illegible] के नाम से [illegible] प्रसिद्ध हैं। मुसलमानों के [illegible] होने पर अरब, तुर्क, मुगल इत्यादि अन्य विदेशी लोग भी इस देश में आकर अपनी बस्तियाँ बना कर बस गये। इनका [illegible] दिया जायगा। [illegible] कि भारत की वर्तमान प्रजा में विदेशी लोगों का किस प्रकार [illegible] हुआ है, यह इससे समझ लेना चाहिए।

आर्यों के आने का [illegible] [illegible] यह [illegible] बात का भी ध्यान रखना चाहिए [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] नहीं था [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] बाद [illegible] [illegible] [illegible] में [illegible] था [illegible] [illegible] नहीं। आवश्यक [illegible] था [illegible] [illegible] इत्यादि आर्य के अनेक [illegible] [illegible] की [illegible] यह बात [illegible] आप [illegible] हुई

अवस्था में शरीर-त्याग किया। उनके अनुयायियों की संख्या १२ हज़ार थी। बाद में चन्द्रगुप्त के शासन-काल में उनके सारे उप देशों का संग्रह किया गया। उस संग्रह का कुछ भाग आज भी पाली-भाषा में उपलब्ध है। उस भाग का नाम अंग है। कहा जाता है कि चन्द्रगुप्त ने भी जैनियों का अच्छा सम्मान किया था। उसकी आज्ञा से भद्रबाहु नाम का एक जैन-विद्वान् जैनियों का एक बड़ा संघ अपने साथ लेकर दक्षिण-भारत में गया और वहाँ जैन-पंथ का प्रचार किया। कुछ समय बीतने पर ये लोग मगध राज्य को फिर लौटे। उस समय उत्तर के जैनियों से उनका कुछ मत-भेद हो गया, जिससे दक्षिण के जैनी दिगम्बर और उत्तर के जैनी श्वेताम्बर—अर्थात् सफ़ेद वस्त्रवाले कहलाये। भारत में कुछ काल तक दिगम्बरों का प्रचार बहुत बढ़ा-चढ़ा रहा। दक्षिण में दिगम्बरी जैनियों की संख्या अधिक है और उत्तर में या पूर्वाना आदि प्रान्तों में श्वेताम्बर जैनी अधिक हैं। तीर्थ-स्थानों में दोनों सम्प्रदायों की धर्मशालायें बड़ी सुविधा-जनक बनी हैं। जैन मतानुयायी इस देश में सभी प्रान्तों, सभी जातियों और सभी भाषा-भाषियों में मिलते हैं। ये लोग स्वभाव से ही सात्विक, परोपकारी और व्यापार-प्रवीण होते हैं। स्थान स्थान पर इनके विशाल देव-मन्दिर और धर्मशालायें तथा लोकोपयोगी अनेक संस्थायें खुली हुई हैं। आबू पहाड़ पर बने हुए जैन-मन्दिर को जिसने देखा है वह तत्कालीन जैनियों की शिल्प-कला-सम्बन्धी उन्नति का अनुमान कर सकता है। जीव-हिंसा से बचने के लिए ये लोग दिन ही दिन में भोजन करते हैं। पर्यटन करते समय मुँह पर कपड़ा बाँधने का इनका नियम भी है।

मर जाने के बाद उनके अनुयाइयों ने पटना के समीप एक गुफा में भारी सभा करके उनके उपदेशों का संग्रह किया और उसे तीन भागों में विभक्त किया। इनको पिटक या करंडक कहते हैं। इस मण्डली ने बौद्ध-धर्म का प्रचार बड़े ज़ोरों के साथ किया। इसके ठीक सौ वर्ष बाद बौद्धमतानुयाइयों की दूसरी सभा बैठी। उस समय बौद्ध लोग दो दलों में बँट गये। इनमें एक पक्ष ने उत्तर में और दूसरे पक्ष ने दक्षिण में बौद्ध-धर्म का प्रचार किया। इसके सौ वर्ष बाद चक्रवर्ती नरेश अशोक ने ई० पू० २४२ में बौद्ध-विद्वानों की तीसरी सभा की और उस धर्म के प्रचार में एक नवीन उत्साह का सञ्चार किया। इसके लगभग ४०० वर्ष बाद राजा कनिष्क ने बौद्ध-धर्म के प्रसिद्ध विद्वानों को एकत्र कर एक चौथी सभा की। इस सभा में ग्रन्थ-संग्रह का कार्य किया गया। बौद्धों के प्रायः सभी ग्रन्थ पाली-भाषा में हैं। गौतम बुद्ध ने पाली-भाषा में ही लोगों को उपदेश दिया था। बौद्धों और जैनियों के ग्रन्थों का भांडार बड़ा है। इन दोनों के अनेक उत्तमोत्तम ग्रन्थ बने और अनेक प्रसिद्ध ग्रन्थकार हुए। यदि उनका संशोधन करने के लिए भारत के बाहर के ग्रन्थ-भांडार की खोज की जाय तो भारत के प्राचीन इतिहास की अपरिमित सामग्री मिल सकती है। भारत में जैनियों की वर्तमान संख्या लगभग १५ लाख है। जैन धर्म का इतना विस्तृत प्रचार भारत में नहीं हुआ जैसा कि बौद्ध धर्म का हुआ था।

(४) सिकन्दर का भारत पर आक्रमण—समस्त ज्ञान और सुसंस्कृति का प्रचार भारत के ही द्वारा अन्य देशों में

१८४ से ई० स० पू० ७३ तक रहा। पुष्यमित्र का लड़का अग्निमित्र महाकवि कालिदास के 'मालविकाग्निमित्र' नाटक का नायक था। इसी के शासन-काल में महाभाष्यकार पतंजलि प्रसिद्ध हुए। शुङ्गों के शासन-काल में अनेक गुफाएँ देश में तैयार हुई थीं। इनमें कार्ली और भाजे स्थान की गुफाएँ विशेष प्रसिद्ध हैं।

शुङ्ग-वंश के अन्त होने पर काण्व नाम के चार ब्राह्मण राजाओं ने ४५ वर्ष तक मगध पर शासन किया। इसके बाद मगध-राज्य आंध्र-वंश के शासन में चला गया। ये आंध्र लोग पहले तैलंगाने में रहते थे और इनकी राजधानी कृष्णा-नदी के मुहाने पर धनकटक में थी। इसके बाद इनकी सत्ता पश्चिम की ओर फैली। इसके बाद इनकी राजधानी प्रतिष्ठान अर्थात् आज-कल के पैठन स्थान में आ गई। इनका वंश यहाँ शालिवाहन या शातवाहन के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इनकी राज्य-सीमा बढ़ते बढ़ते नर्मदा के उत्तर मालवा और मगध तक पहुँच गई। ई० स० पू० के पहले शतक में आंध्रों का शासन भारत के अधिकांश भाग में फैल गया था। आंध्रों का शासन ४५० वर्ष तक रहा। इस काल में छोटे-बड़े सब मिला कर इस वंश के ३० राजाओं ने राज्य किया। आंध्रों का अन्त ई० स० २२० के लगभग हुआ। ई० स० पू० की पहली शताब्दी में शातवाहनों की सत्ता अत्यन्त प्रबल थी। उसी समय उज्जयनी में विक्रमादित्य नाम के राजा ने "संवत्" वर्ष-गणना का प्रारम्भ किया। यह गणना आज भी उत्तर-भारत में प्रचलित है। यह विक्रमादित्य कौन था और किस वंश का था, इसका ठीक ठीक निर्णय अभी तक नहीं हुआ है।

(२) यवन, शक इत्यादि के [illegible]

यह लुप्त होकर कन्नौज को प्राप्त हुई। लेकिन यहाँ सतत [illegible]
वर्तित्व स्थापित करनेवाले राजे सम्राट् हर्ष के बाद न होने
यह महिमा हट कर कुछ समय के लिए काश्मीर-राज्य की [illegible]
धानी को प्राप्त हुई। इसके बाद कुछ गौड़ के पालराजवंश में [illegible]
कुछ मारवाड़ के गुर्जर-प्रतीहारों में बँट गई। ये प्रतीहार ई० [illegible]
७२० से १०१८ तक उत्तर-भारत में प्रबल बने रहे। इस [illegible]
इस वंश में नागभट्ट, भोज, महीपाल इत्यादि अनेक [illegible]
राजे उत्पन्न हुए। इनको परिहार भी कहते हैं। इस वंश का [illegible]
राज्यपाल कन्नौज में उस समय राज्य करता था। इसी के [illegible]
महमूद गजनवी ने कन्नौज पर आक्रमण करके उसको [illegible]
किया। बाद को राठोड़वंशी राजपूत राजाओं ने कन्नौज का [illegible]
जीत लिया। इस वंश में सात राजे हुए। इनमें से राजा [illegible]
जिस समय राज्य करता था, उस समय मुहम्मद गोरी ने [illegible]
के राज्य पर चढ़ाई कर उसे अपने अधिकार में किया था [illegible]
वंश के एक राजा ने बाद को जोधपुर के राज्य की स्थापना [illegible]
आजकल राजपूतों के अनेक राज्य कायम हैं। इनकी [illegible]
प्राचीन व मध्यकालीन क्षत्रिय व अन्य पराक्रमी राजवंशों [illegible]
है राजपूत का शुद्ध रूप है राजपुत्र। उनका क्षात्र-तेज [illegible]
वर्षों से चमक रहा है। आजकल भावनगर के समीप जो [illegible]
नामक राज्य है वह पहले वल्लभीपुर के नाम से प्रसि[illegible]
[illegible] तक स्वतंत्र राज्य था। इस [illegible]
[illegible] तक वहाँ के राजवंश का शासन [illegible]
[illegible] इस राजवंश का दक्षिण के चालुक्य [illegible]
[illegible] चालुक्य वंश में पहले [illegible]
मुक्तराज [illegible] पराक्रमी हुआ [illegible] लड़का चामुंड

देश की प्रजा को अपनी उन्नति करने में कोई
थी। बड़े बड़े साम्राज्यों और सुधारों का उदय गंगा
आदि के प्रवाह-भाग में हुआ। सभी काल में व्यापार और
प्रचार के हेतु विदेशों में भारत के यात्री स्थल और जल
द्वारा पूर्व-पश्चिम दोनों दिशाओं में ईरान, मिस्र,
द्वीप-समूहों में बराबर आते-जाते थे। इस आने-जाने
यहाँ से विद्या, कला, सभ्यता इत्यादि का प्रचार दूर दूर
में हुआ। इससे विदेशियों की दृष्टि भारत पर गड़ गई।
ईरानी, हूण, अफ़ग़ान, मुग़ल इत्यादि अनेक विदेशी इस देश
अनेक बार आक्रमण करके यहाँ अपनी थोड़ी-बहुत
में सफल हुए। लेकिन इस देश के लोगों की बुद्धिमत्ता
संस्कृति सुसम्पन्न और शुद्ध बनी हुई थी। इसी लिए
विदेशियों के संसर्ग के योग से उन्होंने अपने जीवन
भी अधिक विस्तृत और दृढ़ कर लिया। अपनी
उन्होंने विदेशियों पर अपनी छाप लगा दी। विदेशी
पर भारतीयों का अवश्य ही परामर्श होता था,
नहीं है। क्योंकि ये हमले जीवित राष्ट्र के उत्साह को नहीं
कर सके, यह बात अवश्य ही ध्यान में रखने योग्य है।
साम्राज्य, गुप्त-साम्राज्य, उत्तर-कालीन राजपूतों के
इत्यादि के दीर्घ कालीन शासन में विद्या, स्वातंत्र्य और
का उपभोग भारतीय आर्यों ने स्वयं किया और दूसरों
कराया। ई० स० पू० ६०० से ई० स० ११९३ तक कोई १
वर्ष के दीर्घ कालीन स्वराज्य-काल में भारत ने स्वा
और उन्नति का उपभोग किया। ऐसा समय इस पृथिवी
किसी दूसरे राष्ट्र को कभी नहीं प्राप्त हुआ। दो सौ व
तक में भारतीय समाज जीवित रा

सा सुख भोगता था। मुगलों के ह्रास-काल में मराठों ने हिन्दू-सत्ता को पुनरुज्जीवित कर दिया। और इसकी पूर्ति होने के पहले ही नियमबद्ध, युद्धकलाप्रवीण, शस्त्रास्त्रों में प्रवीण अंग्रेज़-जाति का सम्बन्ध भारत से हो गया और अंग्रेज़ों की सार्वभौम सत्ता इस देश में स्थापित हो गई। ऐसी ही इस देश के इतिहास की परम्परा चली आ रही है।

लगा। उस समय अफ़ग़ानिस्तान के पूर्व-भाग गांधार
सिन्धु के किनारे पंजाब-प्रान्त में राजा जयपाल शासन
था। इसकी राजधानी पेशावर थी। सुबुक्तगीन ने जब
चढ़ाई करके उसके राज्य का कुछ भाग छीन लिया। सु
का लड़का सुल्तान महमूद या महमूद ग़ज़नवी बड़ा
निकला। उसने सन् ९९९ से १०३० तक ग़ज़नी में
भारत पर लगातार सत्रह चढ़ाइयाँ कीं। उस समय
राजपूतों के अनेक छोटे छोटे राज्य थे, जिनमें परस्पर
था। महमूद बड़ा शूर और दृढ़ निश्चयी व्यक्ति होने
राजपूत राजाओं को एक एक करके हरा दिया। यहाँ
सम्पत्ति लूट कर उसने ग़ज़नी में एकत्र की। उस समय
में हिन्दुओं के बड़े प्राचीन और धन सम्पन्न अनेक
इनको विध्वस्त कर और अनेक लड़ाइयों को जीत
अगणित हिन्दुओं को मुसलमान बनाया। सन् १०२
अपनी अन्तिम आक्रमण यात्रा में दूर के काठियावाड़
हमला किया। काठियावाड़ के दक्षिण में समुद्रतट पर
का प्रसिद्ध मन्दिर था। इसकी सम्पत्ति भी अपार
इसका नाम दूर दूर तक फैला था। वहाँ की सम्पत्ति
[illegible] महमूद पंजाब राजपूताना गुजरात [illegible]
[illegible] सोमनाथ पर चढ़ आया। लड़ाई
हिन्दुओं को [illegible] उसने मन्दिर पर अधिकार
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

है। दिल्ली के दक्षिण में कुतुबमीनार नाम की जो सुन्दर [illegible] है उसे कुतुबुद्दीन ने ही बनवाया था।

अल्तमश (सन् १२११-३६ ई०)—सन् १२१० ई० [illegible] कुतुबुद्दीन की मृत्यु हुई। उसके बाद उसके बेटे को गद्दी से [illegible] कर अल्तमश बादशाह बन गया। अल्तमश के समय में [illegible] ने मध्य एशिया में मुगल-साम्राज्य का विस्तार किया। [illegible] भारतवर्ष पर भी आक्रमण करने का विचार किया। परन्तु [illegible] में बलवा हो जाने के कारण उसे लौट जाना पड़ा। इसी [illegible] सिन्ध और बंगाल के सूबेदारों ने दिल्ली के बादशाह के [illegible] विद्रोह किया। परन्तु अल्तमश ने उस विद्रोह को शीघ्र ही [illegible] दिया। उसने राजपूताने पर भी चढ़ाई की और कई स्थान [illegible] अधिकार में कर लिये।

अल्तमश बड़ा योग्य बादशाह था। वह विद्वानों का [illegible] आदर करता था। उसके समय में कितने ही विद्वान् फारस [illegible] मध्य एशिया से हिन्दुस्तान में आये। सन् १२३६ में [illegible] मृत्यु हुई।

रज़ियाबेगम (सन् १२३६-४० ई०)—रज़िया बेगम [illegible] [illegible] अल्तमश की यह इच्छा थी कि [illegible] [illegible] राज्य का [illegible] [illegible] के स्त्री को [illegible] [illegible] अल्तमश के बेटे को [illegible] [illegible] उसकी मृत्यु हो गई। [illegible] [illegible] वह बड़ी बुद्धिमती थी। उसमें [illegible] [illegible] वह स्वयं राज्य का [illegible] [illegible] [illegible]

बलवन के सिक्के

[illegible] हुमायूँ ने विद्रोह किया, इसलिए हुमा[illegible]
[illegible] इसके कुछ वर्ष बाद मक्के जाते [illegible]
[illegible] सन् [illegible]। मिर्ज़ा असकरी को हुमा[illegible]
[illegible] वह भी मक्के जाते समय म[illegible]
[illegible] हुमायूँ ने कामराँ को कैद कर के काबुल में [illegible]
[illegible] बाद को भारत में विद्रोह फैलने के [illegible]
[illegible] हुमायूँ ने सन् १५५५ ई० में दिल्ली पर चढ़ाई क[illegible]
अपना खोया हुआ राज्य वापस लौटा लिया।

(४) सूरवंश (सन् १५४०-५५), शेरशाह (१५४०-१[illegible]

हुमायूँ को हरा कर अफ़ग़ानों ने दिल्ली में प्रवेश किया[illegible]
सूरवंशी पठान था। अत वह और इसके बाद के इसी वंश [illegible]
बादशाह सूरवंशी कहे जाते हैं। यह पठानी शासन केवल [illegible]
तक रहा। शेरशाह पठानी सिपाही और प्रवीण शास[illegible]
फ़ौजी और राज्य करने के काम में दोनों में ही वह [illegible]
अगुआ था। भिन्न भिन्न स्थानों के राजपूत राजे उस स[illegible]
स्वतंत्र थे और अपने स्वातंत्र्य की रक्षा के लिए प्रयत्न[illegible]
थे। उन्होंने इस समय तक भी मुसलमानों से हार न मा[illegible]
[illegible] रायसीन नामक स्थान है। यहाँ [illegible]
[illegible] बड़े पराक्रम के साथ शेरशाह क[illegible]
[illegible] हो पड़ कर चित्त चकित हो [illegible]
किया। उसके [illegible] इत्यादि सभी स्थानों में शेर[illegible]
मारवाड़, चित्तौड़, [illegible] लड़ना पड़ा। लेकिन सन् १[illegible]
[illegible] कठिन [illegible] करने में एक सुरङ्ग [illegible]
[illegible]

साध्य कार्य किये। धर्म के मामले में यह आग्रही न था। परन्तु अपने धर्माचार में यह दक्ष था। उसने हीरों इत्यादि मणियों से जड़ा हुआ एक मयूरासन तैयार कराया था। उसके बनने में ६ करोड़ से भी अधिक रुपये खर्च हुए थे। शाहजहाँ के समय में बादशाही जनानखाने की शान विशेष रूप से बढ़ गई थी। तोपखाने की उन्नति करके उसने उसके बल पर अनेक युद्ध जीते थे। तोपों के काम में उसने यूरोपियों को भर्ती किया था। उसने अपने आदमी इस काम में तैयार नहीं किये। यूरोपीय युद्ध-कला की ओर मुगलों ने ध्यान नहीं दिया। इसीसे इस देश में यूरोपियों का प्रवेश सहज में हो गया। दिल्ली और आगरे में अनेक इमारतें बनाकर उन शहरों की बड़ी उन्नति की। शाहजहाँ का स्मारक आगरा उसकी प्यारी बेगम मुमताज़ महल की क़ब्र अर्थात् ताजमहल यमुना के किनारे आगरे से दक्षिण की ओर बेड़ पर बना हुआ है। इसके बनने में ३ करोड़ रुपये खर्च हुए यह १२ वर्ष में बन कर तैयार हुआ था। सभी काम भारतकारीगरों ने किया था। इतनी सुन्दर और गुम्बज़दार इमारत पृथिवी पर दूसरी नहीं है। शाहजहाँ के राज्य में २२ मूल्यों उसकी आय ३६ करोड़ रुपये वार्षिक थी। अकबर की चाल मालगुज़ारी की पद्धति शाहजहाँ ने दक्षिण में भी चलाई। मैंडेल्स्लो [illegible] इत्यादि यात्री शाहजहाँ के शासनकाल में आये थे। उन्होंने जो वर्णन लिखा है वह चित्ताकर्षक शाहजहाँ का मृत्यु २२ जनवरी सन् १६६६ में आगरे के [illegible]

अहमदनगर, ब्रह्मपुरी इत्यादि स्थानों में उसके कितने ही
निकल गये। अन्त में उसे बड़ा दुःख हुआ। शाहज़ादा
उसके भय से भारत छोड़कर ईरान चला गया, वहीं उसकी
मृत्यु हुई। उसके अन्य तीन शाहज़ादे मुअज़्ज़म, अज़ीम और
कामबख़्श आपस में एक दूसरे से बिगड़े और स्वयं राज्य
के लिए प्रयत्न करने लगे। बादशाह को पता लगा कि कहीं
लड़के भी मेरे कार्यों का अनुसरण कर मेरी दुर्दशा न करें,
लिए उसने अपनी मृत्यु होने तक अपने किसी लड़के को
पास तक न फटकने दिया। उसके सभी उद्देश असफल
अपने हाथों बड़े बड़े अनर्थ हो जाने से उसे परलोक की भी
आशा न रही। यह विचार करके कि मेरा राज्य बड़ी अशां
हो जायगा और भूलों को दुरुस्त करने का अब समय भी नहीं
उसे बड़ा कष्ट हुआ। अन्त में मराठों के आक्रमण और
अधिक ज़ोरदार होने लगे। इससे उसे बुढ़ापे में अत्यंत कष्ट
और इस प्रकार यह अन्तिम मुग़ल-सम्राट् २० फ़रवरी
१७०७ को अहमदनगर में मर गया। उसको क़ब्र
स्थापित किये हुए औरंगाबाद नाम के शहर में रौज़ा के
प्रसिद्ध है।

(६) औरङ्गज़ेब की योग्यता—इतिहास में औरंगज़ेब
शासन बड़े मार्के का गिना जाता है। औरंगज़ेब ने इतने प्रबल
की शक्ति हिन्दू धर्म के नाश करने के व्यर्थ मनोरथ को पूरा
में ख़र्च की। अत्याचार, दुराग्रह, अविश्वास और कठोरता
उसने अपने राज्य को अपने ही शासन-काल में नष्ट कर दिया
औरंगज़ेब का घर व्यवहार और आचरण बहुत ही सुन्दर

"बाँदवड़" स्थान में मराठों व मुग़लों की लड़ाई हुई। इसमें मुग़लों को हार हुई। सन १६७१-७२ में खान देश पर मराठों के आक्रमण हुए। वहाँ साल्हेर के घनघोर युद्ध में भी मुग़लों की भेंज हार गई। अन्त में पुरन्दर वाली सन्धि को बादशाह ने स्वीकार किया और शिवाजी की स्वतन्त्रता भी उसने स्वीकार की। इसी प्रसङ्ग में सम्भाजी को पंचहज़ारी का मनसब मिला और बरार की जागीर भी बादशाह से मिली।

(२) शाहजी की मृत्यु और राज्य-स्थापन—इसी बीच में सन् १६६४ फर्वरी मास में शाहजी हरिहर के समीप होडिगेरी स्थान में ता० २३-१-१६६४ के दिन घोड़े से गिर पड़ने के कारण मर गये। शाहजी ने १०-१५ वर्ष तक निज़ामशाही का कार्य करते हुए प्रत्यक्ष बादशाह की भी कुछ परवा नहीं की। यह देख कर तत्कालीन शासक वर्ग में शाहजी को अपने पक्ष में करने के लिए अनेक शासक सदैव लालायित रहते थे। आगे चलकर आदिलशाही में भी उसने अनेक पराक्रम के कार्य किये थे। कर्नाटक में तंजोर का महाराष्ट्र सत्ता उसी ने स्थापित की थी। वह बड़ा शूरवीर और प्रबन्ध करने में अत्यन्त चतुर था। शाहजी के मरने के बाद शिवाजी ने खुल्लमखुल्ला राज्य स्थापित कर अपने नाम के सिक्के प्रचलित किये (सन १६६५)। किन्तु शिवाजी का विधिवत राज्याभिषेक बाद को हुआ।

(३) बीजापुर वालों के साथ दूसरा युद्ध (सन १६७२-७८)। सन १६७२ में बीजापुर के अली आदिलशाह की मृत्यु हो गई। उसके मरते ही दरबार में फूट फैल गई। इससे शिवाजी के साथ फिर युद्ध होने लगा। शिवाजी ने बीजापुर वालों के पन्हाल गढ

विजय दुर्ग (समुद्रासीक डोंगरी किल्ला)

मुगलों के हाथ में जाते ही रामचंद्र पंत ने विशालगढ़ और पन्हाल के बीच में रह कर महाराष्ट्र की रक्षा की। राजाराम ने प्रह्लाद निराजी और खंडो बल्लाल के साथ जिंजी जाकर राज्य का शासन-कार्य देखना शुरू किया और सन्ताजी घोरपड़े व धनाजी जिंजी और महाराष्ट्र के बीच में घूम-फिर कर बादशाह का पीछा करने लगा। इस क्रम के चलते ही कार्य ठीक होने लगा। शंकराजी मल्हार व परशुराम त्रिंबक कुलकर्णी किन्हईकर प्रतिनिधि के मूल-पुरुष रामचन्द्र के साथ काम करने में प्रसिद्ध हुए। राजाराम ने जिंजी में गद्दी को स्थापित कर अष्टप्रधान मंडल की फिर से स्थापना की। प्रह्लाद निराजी को चतुर, कर्तव्यशील और राज्य का एकमात्र आधार-स्तम्भ समझ और अपना दूसरा स्वरूप मान राजाराम ने उसे "प्रतिनिधि" का नया पद दिया। प्रतिनिधि का पद अष्टप्रधानों से भी ऊँचा रक्खा। इस तरह राज्य में पुनः प्रबन्ध स्थापित किया। इसके सिवा राष्ट्र की रक्षा के लिए उसने एक नई बात यह की कि जो व्यक्ति पराक्रम से राष्ट्र की सहायता करके शत्रु को हराने में सफल होगा और विपत्ति के समय धैर्य के साथ आगे बढ़ कर राज्य की सहायता करेगा वह पुरस्कार, पदाधिकार, इनाम इत्यादि से सन्तुष्ट किया जायगा। इस प्रकार की राजाज्ञा का प्रचार होते ही अनेक लोगों ने राज्य का पक्ष लेकर अपना कर्तव्य पालन किया और अनेक प्रकार के राजसम्मानों से [illegible] यह क्रम आज तक सरदारों में जारी है।

(२) सन्ताजी घोरपड़े व धनाजी जाधव [illegible] की [illegible] प्रबल था। लेकिन उसके [illegible]

भी सरदार मुग़ल-पक्ष में न था, धनाजी भी वैसा ही शूर था। मुग़ल तो उससे इतना भय मानते थे कि यदि किसी का घोड़ा पानी न पीता तो वे उससे पूछते कि क्यों रे पानी पीता क्यों नहीं! क्या तुझे पानी में धनाजी की परछाईं दीखती है?" संताजी ने एक बार ख़ास बादशाह के तम्बू पर हमला करके उसका सोने का कलश काट लिया था। उस समय भाग्यवश बादशाह अपने तम्बू में न था, इसीसे वह बच गया। इसके बाद बादशाह की छावनी भीमा के किनारे से उठ कर ब्रह्मपुरी में आ गई। मराठों ने कर्नाटक से लगा कर खानदेश की उत्तरी सीमा तक सारे देश में खलबली पैदा कर दी थी। सन् १६९१ में बादशाह की आज्ञा से ज़ुल्फ़िकारख़ाँ ने जिंजी के क़िले को घेर लिया। यह घेरा डाले छः वर्ष तक पड़ा रहा। इस क़िले के भीतर ही राजाराम और उसकी मंडली इत्यादि घिरी हुई थी। अन्त में बादशाह ने ज़ुल्फ़िकारख़ाँ को बड़ी सख़्त-सुस्त बातें लिख भेजीं। तब उसने जिंजी के क़िले पर अधिकार कर लिया। लेकिन क़िले पर अधिकार होने से पहले ही राजाराम अपनी मंडली के सहित सकुशल बाहर आ कर स्वदेश पहुँच चुका था।

(३) राजाराम की मृत्यु (मार्च १७००)। राजाराम ने जिंजी से लौट कर सतारा के क़िले में महाराष्ट्र का राज्य [illegible] की। मराठाशाही की यह गद्दी अन्त तक सतारे में ही रही। [illegible] स्थापित करने के बाद उसने अपने सरदारों [illegible] मुग़लों पर चढ़ाई की। उसने स्वयं [illegible] पर हमला किया और वहाँ से चौथ और [illegible] उसने खानदेश तक बराबर हमले किये और [illegible] की। इस प्रकार वह सिंहगढ़ वापस आया। उसके [illegible]

इस प्रकार पेशवाओं-द्वारा शुरू किया गया उद्योग उन्नत होने लगा परन्तु मराठे सरदार स्वयं एक मत होकर न रहते थे। इसलिए उनकी सत्ता स्थिरगामी न थी। बाजीराव को पिता की बड़ी अड़चन पड़ती थी। उसके ऊपर कर्ज भी अधिक हो गया था। सन् १७४० में उत्तर-भाग पर आक्रमण करने के लिए जाते समय मार्ग में नर्मदा के तट पर अकस्मात् उसने शरीर त्याग किया। वह "गुरिल्ला" ढङ्ग की लड़ाई लड़ना खूब जानता था। वह शूर और मराठी योद्धा था। उसके समय में अनेक लोगों की प्रसिद्धि हुई। बाजीराव के दो पुत्र—बालाजी राव और रघुनाथ राव थे। चिमणाजी अप्पा भी इसी वर्ष दिसम्बर मास की १७ तारीख को मर गया। उसके लड़के का नाम सदाशिव राव था। ये तीनों ही आगे चलकर प्रसिद्ध हुए।

(४) पेशवा नाना साहब—इसके समय में रघूजी भोंसले और मलहारराव होलकर ने कर्नाटक पर आक्रमण करके त्रिचनापल्ली पर अधिकार किया। वहाँ मुरारराव घोरपड़े को प्रबन्ध के लिए नियुक्त करके तथा तंजौर के महाराष्ट्र-राजा को तंग करने वाले कर्नाटक के नवाब दोस्तअली को मार कर उसके दामाद चंदा साहब को सताया लाकर कैद कर दिया था। बाजीराव के मरने पर उसके बड़े लड़के बालाजी उर्फ नाना साहब को शाहू ने पेशवाई का पद दिया। वह भी अत्यन्त चतुर था। अपने पूर्वजों के द्वारा किये हुए कार्य को उसने ज़ोरों के साथ आगे बढ़ाया। नागपुर के भोंसले और बड़ोदे के गायकवाड़ ये दोनों ही नाना साहब के विरुद्ध थे। ये चाहते थे कि पेशवा के प्रतिबन्ध में न रहकर उसका नाश करके स्वतन्त्रता से राज्य करें। गायकवाड़ ने गुजरात-प्रान्त पर अपनी सत्ता जमाई थी और भोंसलों

ने सतारा छोड़कर पूना में ही अपना सारा कार्य शुरू किया और प्रतिनिधि, सचिव इत्यादि मंडली के साथ स्वतंत्र [illegible] कर के ताराबाई हार कर बैठ रही। उधर ताराबाई ने [illegible] को सतारा के किले में सख्त कैद कर पेशवा के साथ [illegible] खड़ा किया। किन्तु इस विरोध का कुछ फल न [illegible] और वह सन् १७६१ में ९ नवम्बर को मर गई। [illegible] को वास्तव में ताराबाई के नाती न होने की बात पीछे प्रकट [illegible] इससे मराठों में बड़ा प्रपंच उठ खड़ा हुआ। उसमें चतुरता [illegible] थी। और इधर राजवंश के साथ कृत्रिम सम्बन्ध [illegible] छत्रपति के राज्य का विलक्षण उत्तरदायित्व भी आ पड़ा। [illegible] कोल्हापुर और सतारा दोनों के ही राज्य का क्षय हुआ।

पेशवे पूने में रहने लगे। इससे सतारा का महत्व कम [illegible] पूना ही आगे मराठा राज्य की राजधानी बना। भिन्न भिन्न [illegible] दारों के एक होकर एक साथ उद्योग करने की पद्धति [illegible] चलाई थी। लेकिन बादशाह के आक्रमण के समय से इस [illegible] का नाश हो गया और एक दूसरे से अलग रह कर उद्योग [illegible] वाले, सरंजामी सरदार बन कर वे अपने अपने स्वार्थ की [illegible] करने लगे। इनको एक सूत्र में बाँधने का काम शाहू ने [illegible] अपने प्रभाव से थोड़ा बहुत किया था। उसकी मृत्यु ने [illegible] बन्धन भी तोड़ दिया। इससे मराठा मंडल में फूट फैल [illegible] इस फूट को दूर करने का प्रयत्न कुछ समय तक पेशवे [illegible] किया, लेकिन जब उन्हीं के घर में कलह उठ खड़ी हुई तब [illegible] में राज्य का नाश हो गया

नवाँ अध्याय

छत्रपति रामराजा, पेशवा नाना साहब

सन् १७५०-१७६१

[illegible]

(१) [illegible]

अपने ऊपर ले लेते। उत्तर में अकाली और दक्षिण में मराठे दोनों ओर से शत्रुओं का भय दिल्ली के बादशाह को सदैव बना रहता था। दोनों ओर से भय-त्रस्त होने के कारण बादशाह को अपनी रक्षा का उपाय सोचना पड़ा। नादिरशाह-द्वारा की गई दिल्ली की लूट की पुनरावृत्ति रोकने के लिए बादशाह ने यह निश्चय किया कि अहमदशाह अब्दाली के आक्रमणों को रोकने के लिए मराठों से मेल किया जाय। उसके वज़ीर ग़ाज़ीउद्दीन का मराठों से मेल था। उसके परामर्श से बादशाह ने सिन्धिया और होल्कर को बुलाकर उनके साथ सन् १७०० में सन्धि कर सिन्धु-पर्यन्त प्रान्तों की चौथ और सरदेशमुखी वसूल करने का अधिकार उनको दे दिया। और इसके बदले में सिन्धिया और होल्कर ने बादशाह के दुश्मन अब्दाली और रुहेलों का प्रबन्ध करने का भार अपने ऊपर ले लिया। वास्तव में अटक से प्रयाग काशी तक के प्रदेश को सुरक्षित रखने का काम बहुत बड़ा होने के कारण उन्हें नहीं सौंपा गया था, क्योंकि इस काम के लिए धन और फ़ौज की अधिक आवश्यकता थी। यह सन्धि जयाप्पा सिन्धे और मल्हारराव होलकर ने पेशवा के नाम लिखाई थी। इस समय दिल्ली के बादशाह के दरबार में दो पक्ष थे। एक पक्ष ग़ाज़ीउद्दीन और मराठों का था। इसका मत था कि भारतीय लोग एक होकर विदेशियों के आक्रमणों से भारत की रक्षा करें। दूसरे पक्ष में रुहेल व अन्य मुसलमान सरदार थे। ये लोग यह चाहते थे कि सब मुसलमान एकत्र होकर हिन्दुओं से दिल्ली की रक्षा करें, इस काम में विदेशी मुसलमानों की सहायता भी यदि लेनी पड़े तो कोई हानि नहीं। दिल्ली के मुसलमानों को मराठों का इस प्रकार दिल्ली के बादशाह से मिल जाना अच्छा न

सका। कुम्भेरी पर घेरा डालते समय मल्हारराव का लड़का प्रसिद्ध अहिल्याबाई का पति खण्डेराव होल्कर १७-३-१७५४ को गोली लगने से मर गया। इससे होल्कर अत्यधिक चिढ़ गया। इससे जयाप्पा रूठ कर मारवाड़ की ओर चला गया। वहाँ राजपूतों ने नागौर में उसे मार डाला (३०-६-१७५५)।

इधर नजीबखाँ ये सब बातें अब्दाली को अच्छी तरह बता कर भारत पर उसे चढ़ा लाया। उसने आकर दिल्ली पर सन १७५७ में अधिकार जमा लिया। इस प्रकार दिल्ली लेकर वह दक्षिण की ओर बढ़ा और उसने मथुरा के हिन्दू-देवालय को नष्ट कर दिया और उसे लूटा। इसी समय उसने दिल्ली को अपने अधिकार में रखने का पक्का प्रबन्ध करना चाहा, लेकिन उसकी फौज में महामारी फैल जाने से उसके सिपाही अफ़ग़ानिस्तान को लौटने लगे।

अब्दाली का प्रबन्ध करने के लिए फिर भी रघुनाथराव को ही पेशवा ने दिल्ली भेजा। उसके दिल्ली पहुँचने तक अहमदशाह दिल्ली से निकल गया था। रघुनाथराव ने दिल्ली का प्रबंध कर पञ्जाब पर चढ़ाई की। पञ्जाब की रक्षा उस समय अहमदशाह अब्दाली का लड़का तैमूरशाह कर रहा था। उनको भी मराठों ने मार भगाया और अटक तक उनका पीछा करके सिन्धु नदी का पानी दक्षिण के घोड़ों को पिलाया (सन १७५८)। बस यहाँ मराठों के उत्कर्ष की सीमा का अन्त हुआ। मराठों का झंडा अटक पर फहरा गया। नजीबखाँ इत्यादि मुसलमान सरदारों को मराठों की यह विजय बेतरह खटकी। पञ्जाब का पक्का प्रबन्ध किये बिना ही रघुनाथराव दिल्ली को लौट पड़ा। वहाँ के बन्दोबस्त का कार्य उसने दत्ताजी सिन्धिया को सौंप दिया। इस

काम में होल्कर ने दत्ताजी की सहायता न की। स्थान स्थान पर मराठों की छोटी छोटी फौजें थीं। उनमें ऐक्य न होने उनकी स्थिति शिथिल हो गई। इस स्थिति का ठीक ठीक प्रमान नाना साहब पेशवा को न हो पाया। स्वयं तो कभी उत्तर भारत में उसने पैर रक्खे न थे। इसी से वहाँ गड़बड़ और अव्यवस्था फैल गई और अब्दाली व नजीबखाँ का बल बढ़ने लगा।

(३) दत्ताजी सिन्धिया का वध (१०-१०-१७६०) नजीबखाँ की मंत्रणा से प्रेरित होकर अहमदशाह अब्दाली १७६० के अन्त में पञ्जाब पर चढ़ दौड़ा और वहाँ से मराठों की फौजों को भगा कर सीधा दुआबे में पहुँचकर दत्ताजी सिन्धिया पर वार करने लगा। उस समय मल्हारराव होल्कर जयपुर समाप्त था। इसलिए कुछ समय ठहरकर अपना बचाव न दत्ताजी ने एकाएक अब्दाली का सामना करने का निश्चय किया। उसका नाती जयाप्पा का लड़का जनकोजी भी उसके साथ इसके सिवा सिन्धिया के साथ अन्य अनेक शूरवीर भी सिन्धिया के लिए प्राण त्याग करने में हिचकते न थे। उसने मल्हारराव को अपनी फौज लाने के लिए लिखा और स्वयं अब्दाली का सामना करने को निकला। थोड़े दिनों के बाद सिन्धिया और अब्दाली इन दोनों का सामना हुआ। यमुना के तट पर [illegible] के समीप एक तट पर सिन्धिया और दूसरे तट पर अब्दाली का पड़ाव पड़ा। १० जनवरी सन् १७६० को अब्दाली और नजीबखाँ की फौजें यमुना पारकर दत्ताजी पर आक्रमण करने लगीं। उस समय दत्ताजी उनको रोकने के [illegible] था [illegible] दोनों फौजों का [illegible] हुआ और [illegible] हुआ। इसमें दत्ताजी जख्मी होकर [illegible] उसी समय [illegible] ने उसका [illegible] किया। जनकोजी के [illegible]

में गोली लग जाने से वह भी गिर पड़ा, लेकिन उसे लोगों ने घोड़े पर सवार कराकर भगा दिया। इस तरह सिन्धिया की पीछे हटी हुई फ़ौज होल्कर से आ मिली। कुछ दिनों आराम करके फिर सिन्धे और होल्कर की फ़ौजों ने मिलकर दुआबे पर अधिकार किया। किन्तु वहाँ सफलता न मिलने से ये सभी फ़ौजें चंबल के दक्षिणी तट पर आ गईं। इस प्रकार अब्दाली ने मराठों का इतने दिनों का किया हुआ उद्योग निष्फल कर दिया। और इस समय स्वदेश वापस न जाकर वह दिल्ली के उस पार सालाबाद के पास दुआबे में अपना घेरा डालकर बैठ गया।

(४) पानीपत का भीषण संग्राम (१४-१-१७६१)—ये समाचार नाना साहब पेशवा के पास पहुँचे। उस समय उनके स्वयं अहमदनगर में रहने के कारण उनकी फ़ौजें निज़ाम पर चढ़ाई कर रही थीं। इन फ़ौजों का आधिपत्य सदाशिवराव को दिया गया था और पेशवा का बड़ा लड़का विश्वासराव भी निज़ाम से लड़ रहा था। इब्राहीम ख़ाँ गार्दी* इत्यादि तोपख़ाना चलानेवाले शूर सरदार सदाशिवराव के साथ थे। इन सबों ने उद्गीर

* गार्दी अर्थात् गान, पश्चिमी कवायद सीखे हुए पैदल सिपाही बहुधा उत्तर के पठान और पूरबिया इत्यादि जाति के लोग थे। इनमें मराठे न थे। हथियार बन्दूक और वेतन [illegible] प्रतिमास। फ्रेंच सेनापति बसी ने ये पलटनें पहले महाराष्ट्र में तैयार की थीं और उन्हें तोपख़ाने का भी काम सिखाया था। इस विषय में पेशवा ने अपने निज के आदमी तैयार न कर बुसी के सिखाये [illegible] इत्यादि को अपनी नौकरी में रख लिया था [illegible] सिपाही पैसे के लिए अनेक साहस के काम करते थे [illegible] ने सदाशिवराव को मार डालने का भी प्रयत्न किया था

अब्दाली को धन की कमी पड़ गई थी, इसलिए इस
बाद ही उसे महीने दो महीने के भीतर स्वदेश लौट जाना पड़
वास्तविक अव्यवस्था के कारण ही मराठों का इतना संहार हुआ
कौन मरा और कौन बचा, इसी का पता लगाते लगाते उनके कि
व्यर्थ चले गये। विश्वासराव, सदाशिवराव तथा अन्य बड़े
सरदारों के मारे जाने से पेशवा को भारी धक्का लगा। इस
उसको चित्तभ्रम हो गया और पूना वापस आकर २३ जून (
के दिन पर्वती के बाड़े में उसने शरीर त्याग किया। इस स
उसकी अवस्था केवल चालीस वर्ष की थी।

बालाजी पन्त नाना, माधवराव, नानासाहब
माधवराव—ये चारों पुरुष पेशवा-घराने में एक दूसरे के बाद
पराक्रमी और कर्त्तव्यशूर निकले। पहले व्यक्ति ने मराठों
की जो जड़ जमाई उसको सिद्ध करने का सब ने प्रयत्न किया
हिसाब की पद्धति मराठी राज्य में न चल पाई थी। उसे न
साहब ने परिपूर्ण की। नाना फड़नवीस इत्यादि बाद को प्रसि
होनेवाले व्यक्ति नाना साहब के समय में ही शिक्षित और त
हुए थे। उसके बाद उसके लड़के माधवराव को जो सोलह
का था, पेशवाई का भार सौंपा गया। उसने पानीपत के
कार्य को पूरा किया।

दसवाँ अध्याय

छत्रपति रामराजा—पेशवा माधवराव

सन् १७६१-१७७२

[illegible]

[illegible]

१७६८ में नासिक के समीप धोडप क़िले के पास लड़ाई
इस लड़ाई में माधवराव ने रघुनाथराव को क़ैद कर पू
शनिवार वाड़े में अच्छा प्रबंध करके रक्खा। यह क़ैद
बाहर की राजनीति से रघुनाथराव को अलग रखने के लिए
इस प्रकार रघुनाथराव को ठीक ठिकाने बैठाकर माधवराव
कार्य निर्विघ्न चलाने लगा। क़ैद में भी रहकर अनेक प्रका
कार्रवाइयाँ करने में रघुनाथराव ने कमी न की।

(३) बादशाही की दिल्ली में स्थापना—अ
चार वर्षों में माधवराव का उद्योग निर्विघ्न रूप में बड़ी शीघ्र
सफल होने लगा। नागपुर के भोंसले बहुधा मराठा-शा
उद्योग में सम्मिलित न होकर अपनी स्वतंत्रता जता
और मराठों के शत्रुओं से मिलकर हानि पहुँचाते थे। इ
प्रवृत्ति को रोकने के लिए माधवराव ने नागपुर पर आक्रम
करके जानोजी भोंसले का अहंकार ढीला किया और कनकापु
में उसके साथ संधि कर आगे के उद्योग का मार्ग निश्चित किया
यह संधि माधवराव की कार्य कुशलता का द्योतक है। भोंसले
पर गई हुई फ़ौजें वहाँ से सीधा उत्तर भारत की ओर चली गईं
इन फ़ौजों के साथ माधवराव ने चार मुख्य सरदार भेजे थे
इनके नाम महादजी सिंधिया, तुकोजी होल्कर, रामचन्द्र
गणेश कानडे, और विसाजी कृष्ण बिनीवाले थे। इ
सरदार [illegible] आदेश दिया गया था कि वे उत्तर-भारत में मराठों
शासन [illegible] स्थिर करके बादशाह शाहआलम को [illegible]
[illegible] की मसनद पर फिर बैठा दें और उससे पूर्व की प्रतिज्ञाएँ पूरी
[illegible]

ग्यारहवाँ अध्याय

नारायणराव और सवाई माधवराव

सन १७७२-१७९५

१—नारायणराव का वध
२—अंग्रेज़-मराठों का पहला [illegible]
३—महादजी-द्वारा बादशाही का प्रबंध
४—खड़ी की लड़ाई
५—कर्ता पुरुष की मृत्यु

(१) नारायणराव का वध और राज्य का ह्रास—
रघुनाथराव की यह इच्छा न थी कि वह स्वयं राज्य का [illegible]
करे। किन्तु माधवराव के जीते जी उसकी यह इच्छा फलवती
हो पाई। माधवराव ने उसका कर्ज़ चुका कर उसका वेतन [illegible]
दिया था। इस प्रकार रह कर वह राज्य का उद्योग करता तो [illegible]
किसी बात की कमी न थी। लेकिन भाई-बन्धुओं द्वारा अपना
झगड़ा खड़ा कर उसने राज्य की हानि की। वास्तव में पेशवे
[illegible] छत्रपति के नौकर थे, लेकिन छत्रपतियों में दम न रहने
राज्य का भार पेशवाओं पर आ पड़ा। यद्यपि पेशवे भी अपने
हो गये तो भी उनसे राज्याधिकार लेकर राज्य की दूसरी व्यवस्था
करने का उपाय न हो सका। नाना साहब का सब से छोटा
[illegible] नारायणराव ही केवल इस समय जीवित था। [illegible]
[illegible] के वस्त्र प्राप्त किये। स्वभाव का हठी

अपनी बातों-द्वारा लोगों पर प्रभाव डाल कर शासन करने की योग्यता उसमें न थी। माधवराव के तेजस्वीपन का ही उसने अनुकरण किया। इससे अनेक लोग उससे नाराज़ या उदासीन हो गये। मार्च मास में वह अपनी माता से भेंट करने के लिए नागपुर गया। उसकी अनुपस्थिति में रघुनाथराव हैदरअली से सम्बन्ध रखने लगा। उसका समाचार पाते ही नारायणराव तुरन्त वापस आया और उसने अपने चाचा पर कड़ा पहरा बैठा दिया। इससे उसकी पूजा इत्यादि के नित्य-नैमित्तिक कार्यों में अड़चन पड़ने लगी। रघुनाथराव नियमित जीवन व्यतीत करने-वाला था। उसका नित्य-कर्म समय पर न होने से उसने भोजन त्याग दिया। इससे उसकी स्त्री भी उपवास करने लगी। सखाराम बापू इत्यादि कार्यकर्ताओं ने नारायणराव को बड़ी नम्रता के साथ समझाया, लेकिन उसने किसी की एक न सुनी। इसी स्थिति में ही पहरे के [illegible] सम्बन्धी [illegible] को भी [illegible] दी। उस समय रघुनाथराव और उसकी स्त्री ने अनेक लोगों से [illegible] कर [illegible] से निकल भागने और नारायणराव को [illegible] करने का षड्यन्त्र रचा [illegible] [illegible] माँगे हुए [illegible] [illegible] और मुहम्मद [illegible] [illegible] रघुनाथराव ने [illegible] [illegible] [illegible] गिरफ़्तार कर [illegible] [illegible] दौलत के [illegible] [illegible] अपने [illegible] [illegible] हुए और [illegible] [illegible]

भी जो उसे बचाने आये थे, मारे गये। इसके अतिरिक्त अ
मनुष्यों का और भी खून हुआ। शिव छत्रपति के गो-ब्राह्म
प्रतिपालन के व्रत का चरितार्थ करनेवाले पेशवा के घरों
ही यह नर-हत्या देख कर विचारवानों की यह धारणा हो गई
महाराष्ट्रों के अस्त का समय आ पहुँचा। इसके बाद रघुनाथ
ने पेशवाई के वस्त्र लाकर दो-तीन मास राज्य का प्रबन्ध किय
इसी अवधि में रामशास्त्री ने बारकों में अनुसन्धान करके
निश्चय किया कि यह दुष्कृत्य स्वयं रघुनाथराव ने करवाया
यह खबर फैलते ही लोगों में रघुनाथराव के प्रति कोपाग्नि भ
उठी। उसने अवश्य ही पेशवाई के वस्त्र धारण किये थे। कि
स्त्री-हत्या, भ्रूण-हत्या व गो-हत्या के कारण उसे पेशवा के
कार से च्युत करने के लिए सखाराम बापू ने बाहर की
से लौट कर सारी कार्रवाई का पता युक्ति से लगा
और गर्भवती गङ्गाबाई को पुरन्दर ले जाकर जनवरी सन् १७
ने उसके नाम पर राज्य का प्रबन्ध करना शुरू किया।
समय से खूनी अपराधियों को खोज खोज कर इस
जाना शुरू किया गया। यह कार्य लगभग दस वर्ष तक
एक वर्ष के बाद सुमेरसिंह बीमार पड़ कर मर गया।
मुख्य तथा रघुनाथराव के दरबार में रहनेवाले अन्य
अपराधियों को कठिन दण्ड दिया गया।

पेशवा के यहाँ ऐसा गड़बड़ सुन निज़ाम हैदरअली
की मंडली को बड़ा आनन्द हुआ। इनको परास्त करने के
रघुनाथराव दक्षिण की ओर गया। उसके साथ सखाराम
... कारकीर्दी और हरिपंत फड़के व त्रिंबकराव पेठे भी
... पाकर इन लोगों ने राघोबा पर शस्त्र उठाया।
१७५ के दिन पंढरपुर के पास लड़ाई हुई। इसमें त्रिंब

मारा गया, लेकिन हरिपन्त ने राघोबा का पीछा किया। रघुनाथराव भागता हुआ मालवा पहुँचा, लेकिन वहाँ सिन्धिया या होलकर ने उसे कुछ भी सहायता न दी। वहाँ से वह गुजरात पहुँचा। वहाँ सिन्धिया, होलकर और फड़के राघोबा का पीछा करते हुए पहुँचे। तब राघोबा ने सूरत पहुँच कर पेशवाई पाने की इच्छा से अँगरेज़ों की सहायता माँगी।

इधर पुरन्दर में १८-४-१७७४ के दिन गङ्गाबाई की कोख से लड़का उत्पन्न हुआ। इसका नाम सवाई माधवराव रख कर कार्य-कर्त्ताओं की मण्डली ने उसके नाम से चालीसवें दिन पेशवाई के वस्त्र सतारा के रामराजा से लाकर राज्य का कार्य भार चलाना शुरू किया। राघोबा ने आनन्दीबाई को धार में छोड़ दिया था। वहाँ ७-१-१७७५ के दिन उसकी कोख से जो बालक उत्पन्न हुआ उसका नाम सवाई बाजीराव पड़ा। रामराजा की मृत्यु १७७७ में हुई और उसका दत्तक पुत्र द्वितीय शाहू गद्दी पर बैठा। राघोबा ने अंग्रेज़ों की सहायता माँग कर मराठों और अंग्रेज़ों के युद्ध का प्रारंभ किया। यह युद्ध "अंग्रेज़ों और मराठों का पहला युद्ध" के नाम से इतिहास में प्रसिद्ध है।

(२) प्रथम अंग्रेज़-मराठा युद्ध—(१७७५-८२)—बंगाल और मद्रास के प्रान्तों को जीत लेने के बाद अंग्रेज़ों की सत्ता भारत के पूर्वी किनारे पर स्थापित होते ही उनका ध्यान पश्चिमी किनारे की ओर गया। मराठों की बढ़ती हुई शक्ति को देख और उसे अपना बाधक समझ कर अंग्रेज़ों ने सन् १७७२ में मास्टिन को पूना में अपने राजदूत के रूप में नियत किया। नारायणराव के मारे जाने का लाभ उठाते हुए उन्होंने राघोबा को अपनी ओर मिला लिया इस मामले में आगे चल कर वारेन हेस्टिंग्ज़ का सम्बन्ध हुआ।

विरुद्ध उठ खड़े हुए थे उनका भी ठीक ठीक प्रबन्ध किया इसके लिए महादजी ने फ्रेंच लोगों को नौकर रख उनसे अपने सिपाहियों को पाश्चात्य युद्ध-शिक्षा दिलाई और बादशाह से मिल कर उसने "वज़ीरी" का पद पेशवा के नाम लिखा कर स्वयं पेशवा का नायब बना।

यद्यपि दिखावे के लिए भिन्न भिन्न सरदार और अधिकारी दिल्ली में महादजी के अनुकूल हो गये थे, तथापि गुप्त रूप से महादजी के सर्वथा विरुद्ध थे। राजपूत और मुसलमान दोनों एकत्र होकर महादजी के विरुद्ध षड्यंत्र रचने लगे, क्योंकि म्लेच्छ का शासन राजपूतों को नहीं पसन्द था। और मुसलमान इस लिए रुष्ट हुए थे कि उनकी जागीरें महादजी ने ज़ब्त कर ली थीं किन्तु दो चार लड़ाइयों में ही महादजी ने उनको परास्त कर दिया इस मामले में महादजी के साथ अपाजी इंगले, लाखवा दादा, रायाजी यशवन्त सदाशिव रास्ते, बुकोजी होल्कर और अली बहादुर इत्यादि ने अच्छा पराक्रम दिखाया। इनकी सहायता से महादजी ने दिल्ली में अपना प्रबन्ध सफलता पूर्वक किया। राजपूतों को जीत कर अजमेर पुष्कर इत्यादि स्थान महादजी ने अपने अधिकार में किये। इस सब कार्य कर यह सन १७९२ की गर्मी ऋतु में पूना आया। विजय प्राप्त कर पूना आने में उसकी प्रतिष्ठा बढ़ गई। पूना में एक बड़ा दरबार करके बादशाह से प्राप्त किये और सिन्धिया इत्यादि उसने पेशवा को अर्पित की। कुछ दिनों बाद नाना और महादजी के बीच राज काज के विषय में अनबन हो गई। अंकलूज निवासी परशुराम भाऊ ने इन दोनों में मेल करा दिया। इस बार महाराष्ट्रों के दुर्दैव से महादजी सिंधिया [illegible] दिन तक जीवित न रहा। १७९३ से १७९४ के बीच [illegible] ज्वर से पीड़ित होकर वानवर्डी नामक स्थान में उसका [illegible]

विरुद्ध उठ खड़े हुए थे उनका भी ठीक ठीक प्रबन्ध किय
इसके लिए महादजी ने फ्रेंच लोगों को नौकर रख उनसे अपने
सिपाहियों को पाश्चात्य युद्ध-शिक्षा दिलाई और बादशाह से मि
कर उसने "वज़ीरी" का पद पेशवा के नाम लिखा कर स्वं
पेशवा का नायब बना।

यद्यपि दिखावे के लिए भिन्न भिन्न सरदार और अफ़सर
दिल्ली में महादजी के अनुकूल हो गये थे, तथापि गुप्त रूप से वे
महादजी के सर्वथा विरुद्ध थे। राजपूत और मुसलमान दोनों
एकत्र होकर महादजी के विरुद्ध षड्यंत्र रचने लगे, क्योंकि उनको
का शासन राजपूतों को नहीं पसन्द था। और मुसलमान इस
लिए रुष्ट हुए थे कि उनकी जागीरें महादजी ने ज़ब्त कर ली थी
किन्तु दो चार लड़ाइयों में ही महादजी ने उनको पराभूत कर दि
इस मामले में महादजी के साथ अंबाजी इंगले, लखवा दादा
गणेशखान, खंडेराव हरि, तुकोजी होलकर और अली बहा
इत्यादि ने अच्छा पराक्रम दिखाया। इनकी सहायता से महाद
ने दिल्ली में अपना प्रबन्ध सफलता पूर्वक किया। राजपूतों
जीत कर अजमेर, पुष्कर इत्यादि स्थान महादजी ने अपने अ
कार में किये। यह सब कार्य कर वह सन् १७९२ की गर्मी
ऋतु में पूना आया। विजय प्राप्त कर पूना आने में उसकी
बड़ाई हुई। पूना में एक बड़ा दरबार करके बादशाह से प्राप्त
खिताब और खिलअत इत्यादि उसने पेशवा को अर्पित की।
कुछ दिनों बाद नाना और महादजी के बीच राज काज के म
में अनबन हो गई। लेकिन हरिपन्त फड़के ने इन दोनों में
मेल करा दिया। इसके बाद महाराष्ट्रों के दुर्दैव से महादजी सिं
बहुत दिनों तक जीवित न रहा। १२-२-१७९४ के दिन
५० वर्ष पार्थिव होकर वानवड़ी नामक स्थान में उसका दे

बारहवाँ अध्याय

छत्रपति द्वितीय शाहू पेशवा
द्वितीय बाजीराव

सन् १७९६–[illegible]

१—[illegible] २—[illegible]

३—[illegible] ४—[illegible]

५—[illegible]

(१) [illegible]

फ्रेंचों को परास्त करने का ही अंग्रेज़ों का उद्देश था। उत्तर के युद्ध में जनरल लेक और दक्षिण के युद्ध में जनरल वेलेज़ली अंग्रेज़ी फ़ौजों के मुख्य सेनापति थे। अगस्त सन् १८०३ में वेलेज़ली ने अहमदनगर के क़िले पर अधिकार कर लिया। इधर गुजरात में अंग्रेज़ी फ़ौजों ने भड़ौंच शहर ले लिया। सितम्बर मास में असाई स्थान में बड़ी घमासान लड़ाई होने के बाद वेलेज़ली ने सिंधिया को परास्त किया। अन्य फ़ौजों ने असीरगढ़ व बुरहानपुर भी सिंधिया से ले लिये और बंगाल की फ़ौजों ने भोंसले के कटक नगर पर अधिकार कर लिया। उत्तर में जनरल लेक ने अलीगढ़ और दिल्ली की सिंधिया की फ़ौजों को हराकर दिल्ली पर अधिकार कर लिया। अतः वृद्ध मुग़ल बादशाह शाहआलम अंग्रेज़ों के अधीन हो गया। बाद को लासवाड़ी में फिर घमासान लड़ाई हुई और सिंधिया की फ़ौजों पर लेक को विजय मिली। इधर बरार में अरगाँव में सिंधिया और भोंसले की सम्मिलित फ़ौजों को वेलेज़ली ने फिर हराया। पूरे चार महीने की लड़ाई के बाद अंत में सन् १८०३ के दिसम्बर मास में देवगाँव में अंग्रेज़ों और भोंसले की संधि हुई। इसकी शर्तें ये थीं—(१) वर्धा नदी के पश्चिम ओर का बरार-प्रान्त व कटक-प्रान्त भोंसला अंग्रेज़ों को दे। (२) निज़ाम के ऊपर जो हक़ है उसको भोंसला छोड़ दे। (३) अन्य रजवाड़ों के साथ झगड़ा खड़ा होने पर जो निर्णय अंग्रेज़ करें वह भोंसला स्वीकार करे और (४) अंग्रेज़ों का रेज़िडेंट नागपुर में रहे। इसी प्रकार की संधि अर्जुनगाँव में सिंधिया के साथ अंग्रेज़ों ने की। वह यह थी—(१) गंगा-यमुना के बीच का भूभाग और दक्षिण के कुछ

शीघ्र ही फ़र्रुखाबाद में फिर हार जाने से होलकर वापस आया और लेक ने भरतपुर पर घेरा डाला (१८०५)। इसके बाद भरतपुर के राजा ने अंग्रेज़ों के साथ संधि की। इतने में ही गवर्नर जनरल वेलेज़ली स्वदेश को वापस चला गया और उसकी जगह पर लार्ड कार्नवालिस आया। मराठों के साथ चलते हुए युद्ध अंग्रेज़ों को नहीं पसंद आये। इसलिए कार्नवालिस ने होलकर के साथ एकदम संधि करके युद्ध बन्द किया। इस युद्ध में हार जाने के दुःख से यशवंतराव होलकर शिथिल हो गया और वहीं वह सन १८११ में मर गया। यशवंतराव बड़ा पराक्रमी और शूर था।

वह स्वभाव से ही डरपोक और कपटी था। उसने अपना इच्छा से अंग्रेज़ों से सहायता न ली थी। उसका भ्रम था कि राघोबा को जैसी सहायता अंग्रेज़ों ने की थी, उसी प्रकार वे मेरी भी सहायता करेंगे, अथवा पेशवाई के मिल जाने पर वे निकल जाँयगे। लेकिन वसई में लिखी हुई संधि ने उसका यह भ्रम दूर कर दिया। यद्यपि बाजीराव राज्य का कार-बार करने में बिलकुल अयोग्य था, तथापि उस समय जिस नीति से अंग्रेज़ लोग काम ले रहे थे उसके सामने चतुर नीतिज्ञ पुरुष भी न टिक सकता था। क्योंकि अपने राष्ट्र में सब ओर से इतनी दुर्बलता आ गई थी कि अंग्रेज़ों के प्रभाव के सामने उसका टिकना सम्भव न था। अधिक से अधिक इतना ही सम्भव था कि यदि चतुरता से काम लिया जाता तो १०-१५ वर्ष और भी चलता, लेकिन उसका पतन आगे-पीछे अवश्यम्भावी था।

बाजीराव और अन्य रजवाड़ों के बीच जो झगड़े खड़े होते, उनका निर्णय करना अंग्रेज़ों ने प्रारंभ किया। इसमें गायकवाड़ और बाजीराव का वाद बहुत दिनों चला। उसका फैसला करने के लिए गंगाधर शास्त्री पटवर्धन अंग्रेज़ों की संरक्षकता में पूना आया (सन् १८१६)। उसके जीवन की ज़िम्मेदारी अंग्रेज़ों ने ले रक्खी थी। पूना से बाजीराव और गंगाधर शास्त्री पंढरपुर गये। एक दिन वहाँ गङ्गाधर शास्त्री का खून किया गया। त्रिंबकजी डेंगले नाम का एक व्यक्ति बाजीराव का बड़ा कृपा-पात्र था। उसने बाजीराव के कहने पर यह हत्या की थी। अंग्रेज़ों को यह बात विदित होने पर उन्होंने त्रिंबकजी को अपनी अधीनता में करने के लिए बाजीराव से उसे माँगा। बाजीराव ने पहले तो उसका पता ही न दिया, लेकिन अन्त में उसने त्रिंबकजी को अंग्रेज़ों के हवाले कर दिया। अंग्रेज़ों ने उसे हवालात में बन्द कर दिया

अंग्रेज़ों के साथ जो युद्ध किया इससे उनकी अधीनता में रह कर जो छोटा सा राज्य उसे मिला था वह भी उससे छिन गया। अन्यथा जिस प्रकार सिंधिया और होलकर के राज्य दीख पड़ते हैं, उसी प्रकार एक छोटा सा राज्य पेशवा का भी आज कदाचित् दीख पड़ता।

अंग्रेज़ों ने त्रिंबक डेंगले को पकड़कर चुनार के क़िले में बंद कर दिया। वहीं उसकी मृत्यु हुई। पूना के अंग्रेज़ी गजट एलफिन्स्टन को अंग्रेज़ों द्वारा जीते हुए प्रदेश का शासन करने के लिए नियुक्त किया गया। उसने पेशवा के दरबार में आनेवाले सरदारों को उनकी पहले से मिली हुई जागीर, वार्षिक वेतन और जिनको जो जो पेंशनें मिलती थीं वे सब ज्यों की त्यों क़ायम रक्खीं। इससे पेशवाई टूटने का दुःख किसी को न खला और सम्मान के साथ रहने के लिए उनका प्रबन्ध हो गया। इनाम, देवस्थान, धर्मादा इत्यादि ख़र्च जिस तरह पेशवा के समय में दिये जाते थे, उसी प्रकार एलफिन्स्टन ने भी क़ायम रक्खा और देश में शान्ति तथा सुप्रबन्ध स्थापित किया। इसी से एलफिन्स्टन की कीर्ति का महाराष्ट्र लोग गान करते हैं।

(८) भोसले और होलकर के साथ युद्ध। सन [illegible] बाजीराव को सहायता देने के लिए नागपुर के भोसले और होलकर ने उद्योग किया था। होलकर के दरबार में बड़ा षड्यन्त्र था। दौलतराव का दत्तक पुत्र मल्हारराव छोटा था और [illegible] बड़े प्रबल हो गये थे। वे पेशवा बाजीराव की सहायता करने के लिए जिस समय [illegible] थे, उसका सामना करने [illegible] इस लड़ाई में होलकर की [illegible]

उमई की लड़ाई में सेनापति त्रिंबकराव दाभाडे मारा गया। अतः दाभाडों का गुजरात का काम गायकवाड़ को दिया गया। इसी प्रकार अधिक उद्योग करके इन्होंने गुजरात में अधिक देश जीता। बसई की सुलह होने के पूर्व अँग्रेज़ों की तैनाती फ़ौज को स्वीकार कर गायकवाड़ों ने अँग्रेज़ों का सार्वभौमत्व स्वीकार किया। गायकवाड़ों के घराने में पहले सयाजीराव (सन् १८१९-४७), गणपतराव (सन् १८४७-५६), खण्डेराव (१८५६-७१) और मल्हारराव (सन् १८७१-७५) ने क्रम से राज्य किया। वर्तमान सयाजीराव सन् १८७५ में गद्दीनशीन हुए और अपने घराने की प्रतिष्ठा भले प्रकार से रक्षित किये हुए हैं।

गायकवाड़ों की तरह ही सिन्धिया के घराने में जयाजीराव और उसका लड़का माधवराव बड़ा प्रसिद्ध हुआ। जयाजीराव सिन्धिया, तुकोजीराव होलकर और खण्डेराव गायकवाड़ परस्पर समकालीन थे और अँग्रेज़ी अलमदारी में प्रधान समझे जाते थे। माधवराव सिन्धिया सन् १९२५ में मरा और उसका लड़का जार्ज जयाजीराव गद्दी पर है।

(५) मराठा-शाही के अस्त होने के कारण—सन् १६६४ में शिवाजी ने मराठों का स्वतन्त्र राज्य स्थापित किया। वह लगभग १५० वर्ष रहकर अस्तप्राय हो गया। इस काल में राज्य व्यवस्था में अनेक फेर फार हुए। प्रारम्भ में शिवाजी का इस राज्य स्थापन में क्या उद्देश था और इसमें किस प्रकार विकार उत्पन्न हुए, ये बातें ऊपर भली भाँति समझा दी गई हैं। शिवाजी जानता था कि राज्य प्रजा के पालन के लिए होता है, सुख भोग करने और लूटने के लिए नहीं। वह लोगों को सुख देने का एक साधन है। प्रजा का पालन-पोषण करना ही राजाओं का मुख्य कर्तव्य है। उसने किसी स्वार्थ-साधन के लिए यह राज्य स्थापन नहीं किया

(२) मराठों के शासन में आर्थिक स्थिति बिगड़ गई। पेशवाओं ने शिवाजी के समय के अपने जहाजी बेड़े का उन्नति न करके उल्टा अंग्रेजों की सहायता लेकर उसका नाश कर दिया। अतः समुद्रतट का शासन अंग्रेजों के हाथ में चला गया। (३) युद्ध-कला और शस्त्र के ज्ञान में वे अंग्रेजों की बराबरी बिलकुल न कर सकते थे। (४) पास-पड़ोस के राज्यों में क्या उद्योग हो रहा है—इसका उन्होंने बिलकुल ही अध्ययन न किया। सारांश यह कि यूरपीयों की राज्य-व्यवस्था और प्रबंध मराठों से कहीं अधिक बढ़-चढ़ कर थे। इसीसे अंग्रेजों के प्रभाव के सामने मराठों को हार खानी पड़ी। (५) नारायणराव पेशवा के मारे जाने के बाद से राज्य में अनेक प्रकार का गड़बड़ फैल गया। और दूसरे बाजीराव ने और भी अधिक अवस्था बिगाड़ दी। अपने ही लोगों द्वारा उसने पूना शहर लुटवाया। शासकों के सामने अनेक बार धन का अभाव पूरा करने का मौका आया है, लेकिन स्वयं अपनी प्रजा को लूटने का कुकृत्य करने से प्रजा नाराज हो गई। विदेशी लोगों का विश्वास मराठों पर से उठ गया और ऐसी लूट से स्वयं महाराष्ट्र के रहनेवाले लोग विरुद्ध हो गये इसी लिए। (६) जब न्याय-प्रिय अंग्रेजों का शासन देश में शुरू हुआ तब सेठ-साहूकार रैयत सभी आनन्द का अनुभव करने लगे। उन्हें प्रतीत हुआ कि बड़ी विपत्ति से अंग्रेजों ने उनका छुटकारा किया है। एल्फिन्स्टन, मालकम इत्यादि नीतिज्ञ शासकों के चातुर्य, नीति, लोकहित इत्यादि कार्य से लोगों में एक प्रकार का संतोष उत्पन्न हो गया और अंग्रेजों के शासन को दृढ़ करने तथा उनके राज्य को बढ़ाने में लोगों ने तन-मन से उनकी सहायता की। सारांश यह कि स्वार्थ से वे अनीति से नाश होता है यह बात ऊपर दिये गये वृत्तांत से स्पष्ट है। मराठों का शासन

२—वंशावली १—६

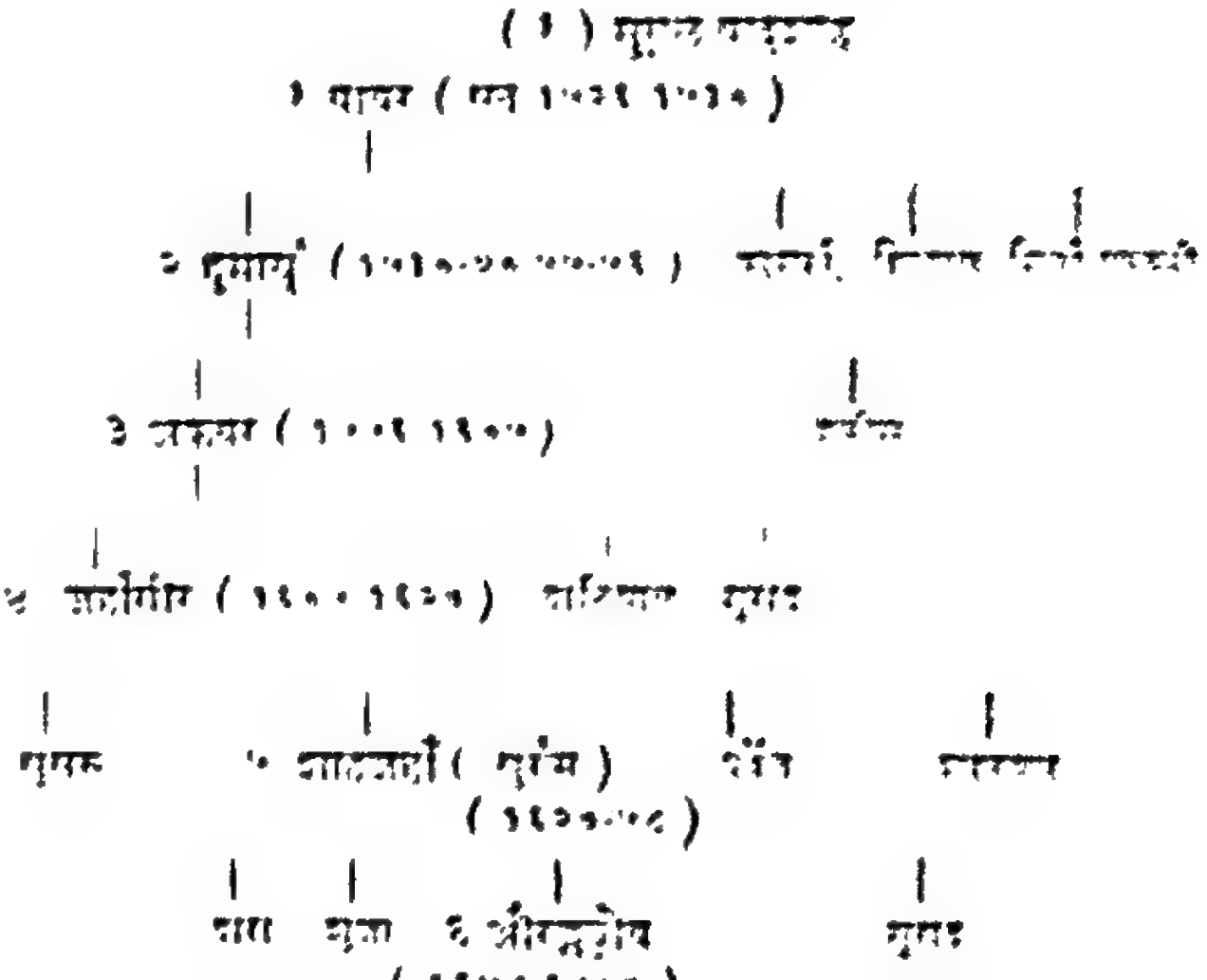

(८) हैदराबाद के निज़ाम

शिवाजी
अण्णा साहब
(मृत १९१४)

प्रतापसिंह भाऊ साहब
(मृत १९२५)

शाहू दूसरा

सूर-देसाई रचित

[illegible]

[illegible] भारतवर्ष

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] १

[illegible] [illegible]

[illegible] [illegible]

[illegible] [illegible]

[illegible] [illegible]

[illegible] [illegible]

दूसरा अध्याय

[illegible]

[illegible] [illegible]

[illegible] [illegible]

[illegible] [illegible]

[illegible] [illegible]

फ्रेंचों के साथ दूसरा युद्ध ... ...
कलकत्ते का पतन ... ...
प्लासी की लड़ाई... ... ...

तीसरा अध्याय

राज्य स्थापन का प्रारंभ

मीर जाफर और क्लाइव ... ...
मीर कासिम .. ..
मीर कासिम के साथ युद्ध ... ...
क्लाइव की व्यवस्था ... ...
दूसरे शासन का परिणाम ... ...
[illegible] ... ...
क्लाइव का [illegible] और उसकी योग्यता ..
[illegible] कम्पनी .. ..

चतुर्थ अध्याय

वारेन हेस्टिंग्स

वारेन हेस्टिंग्स .
[illegible] ...
[illegible]
[illegible] .
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

चेतसिंह का मामला ४७
अवध की बेगमें ४८
लार्ड हेस्टिंग्स के शासन काल के युद्ध... ... ४९
हैदर अली की उन्नति ५०
पहला मैसूर-युद्ध... ... ... ५१
दूसरा मैसूर-युद्ध... ... ... ५२
हैदरअली की मृत्यु और उसकी योग्यता ५३
हेस्टिंग्स की योग्यता ५४
हेस्टिंग्स के कामों की जाँच... ... ... ५६

पंचम अध्याय

कार्नवालिस और सर जान शोर

फ्रांस और पिट के दिल ५८
लार्ड कार्नवालिस ६०
तीसरा मैसूर-युद्ध ६१
कार्नवालिस का शासन-सुधार ६४
सर-जान शोर ६५
पार्लमेंट में वादविवाद ६७

छठा अध्याय

लार्ड वेलज़ली

वेलज़ली के समय की परिस्थिति ६८
वेलज़ली की शासन-नीति ७०
चौथा मैसूर-युद्ध ७२
सहायक सेना का रजवाड़ों में भेजना ७५
राज्यों की ज़ब्ती ७७

दसवाँ अध्याय

लार्ड आर्कलैंड और एलिनबरो

[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]

ग्यारहवाँ अध्याय

लार्ड हार्डिंज और डलहौसी

[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]

बारहवाँ अध्याय

सन् सत्तावन का गदर

[illegible] ...	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible] ...	[illegible]
[illegible] ...	[illegible]
[illegible]	[illegible]

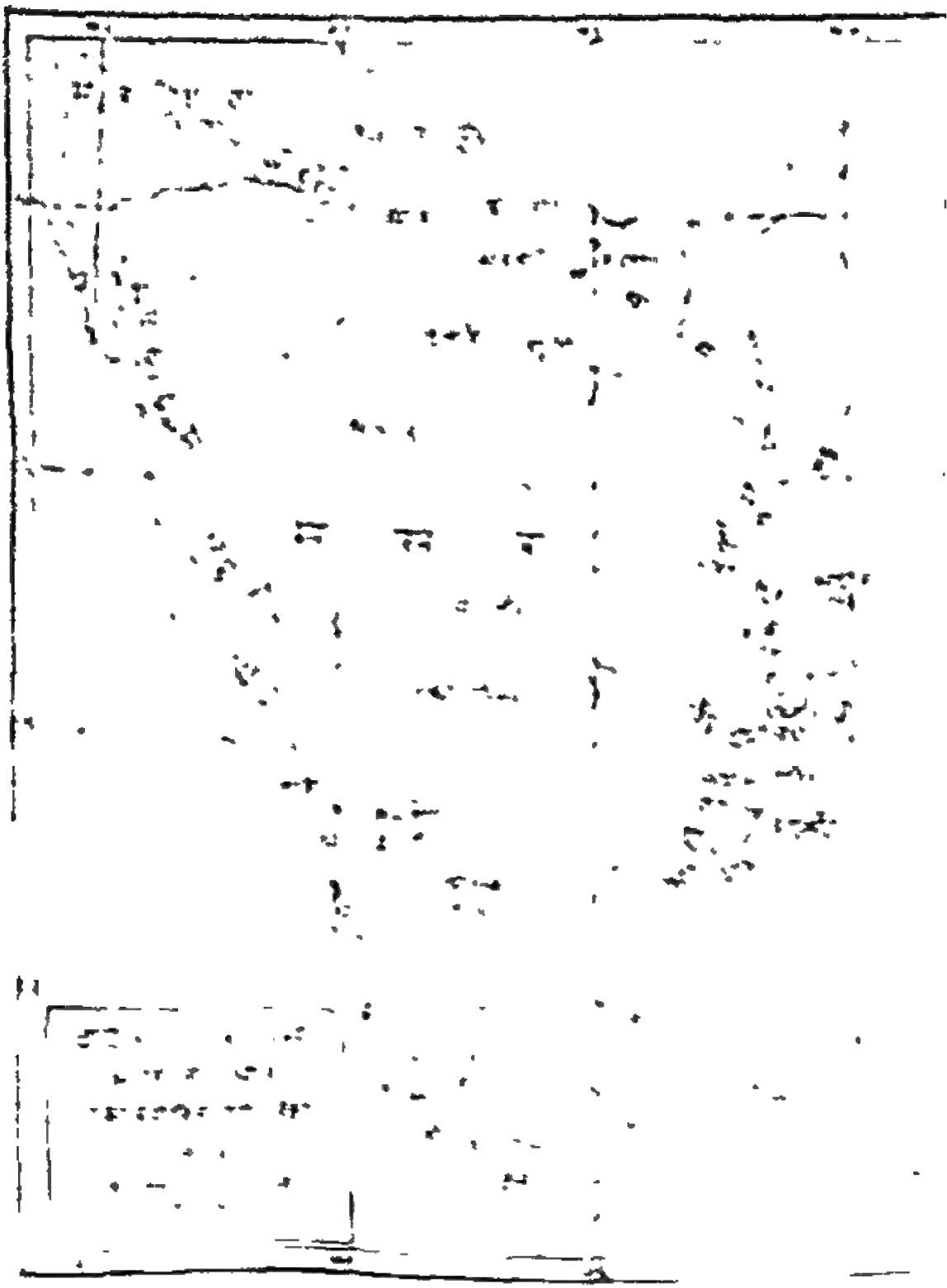

थे उनको गिरा देने के लिए और सूबेदारी में कोई विदेशी व्यक्ति युद्ध की तैयारी न करे—इस प्रकार की आज्ञाएं सिराजुद्दौला ने लिखकर अंग्रेज़ों के पास भेजीं (सन १७५६)। कलकत्ते के गवर्नर ड्रेक साहब ने किलेनदारी के मामले में कोई जवाब न देकर दीवार बनाने के सम्बन्ध में यह लिख भेजा कि हमने कोई नई बात नहीं की है। जो पुरानी दिवारें थीं, केवल उन्हीं की मरम्मत की है। इस मामले में बड़ी लिखा-पढ़ी के बाद शांति से झगड़ा मिटता न देख सिराजुद्दौला ने नाराज़ होकर एक बड़ी फ़ौज लेकर कलकत्ते के अंग्रेज़ों पर चढ़ाई की। उस समय अनेक अंग्रेज़ छिप-छुपा कर हुगली-नदी में खड़े जहाज़ों पर बैठ कर भाग गये। बाद को सिराजुद्दौला ने किले पर अधिकार कर लिया। वहाँ अंग्रेज़ों के ख़ज़ाने में अधिक धन न मिला। यह देखकर उसे बड़ा दुख हुआ। लड़ाई में १४६ अंग्रेज़ क़ैद किये गये थे। संध्या के समय ये लोग शराब पीकर नशे में एक दूसरे से दंगा करने लगे। इस लिए रात भर इनको एक कोठरी में बंद रखने की आवश्यकता पड़ी। मानिकचंद नाम के एक आदमी को ये अंग्रेज़ क़ैदी सौंपे गये थे। उसने इन क़ैदियों को जेल की एक २० फुटवाली चौरस कोठरी में बंदकर दिया। इस कोठरी में एक छोटा झरोखा छोड़ कर हवा के आने का अन्य कोई मार्ग न था। उन महीने की कड़ी गर्मी पड़ रही थी। इन क़ैदियों को कोई पानी देनेवाला तक न था और रात्रि के समय किसी ने इनकी सूबेदार तक ख़बर भी न की। सवेरे दरवाज़ा खोलने पर देखा तो केवल २३ आदमी अधमरे मिले। यह घटना इतिहास में "कलकत्ते की काल कोठरी" के नाम से प्रसिद्ध है। वास्तव में यह दुर्घटना हुई या नहीं, इस सम्बन्ध में अभी मतभेद है। जिन क़ैदियों को नवाब ने

[illegible]

[illegible]

हौला को नवाबी से उतारने का विचार क्लाइव ने किया। यह बात ठहरी कि क्लाइव लड़ाई के लिए तैयार हो, और ठीक लड़ाई के वक्त पर मीर जाफर नवाब का साथ छोड़ अंग्रेजों में जा मिले। लड़ाई की तैयारी होने पर १३ जून १७५७ का सब अंग्रेजी फौजें साथ लेकर मुर्शिदाबाद पर चढ़ाई करने के लिए क्लाइव चला। यह खबर पाते ही सिराजुद्दौला घबरा गया और अपनी सारी सेना इकट्ठा कर मुर्शिदाबाद से दक्षिण [illegible] मील दूर प्लासी नामक गाँव के पास एक मैदान में अंग्रेजों की सेना को रोकने के लिए [illegible] गया। क्लाइव के साथ [illegible] हजार यूरोपीय सैनिक थे और [illegible] तथापि मीरजाफर की बात पर भरोसा रखकर उसने नवाब की बहुत बड़ी फौज से लड़ाई छेड़ दी।

जगत् सेठ और उमाचन्द नाम के दो साहूकारों का देवदेवा मुर्शिदाबाद में बहुत था। मीरजाफर का यह षड्यन्त्र उन्हें विदित था। इस षड्यन्त्र के गुप्त रखने के लिए उमाचन्द ने क्लाइव से एक बड़ी रकम माँगी। उसे यह रकम न मिलने पर यह भेद नवाब पर प्रकट कर देने की धमकी दी। इस भय से क्लाइव ने रकम न देने का निश्चय करके भी उसे उन रकम देने की प्रतिज्ञा की। किन्तु बाद के कोई रकम उसे न दी। सिराजुद्दौला के साथ [illegible] पैदल [illegible] जून के नवाबी फौजों ने अंग्रेजी फौज [illegible] के शुरू होते ही मीरजाफर [illegible] नवाब का पक्ष छोड़ अंग्रेजों से जा मिला। इससे नवाब की फौज घबराकर [illegible] नवाब के भी मुर्शिदाबाद की [illegible] किन्तु वहाँ

उसके पास सहायता भेजी। उस समय क्लाइव ने मीरजाफ़र से बादशाह को कुछ धन दिलवा दिया। इसके बदले में बादशाह ने क्लाइव को ११ हज़ार का मनसब और जमोर की उपाधि दी। इस समय भारत के भिन्न भिन्न स्थानों में हलचल मच रही थी। क्लाइव की इच्छा थी कि बङ्गाल में कम्पनी अपना राज्य स्थापित करे और इस प्रयत्न के लिए वह सन् १७६० में दूसरी बार स्वदेश गया। लेकिन भारत में राज्य-स्थापन करने का उसका विचार उस समय अंग्रेज़ी सरकार को नहीं रुचा।

(२) मीरक़ासिम, (सन् १७६१)—क्लाइव के बाद वेन्सिटार्ट बङ्गाल का गवर्नर हुआ। मीर जाफ़र की शासन-सम्बन्धी शिकायतें सुनकर वह स्वयं मुर्शिदाबाद गया। वहाँ उसने भली भाँति जाँच करके मीरजाफ़र को गद्दी से उतार दिया और मीर क़ासिम नामक उसके दामाद को बङ्गाल का नवाब बनाया। मीरजाफ़र पर अंग्रेज़ों का अत्यधिक क़र्ज़ बढ़ गया था। वह सब मीरक़ासिम ने दे डाला और बर्दवान, चटगाँव और मेदनापुर कुल ५० लाख की आमदनी का राज्य कम्पनी को दिया। मीरजाफ़र कलकत्ते में आकर रहने लगा।

इसी बीच में बादशाह शाहआलम और अवध के वज़ीर नवाब शुजाउद्दौला ने बंगाल पर दूसरी चढ़ाई की (सन् १७६१)। उस समय क़ासिम ने अंग्रेज़ों की सहायता से बादशाह को परास्त किया। कानक नाम का एक अंग्रेज़ फ़ौज का सेनापति था। उसने बादशाह को पटना में लाकर उसका बड़ा आदर-सत्कार किया। एक बड़ा दरबार किया गया। इस दरबार में मीर-क़ासिम ने बादशाह को नज़र दी और बादशाह ने उसे नवाबी की पोशाक दी। बादशाह यह चाहता था कि अंग्रेज़ लोग मुझे

उसके पास सहायता भेजी। उस समय क्लाइव ने मीरजाफ़र से बादशाह को कुछ धन दिलवा दिया। इसके बदले में बादशाह ने क्लाइव को ११ हज़ार का मनसब और अमीर की उपाधि दी। इस समय भारत के भिन्न भिन्न स्थानों में हलचल मच रही थी। क्लाइव की इच्छा थी कि बङ्गाल में कम्पनी अपना राज्य स्थापित करे और इस प्रयत्न के लिए वह सन् १७६० में दूसरी बार स्वदेश गया। लेकिन भारत में राज्य-स्थापन करने का उसका विचार उस समय अंग्रेज़ी सरकार को नहीं रुचा।

(२) मीरक़ासिम, (सन् १७६१)—क्लाइव के बाद वेन्सिटार्ट बङ्गाल का गवर्नर हुआ। मीर जाफ़र की शासन-सम्बन्धी शिकायतें सुनकर वह स्वयं मुर्शिदाबाद गया। वहाँ उसने भली भाँति जाँच करके मीरजाफ़र को गद्दी से उतार दिया और मीर क़ासिम नामक उसके दामाद को बङ्गाल का नवाब बनाया। मीरजाफ़र पर अंग्रेज़ों का अत्यधिक क़र्ज़ बढ़ गया था। वह सब मीरक़ासिम ने दे डाला और बर्दवान, चटगाँव और मेदनापुर कुल ५० लाख की आमदनी का राज्य कम्पनी को दिया। मीरजाफ़र कलकत्ते में जाकर रहने लगा।

इसी बीच में बादशाह शाहआलम और अवध के वज़ीर नवाब शुजाउद्दौला ने बंगाल पर दूसरी चढ़ाई की (सन् १७६१)। उस समय क़ासिम ने अंग्रेज़ों की सहायता से बादशाह को परास्त किया। कारनक नाम का एक अंग्रेज़ फ़ौज का सेनापति था। उसने बादशाह को पटना में लाकर उसका बड़ा आदर-सत्कार किया। एक बड़ा दरबार किया गया। इस दरबार में मीर-क़ासिम ने बादशाह को नज़र दी और बादशाह ने उसे नवाबी की पोशाक दी। बादशाह यह चाहता था कि अंग्रेज़ लोग मुझे

दिल्ली ले जाकर वहाँ तख्त पर बिठावें। लेकिन अंग्रेज़ों ने उसकी यह बात न मानी। इसीसे बादशाह उदास होकर नवाब वज़ीर के साथ इलाहाबाद वापस गया (सन् १७६१)।

(३) मीरकासिम के साथ युद्ध, (सन् १७६३-६४)—मीरकासिम और अंग्रेज़ों के बीच बहुत दिनों मेल-जोल न बना रह सका। क्योंकि (१) अंग्रेज़ों की अधीनता उसे रुचिकर न थी। गुप्तरीति से वह अंग्रेज़ों के साथ युद्ध करने की तैयारी करने लगा। उसकी राजधानी मुर्शिदाबाद कलकत्ते से बिलकुल पास थी। इस कारण वहाँ से अधिक दूर भागीरथी के तट पर मुंगेर को उसने अपनी राजधानी बनाया। इसी तरह उसने अनाड़ी सिपाहियों को नौकरी से अलग कर नई भर्ती के सिपाहियों को क़वायद सिखाकर तैयार किया और बन्दूक तथा तोपें तैयार करने का एक कारख़ाना भी खोला। (२) दूसरा कारण चुङ्गी से सम्बन्ध रखता है। बङ्गाल प्रान्त में नदियों द्वारा व्यापारिक माल भेजा जाता था। इसलिए जगह जगह पर चुङ्गी के नाक बने थे। फर्रुखसियर बादशाह के समय में केवल इंग्लैंड से लाये गये माल पर कम्पनी की चुङ्गी माफ़ कर दी गई थी। बाद को कम्पनी के नौकर अपना निजी व्यापार बढ़ाकर नमक, तम्बाकू, सुपाड़ी, तेल, शक्कर, चावल, सोंठ इत्यादि देशी माल भी बिना चुङ्गी दिये ले जाने लगे। यह देशी व्यापार [illegible] का न था, तथापि अंग्रेज़ व्यापारियों को कम्पनी की [illegible] माफ़ी के परवाने दिये जाने लगे। इससे देशी व्यापारियों [illegible] एकदम चौपट हो गया, क्योंकि अंग्रेज़ों के माल पर [illegible] न लगने से [illegible] जिस माल [illegible] जहाँ से [illegible]

चुंगी की आमदनी कम हो गई। उसने अंग्रेज़ों को बहुत कुछ समझाया, परन्तु अंग्रेज़ों ने उसकी एक न सुनी। अतः निरुपाय होकर उसने अपने राज्य में सभी स्थानों पर चुंगी लेना एकदम बन्द कर दिया। इससे अन्य व्यापारियों को जो कठिनता थी वह दूर हो गई और उनका व्यापार भी चल निकला। लेकिन अंग्रेज़ व्यापारियों को इससे होनेवाला लाभ बंद हो गया। अतः कलकत्ते की कौंसिल ने यह प्रकट किया कि नवाब को कर बंद करने का कोई अधिकार ही नहीं है। इस बात को लेकर दोनों पक्षों में झगड़ा बढ़ते बढ़ते लड़ाई की नौबत आ गई। पटना में अंग्रेज़ों की कोठी का मुखिया उस समय एलिस था। यही बंगाल के सूबेदार का रेज़ीडेंट भी था। उसने पटना शहर और ज़िले पर घेरा डाला। उस समय कलकत्ते से हथियारों से भरी हुई कई नावें पटना जा रही थीं। उन सब को मीरकासिम ने मुंगेर में जब्त कर लिया और अंग्रेज़ों से कहला भेजा कि एलिस को हमें सौंपो तो ये नाव तुम्हें वापस की जायगी। यह बात अंग्रेज़ों ने न सुनी। यह बात जानकर मीरकासिम ने सभी अंग्रेज़ों को पकड़ने की आज्ञा दी। उस समय अनेक लोग उसके वश में आ गये। इधर कलकत्ते की कौंसिल ने एक प्रस्ताव द्वारा मीरकासिम को पदच्युत किया और उसकी जगह पर बूढ़े मीरजाफर को मुर्शिदाबाद में ले जाकर सूबेदार बनाया। जून सन् १७६४ में अंग्रेज़ों के आते ही मीरकासिम अपने सब कैदियों को साथ लेकर दूसरे स्थान पर चला गया। बाद को घोरिया नामक स्थान में बड़ी घमासान लड़ाई हुई। इसमें मीरकासिम हार गया। अक्टूबर में मुंगेर शहर अंग्रेज़ों ने ले लिया। इससे मीरकासिम

की आशा मुसलमानों में न रह गई। बंगाल अब सब तरह से अंग्रेज़ों के अधिकार में आ गया।

(४) क्लाइव की व्यवस्था (१७६५-६७)—गवर्नर वेन्सिटार्ट का कार्यकाल समाप्त हो जाने और अन्य कोई योग्य व्यक्ति न मिलने के कारण कम्पनी के डाइरेक्टरों ने क्लाइव को वेन्सिटार्ट की जगह पर तैनात करके भेजा। उस समय क्लाइव ४० वर्ष का था। उसकी इच्छा थी कि बंगाल-प्रान्त पर अपनी सत्ता क़ायम करके उसका उचित प्रबन्ध करे। लेकिन कम्पनी के डाइरेक्टरों ने उसे इस काम का अधिकार न दिया। कंपनी के नौकरों में घूसखोरी, भेंट इत्यादि लेना, मौज करना और उद्दंडता का व्यवहार करना इत्यादि दुर्गुणों का प्रवेश हो चुका था। क्लाइव ने भारत में आने पर यह दुरवस्था सुधारने का बहुत प्रयत्न किया, लेकिन उस समय उसे अपने काम में विशेष सफलता न मिली। क्लाइव ने दो मुख्य सुधार किये। एक कम्पनी और अंग्रेज़ नौकरों से सम्बन्ध रखनेवाला और दूसरा बंगाल का शासन-सम्बन्धी सुधार।

(अ) कम्पनी के नौकरों के सम्बन्ध में क्लाइव ने तीन कड़े नियम बनाये—(१) कम्पनी के नौकर अपना निजी व्यापार न करें। (२) फ़ौजी और अन्य नौकरों को लड़ाई के समय का भत्ता अर्थात् अधिक वेतन न दिया जाय। (३) कम्पनी का नौकर नज़राना, घूस इत्यादि बिलकुल न ले। इस मामले में तत्कालीन सभी नौकरों के अत्यन्त पतित और नीति-भ्रष्ट हो जाने से सारी व्यवस्था बिगड़ गई थी। इस व्यवस्था को सुधारने का ही प्रयत्न क्लाइव ने किया था। धन हड़पने की आदत जिन नौकरों को पड़ गई थी उन्हें ये बातें अच्छी न लगीं। आतङ्क जमाने के लिए

अनेक नौकरों ने अपनी नौकरी से इस्तीफा दे दिया। क्लाइव ने इनके इस्तीफे मंजूर किये और विद्रोहियों को कलकत्ते भेज दिया। फौज में अंग्रेज़ सिपाहियों ने बग़ावत की। इनकी बग़ावत को क्लाइव ने देशी सिपाहियों की मदद से शांत किया। मीर क़ासिम के नाराज़ होने का एक-मात्र कारण कम्पनी के नौकरों की यह धन हड़पने की आदत ही थी।

(आ) बङ्गाल का शासन—इस प्रान्त का मालिक बादशाह और उसकी ओर से सूबे की रक्षा करनेवाला सूबेदार था। इनमें सूबेदार और बादशाह को हराकर अंग्रेज़ों ने यह प्रान्त लिया था। लेकिन शासन की बागडोर को खुद्मख्तारी अपने हाथ में रखने की इच्छा कम्पनी के डाइरेक्टरों की न थी। इसलिए अपना प्रभुत्व क़ायम रखकर यहाँ की आमदनी अधिकांशतः में लेने के लिए बादशाह, सूबेदार और उनका सहायक अवध का नवाब वज़ीर—इन तीनों के साथ अलग अलग संधि कर एक ही साँकल में इन तीनों को बाँधने और फिर कभी एक दूसरे से न मिलने देने के लिए उक्त संधि में निम्न लिखित शर्तें रक्खी गई थीं—

(१) बङ्गाल के सूबेदार के साथ की हुई संधि—मीर जाफ़र बुड्ढा होकर मर चुका था। उसके स्थान पर कम्पनी ने उसके लड़के निज़ामुद्दौला को बैठाया था। उसका कार्य-भार सँभालने के लिए मुहम्मद रज़ाखाँ को मुर्शिदाबाद में और राजा सितावराय को पटने में नियुक्त किया। इन दोनों को मालगुज़ारी और शासन सम्बन्धी सभी काम सौंपे गये। सूबेदार को ख़र्च के लिए ५० लाख रुपया सालाना दिया गया और बाक़ी की मालिक कम्पनी बनी। इसमें से ५० लाख रुपये ख़र्च करके प्रान्त की रक्षा के लिए फ़ौज रखने का प्रबन्ध हुआ। इस प्रकार चार करोड़ की आम-

दनों का बङ्गाल-प्रान्त अँग्रेज़ों को मिला। इसमें से दो करोड़ को बचत क्लाइव ने कम्पनी के लिए रक्खी।

(२) अवध के नवाब वज़ीर के साथ क्लाइव ने इलाहाबाद जाकर यह निश्चय किया कि (अ) कम्पनी के विरुद्ध अकारण लड़ाई छेड़ने के लिए ५० लाख रुपये दण्ड के रूप में वज़ीर कम्पनी को दे। (आ) कड़ा और इलाहाबाद के सूबे वह बादशाह को ख़र्च के लिए दे। (इ) अवध-प्रान्त में कम्पनी के व्यापार पर अंग्रेज़ों से चुङ्गी न ली जाय। (ई) काशी का राजा बलवन्तसिंह, जो अब तक अवध के नवाब वज़ीर का मातहत था और जिसने उसके विरुद्ध अंग्रेज़ों को मदद दी थी, नवाब वज़ीर की मातहती में न समझा जाय। इस तरह यह वज़ीर भी बादशाह से अलग होकर कम्पनी की सत्ता के अधीन हुआ। इस विषय में बाद को उसे बड़ा पश्चात्ताप हुआ। लेकिन उसके पास इस ग़लती के सुधारने का कोई उपाय न था।

(३) बादशाह के साथ सन्धि और दुहरा शासन (दी डबल गवर्नमेन्ट)—(अ) पहले बङ्गाल-प्रान्त से बादशाह को एक करोड़ रुपया मिलता था। उसके बदले में २६ लाख रुपया कम्पनी ने बादशाह को प्रति वर्ष देना स्वीकार किया और कड़ा व इलाहाबाद के प्रान्त उसे दिये गये। इतनी ही आमदनी से बादशाह अपना ख़र्च चलावे। (आ) बंगाल के सम्पूर्ण प्रान्त की दीवानी अर्थात् मालगुज़ारी वसूल करने का अधिकार बादशाह अंग्रेज़ों को दे। निज़ाम का उत्तरी सरकार प्रान्त भी अंग्रेज़ों ने उस समय जीत लिया था। वह भी अंग्रेज़ों के क़ब्ज़े में रहे। (ई) इसके बाद किसी राजा के साथ कम्पनी झगड़ा न करे (१०-८-१७६५)।

इन सब संधियों के अनुसार जो व्यवस्था बंगाल के शासन

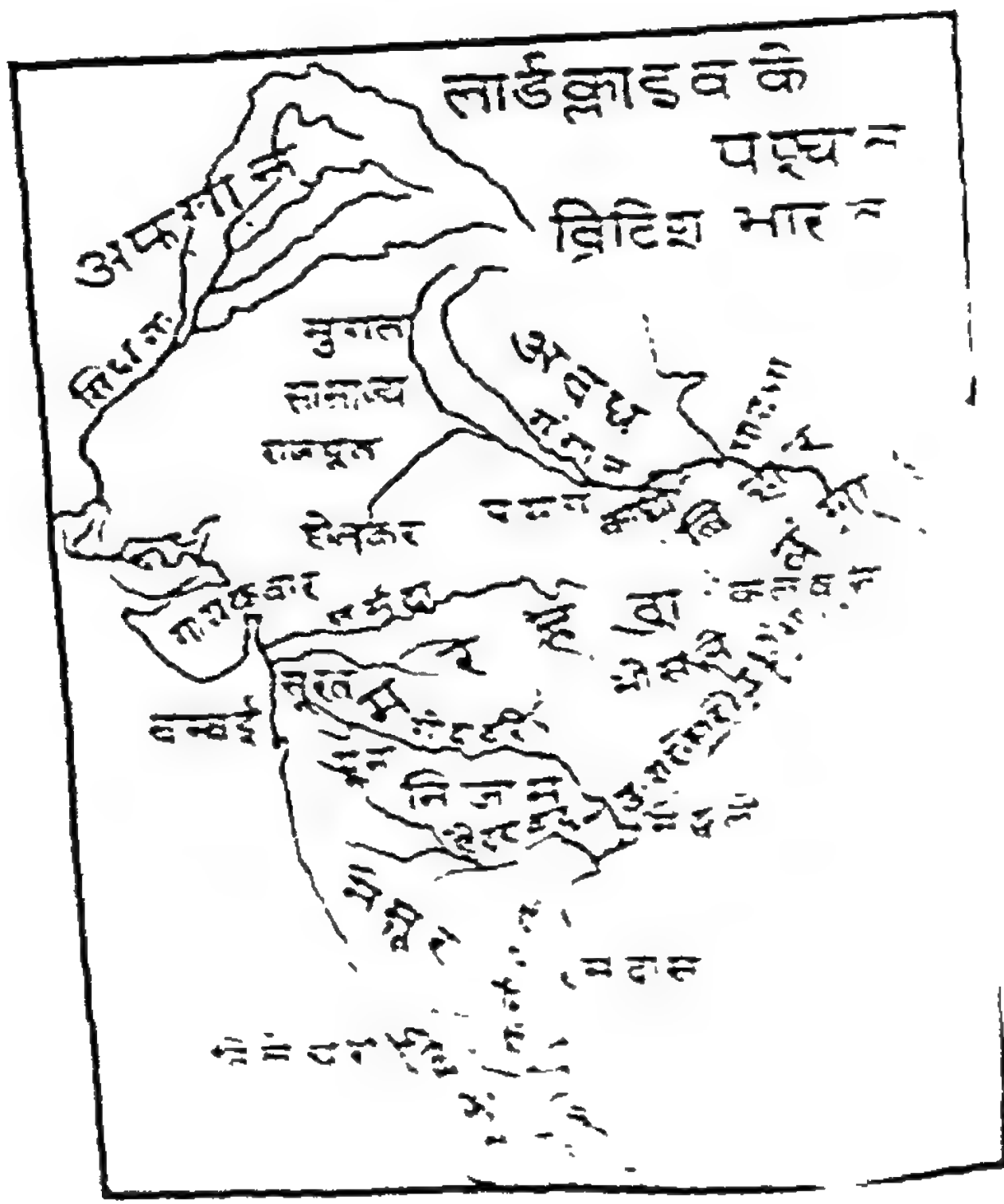
लार्डक्लाइव के
पश्चात
ब्रिटिश भारत
अफगान
मुगल
साम्राज्य
राजपूत
अवध
होलकर
गायकवार
बम्बई
निजाम
मैसूर
मद्रास

१७६१ में यह कलकत्ता कौंसिल का सदस्य बना और थोड़ा बहुत धन इकट्ठा करने के बाद सन् १७६४ में [illegible] सारांश यह कि हेस्टिंग्स [illegible] था। अपने पास का कमाया धन चार-पाँच वर्षों में [illegible] के बाद यह फिर मद्रास कौंसिल में नौकरी स्वीकार करके सन् १७६९ में भारत आया। यहाँ हिसाब और व्यापार की व्यवस्था करता था। दूसरे वर्ष उसे कलकत्ता कौंसिल में पद मिला। बाद को सन् १७७२ में यह बंगाल का गवर्नर बना और [illegible] एक्ट के अनुसार सन् १७७४ में यह गवर्नर जनरल बना।

(२) कौंसिल के झगड़े — कौंसिल में जिन चार नवीन सदस्यों की तैनाती हुई थी उनमें बार्वेल भारत में बहुत पहले से रहता था। इससे उसे यहाँ की परिस्थिति का ज्ञान अच्छी तरह से था और वह हेस्टिंग्स के विचारों से सहमत भी रहता था। अन्य तीन सदस्य बिलकुल नये थे। अतः उन्हें गवर्नर जनरल को प्रत्येक कार्य अन्याय से भरा हुआ प्रतीत होता था। इसलिए ये तीनों सदस्य अधिकतर गवर्नर जनरल के विचारों के विरुद्ध अपना मत देने लगे। उन तीन सदस्यों में [illegible] बड़ा अनुभवी, चतुर और विद्वान व्यक्ति था [illegible] हेस्टिंग्स के सम्बन्ध में अच्छे न थे [illegible] के विरुद्ध अपना मत देता था। अन्य दो सदस्य [illegible] से अपनी सम्मति ही प्रकाश किया करते थे [illegible] कर भारत में आने पर यहाँ कम्पनी के नौकर [illegible] अत्याचार करते हैं—ऐसा उनमें विश्वास जम जाने से [illegible] झगड़े शुरू हुए और सदैव गवर्नर जनरल के विचारों के विरुद्ध कौंसिल में बहुमत होने लगा। इस कारण हेस्टिंग्स [illegible]

टीपू सुलतान

…जवाड़ों के कार्यों में
…ा ही प्रयत्न करना।
…ासन में दो मार्के की
… शासन-सुधार।
…०-९२)—मंगलोर
…ग पर चढ़ाई करके
… उसके साथ युद्ध

… उस समय टीपू
…म को देने का
…(२) त्रावन-
…में टीपू और
…मालाबार में
…र या केरल
…के राजे इसी
…ल समय तक
…जना लिया था।
…ा मार्तण्ड वर्मा
…सन १७५८ में हैदर
…र त्रावनकोर को भी
…न अंग्रेज़ों ने त्रावनकोर
… टीपू के विरुद्ध बाद
…ा ली इसलिए टीपू
…ा कि कोचीन का
…राज्य के दो

उससे कह दिया गया था कि न तो देशी रजवाड़ों के कार्यों में हस्तक्षेप करना और न अधिक देश जीतने का ही प्रयत्न करना। उसने सात वर्ष तक शासन किया। उसके शासन में दो मार्के की बातें हैं। (१) तीसरा मैसूर-युद्ध और (२) शासन-सुधार।

(३) तीसरा मैसूर-युद्ध (सन् १७९०-९२)—मंगलोर की संधि के बाद टीपू सुल्तान ने शेज़ार के देश पर चढ़ाई करके अपनी शक्ति अधिक बढ़ा ली थी। उस समय उसके साथ युद्ध करने के निम्नलिखित कारण थे—

(१) कर्नाटक में बालाघाट नाम का प्रान्त उस समय टीपू के अधिकार में था। अंग्रेज़ों ने उसे लेकर निज़ाम को देने का विचार किया। यह बात टीपू को अच्छी न लगी। (२) त्रावनकोर और कोचीन राज्यों के मामले के सम्बन्ध में टीपू और अँग्रेज़ों में असन्तोष उत्पन्न हुआ। ये दोनों राज्य मालाबार में एक दूसरे से मिले जुले थे। पहले ये दोनों राज्य चेर या केरल के राज्य में थे। वर्तमान त्रावनकोर और कोचीन के राजे इसी केरल-राज-वंश के वंशधर हैं। इन राज्यों पर कुछ समय तक पुर्त्तगीज़ और डच लोगों ने अपना अधिकार जमा लिया था। त्रावनकोर राज्य को सन् १७२९ में महाराजा मार्तण्ड वर्मा ने स्वतन्त्र किया। लेकिन कोचीन-राज्य को सन् १७६६ में हैदर ने जीतकर अपने अधीन कर लिया। हैदर त्रावनकोर को भी अपने अधीन करना चाहता था लेकिन अंग्रेज़ों ने त्रावनकोर के राजा को अपने पक्ष में मिलाकर टीपू के विरुद्ध बाद को होनेवाले युद्ध में उससे सहायता ली। इसलिए टीपू इस राज्य से नाराज़ था। इसी समय जब कि कोचीन का राजा टीपू के अधीन था, डच लोगों ने कोचीन-राज्य के दो शहर

करूरनूर और आयकोट ख़रीद लिये और वहाँ अपनी किलेबन्दी की। इसी कारण कोचीन के राजा ने त्रावनकोर के विरुद्ध युद्ध छेड़ा और उसकी सहायता करने के लिये टीपू भी त्रावनकोर पर चढ़ दौड़ा। सन १७८९ में २९ दिसम्बर को उसने त्रावनकोर राज्य में प्रवेश किया। स्थान स्थान को जलाता, लूटपाट मचाता और लोगों को क़ैद करता हुआ वह देश को चौपट करने लगा। इसलिए अंग्रेज़ों ने भी अपने मित्र त्रावनकोर राज्य की मदद के लिए टीपू के विरुद्ध हथियार उठाये। भारतीय माण्डलिक राजाओं को उनके संरक्षकों से छुड़ाकर अपने में मिलाने के अंग्रेज़ों के उद्योग का खुलासा इस उदाहरण से हो जाता है।

तीन शक्तियों का मेल (सन १७९०)—सन १७९० टीपू ने त्रावनकोर पर हमला किया। अतः गवर्नर जनरल ने युद्ध की तैयारी करके मराठों और निज़ाम के साथ सन्धि की (जुलाई सन १७९०)। इस सन्धि में यह बात निश्चित की गई कि सब मिलकर टीपू से युद्ध करें, और जो कुछ लाभ इस युद्ध के अन्त में हो उसे आपस में बराबर बराबर बाँट लें। बिना किसी की मदद लिए टीपू को जीतना अंग्रेज़ों के विचार में शक्य न था इसीलिए उन्होंने मराठों और निज़ाम को भी टीपू के विरुद्ध खड़ा किया। (१) लड़ाई (सन १७९०)—जनरल मेडोज़ सेना लेकर मद्रास की ओर से मैसूर-राज्य में घुसा। लेकिन टीपू ने उसे परास्त कर दिया। उसकी एक टोली को तो टीपू ने बिलकुल ही तहस-नहस कर दिया। इतने में ही बम्बई और बङ्गाल की सेनाएँ भी आ गईं। (२) लड़ाई (सन १७९१) गवर्नर जनरल स्वयं युद्ध में आया उसने बङ्गलोर

अधिकार कर लिया और श्रीरंगपट्टन पर चढ़ाई की। निज़ाम की १०,००० सेना ने उत्तर-मैसूर में अच्छा काम किया। मराठों की फ़ौज परशुराम भाऊ पटवर्धन व हरिपंत फड़के के साथ धारवाड़ पर चढ़ाई करने लगी। टीपू के उस मज़बूत क़िले को लेने में मराठों को बड़ी देर लगी। इधर कार्नवालिस के साथ आरिकेर में टीपू का बड़ा घनघोर युद्ध हुआ। इस लड़ाई में टीपू की हार हुई ज़रूर, लेकिन उससे कुछ अधिक लाभ कार्नवालिस को न हुआ, क्योंकि उसकी सेना में अन्न की कमी पड़ गई और रोग फैल गया। इधर मराठा-फ़ौज को न आता देख कार्नवालिस मद्रास को लौटने लगा। ऐसे कठिन अवसर पर मराठों की फ़ौज जा पहुँची। उस समय के आनन्द को प्रकट करने के लिए गवर्नर जनरल ने तोपें दगवाईं। मराठों ने अपनी सारी सामग्री अंग्रेज़ों को दे दी। नाना फड़नवीस ने यह युद्ध शुरू किया था। अतः महाराष्ट्र-इतिहास में इस युद्ध का महत्व विशेष है। (३) लड़ाई (सन १७९२) तीनों मित्रों ने अपनी फ़ौजों की व्यवस्था करके श्रीरंगपट्टन पर घेरा डाल दिया। उन्होंने टीपू के राज्य को ध्वंस कर दिया। इनके साथ युद्ध न कर सकने पर टीपू ने संधि की बातचीत शुरू की। अतः श्रीरंगपट्टन में दोनों पक्षों के बीच जो संधि हुई उसकी शर्तें निम्न लिखित हैं :—

(१) टीपू अपने राज्य का आधा भाग तीनों राज्यों को दे। (२) युद्ध में जो धन लगा है उसे पूरा करने के लिए टीपू तीन करोड़ रुपये दे। और (३) अपने दो लड़कों को उसने बन्धक के रूप में अंग्रेज़ों को दे। इस प्रकार संधि की शर्तों के अनुसार कम करने पर युद्ध बन्द किया गया।

(४) कार्नवालिस का शासन-सुधार—(१) पहले रिश्वतखोर कर्मचारी लोगों का घूँस लेना, सरकारी धन को खा जाना इत्यादि बातें बंद करने के लिए कार्नवालिस ने कठोर नियम बनाये। साथ ही कर्मचारियों की वेतन-वृद्धि हुई। (२) पहले जिलों के कलक्टर ही तहसील-वसूल का काम करते थे, साथ ही अदालतों में न्याय का भी काम करते थे। इसमें जो अन्याय होता था उसे बंद करने के लिए उसने कलक्टरों से न्याय का काम न लेकर नये न्यायाधीश प्रत्येक जिले में नियत किये। बंगाल प्रान्त में उसने अपील करने की चार अदालतें स्थापित कीं। (३) सन् १७९३ ई० के फौजदारी कानून में कुछ सुधार कर उसे बंगाल में जारी किया। यह कानून "कार्नवालिस का कोड" कहकर पुकारा जाता है। (४) मालगुजारी बंदोबस्त के लिए कार्नवालिस का नाम इतिहास में विशेष प्रसिद्ध है। अकबर के समय से ही बंगाल में जमींदारी की प्रथा प्रचलित थी। इसलिए सरकार अपनी मालगुजारी बड़े बड़े जमींदारों की मार्फत वसूल करती थी। इस प्रथा से जन-संख्या और खेती में तो अवश्य अभिवृद्धि होती थी लेकिन उसी परिमाण में सरकारी मालगुजारी न बढ़ पाती थी क्योंकि फिर उसमें कोई हेर-फेर न होता था। ये जमींदार पुश्तैनी परम्परा के अनुसार राजा कहकर पुकारे जाते थे। सन् १७८८ ई० में डाइरेक्टरों ने इस मामले के सम्बन्ध में कुछ आज्ञाएँ भेजी थीं। उनके अनुसार इस मामले का स्थायी निर्णय करने के लिए ही कार्नवालिस ने निम्नलिखित प्रस्ताव सरकार के लिए भेजे—

(१) जमींदार जमीन के स्थायी स्वामी हैं। उनकी जमींदारी उनके पास अवश्य रहेगी। (२) सरकार एक बार सदा के लिए

लगुज़ारी स्थिर कर देगी। यह निश्चित मालगुज़ारी ज़मींदार
ाबर देते रहें। इसमें सरकार आगे कभी फेर-फार न करे। यह
स्ताव इंग्लैंड में स्वीकृत हुआ और भारत में सन् १७९३ की २२
र्च को प्रजा में प्रकाशित किया गया। परिणाम—इस क़ानून
लाभ-हानि क्या हुई? इस सम्बन्ध में लोगों का बड़ा मत-भेद
। यदि कहा जाय कि एक प्रकार से भारत का कल्याण हुआ
तो इसमें कोई हानि नहीं। इस्तमरारी बन्दोबस्त से ज़मींदार लोग
नी हुए। ये लोग ज़मीन के सदा के लिए मालिक बन गये।
सरकार का काम केवल उनकी रक्षा करना रह गया। इस सिद्धा-
त को मान लेने पर लोगों को अपने श्रम का पूरा पूरा फल
मिलने लगा। लेकिन किसानों पर अन्याय हुआ और सरकार की
आमदनी की वृद्धि मारी गई। किसानों पर ज़मींदारों का अत्या-
चार रोकने के लिए सन् १८५९ में और १८८२ में बङ्गाल टेनेंसी
एक्ट और बङ्गाल लैंड एक्ट बने।

(५) सर जान शोर (सन् १७९३-९८)—कौंसिल के
सभासद् सर जान शोर को अपना पदाधिकार सौंप कर कार्न-
वालिस स्वदेश लौट गया और सर जान शोर की तैनाती उस
पद पर स्वीकृत हुई। अन्य राज्यों के झगड़ों में न पड़ और लड़ाई
न लड़कर शान्ति के साथ शासन का काम चलाने के लिए
उससे कहा गया था। इस आज्ञा का उसने अक्षरशः पालन
किया। मराठे और निज़ाम के साथ कार्नवालिस ने स्थायी
सन्धियाँ की थीं। सन् १७९५ में मराठों ने खर्डा की लड़ाई में
निज़ाम के साथ युद्ध कर उसको बड़ी हानि की। उस युद्ध में
निज़ाम ने अंग्रेज़ों से सहायता माँगी। लेकिन सर जान शोर ने
इस सहायता देने को स्वीकार किया और उसी समय से

निज़ाम का मन अंग्रेज़ों की ओर से मैला हो गया और उसने फ्रेंचों से मित्रता करने की कोशिश की। इस दोष का भागी सर जान शोर बनाया जाता है। उसने पक्का विचार कर लिया था कि जब तक कम्पनी के राज्य को कोई हानि नहीं पहुँचती तब तक अन्य किसी के मामले में वह हाथ न डालेगा। उसके शासन काल में दो घटनाएँ मार्के की हुईं उनमें एक बङ्गाल के सैन्य में असन्तोष है। भारत में फ़ौजें अँग्रेज़ों की थीं। उन पर स्वामित्व दो पक्षों का था। कुछ पलटनें कम्पनी की थीं और कुछ ब्रिटिश सरकार की थीं। कम्पनी की पलटनें कम करके ब्रिटिश सरकार की फ़ौजें अंग्रेज़पदाधिकारी बढ़ाना चाहते थे। इसके अतिरिक्त फ़ौजी सिपाहियों का वेतन भी कम था। इसलिए वेतन बढ़वाने के लिए इन फ़ौजी नौकरों ने अपनी माँग पेश की। वह पूरी न हुई इससे उन्होंने बाग़ी हो जाने की धमकी दी। गवर्नर जनरल अबरक्रम्बी की मदद से यह बग़ावत रोकी। दूसरी है अवध नवाब वज़ीर का मामला—अवध के नवाब वज़ीर आसफ़ुद्दौला ने अंग्रेज़ों की सहायक सेना अपने यहाँ रक्खी थी। इस सेना के ख़र्च के लिए उसे ७० लाख रुपये सालाना देने पड़ते थे। इसलिए इसको हटाने या इसे बहुत कम कर देने के लिए नवाब वज़ीर आग्रह कर रहा था। कार्नवालिस ने राज्य का सुप्रबन्ध करने के लिए इस रक्कम में २० लाख रुपये घटा दिये। लेकिन नवाब दुर्व्यसनी था। उसकी मृत्यु सन १७९७ में हुई। बाद को उसके दासी-पुत्र वज़ीरअली अंग्रेज़ों द्वारा गद्दी पर बैठाया गया। दुष्ट निकला। इसलिए उसे पदच्युत करके मृत नवाब के सआदत अली के साथ नई संधि करके अंग्रेज़ों ने उसे गद्दी बिठाया। इस संधि के अनुसार सआदत अली ने सहायक

का फिर ७६ लाख रुपया खर्च देना स्वीकार किया और उस सेना के रहने के लिए इलाहाबाद का क़िला भी दिया (सन् १७९८)। इस नई व्यवस्था से वज़ीरअली को बड़ा दुःख हुआ। बाद को उसने बग़ावत करके बड़ा गड़बड़ किया।

(६) पार्लामेंट में वाद-विवाद (१७९३)—वारेन हेस्टिंग्स के समय में कौंसिल और गवर्नर जनरल के बीच अनेक मत-भेद हुए थे और उनके कारण झगड़े भी उठ खड़े हुए। इन झगड़ों को फिर कभी न होने देने के लिए कौंसिल की राय के विरुद्ध अपने निजी उत्तरदायित्व पर काम करने का अधिकार गवर्नर जनरल को देने के लिए पार्लामेंट में एक क़ानून बना (सन् १७८५)। जब गवर्नर जनरल शासन के कारबार का ज़िम्मेदार है तब उसे पैसा करने का पूर्ण अधिकार मिलना चाहिए। इस नीति के माने जाने पर ही कार्नवालिस ने गवर्नर जनरल का पद स्वीकार किया था। इसी प्रकार सन् १७९३ में कम्पनी को जिस समय आज्ञा-पत्र दिया गया उस समय बड़े कड़ाके की बहस पार्लामेंट में हुई थी और कम्पनी का व्यापार पर जो एकाधिकार था वह इस बार छिन गया। प्रत्येक व्यक्ति को ८ हज़ार पौंड़ी तक व्यापार करने का अधिकार मिला। भारत में ईसाई-मत और शिक्षा का प्रचार करने की आज्ञा अनेक लोगों ने माँगी थी, लेकिन पार्लामेंट ने आज्ञा न दी। क्योंकि ऐसे कार्यों से भारत में लोगों के चित्त के दुःखित होने की आशंका थी। सन् १७९८ में सर जान शोर का कार्यकाल समाप्त हुआ और वह स्वदेश वापस गया। वहाँ उसे लार्ड टेन्मथ की उपाधि मिली।

छठा अध्याय

लार्ड वेलेज़ली

ई० स० १७९८-१८०५

१—वेलेज़ली के समय में भारत की अवस्था २—वेलेज़ली की नीति

३—चौथा मैसूर-युद्ध ४—सहायक सेना का प्रचार

५—राज्यों की ज़ब्ती ६—विदेशी राजनीति

७—विदाई और योग्यता

(१) वेलेज़ली के समय की परिस्थिति (स
१७८९)—फ्रांस-देश में बड़ी विकराल राज्य-क्रान्ति हो जा
से सभी बातों में बड़ा हेर-फेर हो गया था। नेपोलियन बोना
पार्ट फ्रांस का बादशाह बन गया था और उसने सारे यूरोप
राज्यों का जीतना शुरू किया था। वह अँग्रेज़ों से भी द्वेष रख
था। वह यह भी समझता था कि भारत में अँग्रेज़ों की प्रधान
नष्ट किये बिना उनका महत्व नहीं नष्ट हो सकता। पिछले
वर्षों में अँग्रेज़ों ने फ्रेंच लोगों को भारत में हरा दिया
यह बात नेपोलियन के मन में खटक रही थी। अतः ऐसे स
में जो भारतीय राज्य उस समय तक भी थोड़े बहुत टिके हुए थे
[illegible] नेपोलियन ने सन्धि की। टीपू सुल्तान तथा अँग्रे
में परस्पर बड़ा द्वेष था। टीपू खुल्लमखुल्ला नेपोलियन की स

यता लेकर अपनी हार का बदला अँग्रेज़ों से लेना चाहता था। निज़ाम को भी जब अँग्रेज़ों ने छोड़ दिया तब उसने १४ हज़ार फ्रेंच सिपाही अपनी फ़ौज में रक्खे थे। मराठों का पेशवा जिस समय कमज़ोर और चंचल हो रहा था उस समय महादजी ने भी अपनी फ़ौज को यूरोपीय ढंग से युद्ध की शिक्षा देने के लिए फ्रेंच अफ़सर नियुक्त किये थे। दिल्ली का सारा राज-काज उस समय सेंधिया के हाथ में था। पेरोन नाम का फ्रेंच सिपाही सेंधिया की फ़ौजों का प्रधान सेनापति था। उसी प्रकार यह अफ़वाह भी फैल रही थी कि टीपू का मेल अफ़ग़ानिस्तान के अमीर ज़मानशाह से है और टीपू उसे भारत पर आक्रमण करने के लिए बुला रहा है। इधर कलकत्ते का ख़ज़ाना ख़ाली था। इससे फ़ौजें असन्तुष्ट थीं। ऐसे कठिन समय में जिस पुरुष ने भारत में अँग्रेज़ों की गिरती हुई दशा को सँभाल कर उसे फिर से उठाया और सारे शत्रुओं को परास्त कर अपने राष्ट्र का प्रभाव भारत में स्थापित किया उसकी नीति, धैर्य, चातुर्य और दृढ़संकल्प की प्रशंसा सभी अँग्रेज़ करते हैं। भारत में रजवाड़ों के परस्पर व्यवहार अनिश्चित रहने से अँग्रेज़ राजपुरुषों को समय के अनुसार उनके साथ व्यवहार करना पड़ता था। इस नीति को नष्ट कर सभी रजवाड़ों को अपने वश में करके भारत का सार्वभौम एक प्रबल आधार पर स्थापित करने का निश्चय कर वेलेज़ली ने उसको अमल में लाना शुरू किया। इसीलिए "भारत में अँग्रेज़ों के सार्वभौम राज्य का स्थापक" के नाम से वेलेज़ली इतिहास में प्रसिद्ध है। इसके शासन में दो बातें मुख्य दीख पड़ती हैं. पहली तो भारतीय रजवाड़ों के शासन से सम्बन्ध रखने वाली बातें. दूसरी भारत से बाहर के राज्यों के साथ नीति स्थिर करनेवाली बातें। इन दोनों का खुलासा यहाँ पर किया जायगा।

ही बल्कि कुछ देशी रियासतों की फ़ौजों को यूरोपियन फ़ौजी शिक्षा देकर तैयार कर लिया था। ये फ़ौजें लड़ाई पर ही जाती थीं। कुछ को देशी राजाओं से धन लेकर अंग्रेज़ी इलाक़े में रखीं हुई फ़ौजें उनके पास रखने का काम वारेन हेस्टिंग्स ने शुरू किया। लेकिन इस मामले में भिन्न भिन्न शर्तों का मानना दोनों पक्षों के लिये आवश्यक था। इन शर्तों को स्पष्ट रूप से निश्चित कर उनका प्रचार सभी देशी रजवाड़ों में करने का काम वेलेज़ली ने किया और लार्ड हेस्टिंग्स ने उसे सफल किया। ये शर्तें ये हैं—

१—इन फ़ौजों को रखनेवाले अंग्रेज़ों को सार्वभौम समझें और अपने को उनका माण्डलिक राजा मानें।

२—ये लोग किसी से मनमाने ढंग से न तो युद्ध करें और न सन्धि करें। उनके आपसी झगड़े का जो फ़ैसला अंग्रेज़ करें वही वे मानें।

३—अंग्रेज़ों के यूरोपीय शत्रुओं को कोई देशी राजा अपने राज्य में नौकर न रक्खे और न उनके साथ किसी प्रकार का सम्बन्ध ही रक्खे।

४—सहायक सेना का वेतन समय पर चुकाने के लिए, उसके खर्च को पूरा करने के लिए, उतनी ही आमदनी का भूभाग देशी राजे अपने राज्य में से अंग्रेज़ों को दें।

५—अंग्रेज़ों को ज़रूरत पड़ने पर जहाँ और जिस समय ये चाहें सहायक सेना उनको दी जाय।

६—इस प्रकार इस सहायक सेना की पद्धति का [illegible] न [illegible] किया। अंग्रेज़ी में इस पद्धति को सब्सीडियरी सिस्टम [illegible] कहते हैं। इसकी सहा

यता से अंग्रेज़ों का खर्च भी अधिक न हुआ और एक बड़ी भारी फ़ौज इन्होंने तैयार कर ली। इस फ़ौज के सब अफ़सर अंग्रेज़ थे और उनको वेतन भी सीधा अंग्रेज़ी सरकार से मिलता था। अंग्रेज़ी राज्य की स्थापना भारत में इसी पद्धति के आधार पर हुई है, अतः यह पद्धति बड़े मार्के की है।

(३) चौथा मैसूर-युद्ध (सन १७९९)—वेलेज़ली के शासन में दो बड़े युद्ध हुए। पहला टीपू के साथ और दूसरा मराठों के साथ। मराठों के साथ जो युद्ध वेलेज़ली ने किया उसका वर्णन तृतीय भाग के बारहवें अध्याय में दिया जा चुका है। यहाँ केवल टीपू के साथ किये गये युद्ध का हाल दिया जाता है।

(अ) युद्ध का कारण और तैयारी—जैसा कि पहले कहा जा चुका है, भारत में फ़्रेंचों का शासन उखड़ चला था। उस समय टीपू को नष्ट कर फ़्रेंचों का मूलोच्छेद करने की तैयारी गवर्नर जनरल ने बड़ी अच्छी तरह की। उसने अ[illegible] रजवाड़ों को भी अपने पक्ष में मिलाने का प्रयत्न किया। इस पहले निज़ाम के पास जो फ़्रेंच फ़ौज थी उसे अलग करवाया। गवर्नर जनरल ने अपनी सहायक सेना निज़ाम के यहाँ नियुक्त कर दी। इस काम में निज़ाम के दीवान मशीरुल्मुल्क से अंग्रेज़ों को अच्छी मदद मिली। इस तरह टीपू के पक्ष से निज़ाम निकल आने पर टीपू का पक्ष हलका हो गया। सेंधिया और भोंसले के पास भी फ़्रेंच फ़ौज थी। वे लोग अंग्रेज़ों के पक्ष में न मिले। केवल पेशवा ने सहायता देने का वचन अंग्रेज़ों को दिया। अफ़ग़ानिस्तान के ज़मानशाह से टीपू [illegible] की थी। इसके अनुसार वह भी युद्ध शुरू होने [illegible] पर धावा करने वाला था। फ़्रेंच सेना टीपू की मदद [illegible]

के लिए मारिशस के द्वीप से मङ्गलोर आ पहुँची। उस समय गवर्नर जनरल ख़ुद मद्रास जा पहुँचा। युद्ध की तैयारी होती देख टीपू ने प्रकट में अंग्रेज़ों के साथ मित्रता दिखाकर और भी अधिक सेना जाने की आशा में वह उस समय चुप रहा। वेलेज़ली ने यह मौक़ा ठीक समझ कर टीपू से सहायक सेना की पद्धति स्वीकार करने के लिए कहला भेजा। उसे टीपू ने न स्वीकार किया। अतः टीपू का जवाब मिलते ही गवर्नर जनरल ने उसके विरुद्ध युद्ध-घोषणा की और जनरल हेरिस को २० हज़ार सेना का सेनापति बना उसे २०० तोपें देकर मैसूर पर चढ़ाई करने को भेज दिया।

(आ) संग्राम, टीपू की मृत्यु—इस युद्ध में बड़ी लड़ाइयाँ नहीं हुईं। टीपू ने अब की बार यह पक्का इरादा कर लिया था कि या तो मैं जीतूँगा या लड़ाई में मरूँगा। युद्ध भी अधिक दिनों तक न चला। पहले स्टुअर्ट के साथ जो फ़ौज बम्बई से आ रही थी उस पर टीपू ने हमला किया। लेकिन उसका हमला असफल हो गया। इसके बाद उसने मद्रास की सेना पर हमला किया (सन १७९९)। इस लड़ाई में गवर्नर जनरल के भाई आर्थर वेलेज़ली ने बड़ी वीरता दिखाई। यहाँ भी टीपू को वापस लौटना पड़ा। इतने समय में हेरिस ने बड़ी युक्ति से अपना फ़ौज एकदम श्रीरङ्गपट्टन के सामने ला खड़ी की। इससे टीपू बिलकुल डर गया। ३ अप्रैल को हेरिस ने क़िले को घेर लिया। ३ मई को अंग्रेज़ों के पास की सामग्री चुक गई। इसलिए एकदम हमला कर देने के अलावा उनके पास कोई दूसरा उपाय न रह गया। ऐसे मौक़े पर जनरल बेयर्ड ने लड़ाई का बिगुल

में बाँट लिया। टीपू के कुटुम्ब को ९ लाख रुपये सालाना पेंशन देकर उसे वेलोर में रखने का प्रबन्ध हुआ। जिस संधि के अनुसार ये सब काम हुए उस संधि को "मैसूर की विभाग-कारिणी संधि" कहते हैं (सन् १७९९)। टीपू के चतुर दीवान पूर्णय्या को अंग्रेज़ों ने कृष्णराज का दीवान तैनात किया। पूर्णय्या ने अपने काम-काज को बड़ी सावधानी से चलाया।

(३) मैसूर के राज के साथ संधि (१७९९)—(१) यह राज्य-दान कृष्णराज को दिया गया है। राजा अंग्रेज़ों की सहायक सेना अपने पास रक्खे। उसका ख़र्च चलाने के लिए ३० लाख रुपये दे। (२) यह रक़म समय पर न मिलने पर राजा को अपने राज्य की उतनी आदमनी का भूभाग अंग्रेज़ों को देना पड़ेगा।

(४) सहायक सेना का रजवाड़ों में भेजना—(१) निज़ाम ने सहायक सेना किस प्रकार अपने यहाँ रक्खी, इसका वर्णन पहले दिया जा चुका है। (२) गायकवाड़—निज़ाम के समान ही मराठे सरदारों के साथ भी सहायक सेना-सम्बन्धी संधि करने का गवर्नर जनरल ने प्रयत्न किया। सन् १८०२ में बाजीराव ने अंग्रेज़ों के साथ बसई की संधि की थी। इससे कुछ ही दिन पहले खम्भयत या खम्भात में गायकवाड़ ने अंग्रेज़ों के साथ संधि की और उनकी सहायक सेना अपने यहाँ रक्खी। लेकिन गायकवाड़ और पेशवा का जीवन अल्पकालिक था। सन् १७६८ में दमाजी गायकवाड़ का मृत्यु हो गई। उसके मरते ही उसके लड़के गोविन्दराव, सयाजीराव, फतहसिंहराव

तीन मास में वेलेज़ली ने जीतकर अंग्रेज़ों का सार्वभौम [illegible] पर जमा दिया। यह उनकी बड़ी हिम्मत का काम समझा जा[illegible] है। इस युद्ध का वर्णन महाराष्ट्र-काल के इतिहास में दिया [illegible] चुका है। लेकिन उस समय वेलेज़ली के कार्य को इंग्लैण्ड[illegible] ने न पसंद किया। पहले टीपू के राज्य को जीतने पर उ[illegible] अन्यवाद अवश्य मिला था, लेकिन बाद को अनेक ज़बर्दस्ती [illegible] काम करने और अन्याय करने के बारे में डाइरेक्टरों ने उस[illegible] निन्दा की। यह उनके लिए असह्य थी। इसलिए उन्होंने [illegible] १८०० में अपने पद से इस्तीफ़ा दे दिया। लेकिन वह मंज़ूर [illegible] हुआ। सन् १८०३ में एक वर्ष और अधिक अपने पद पर [illegible] रहने की आज्ञा उन्हें मिली। बाद को वह मराठों के झगड़ों [illegible] पड़ गया। इससे इंग्लैण्ड में बड़ी खलबली मच गई। इंग्लैण्ड [illegible] जाता उस समय नेपोलियन के युद्धों से हैरान हो रहे थे [illegible] [illegible] के शासन-कार्य से मराठों के चढ़ने की आशंका [illegible] गई। अब अंग्रेज़-सरकार ने उन्हें सन् १८०५ में विलायत बु[illegible] [illegible] और [illegible] का युद्ध, और शान्तिप्रिय अनुभवी राजनीति[illegible] कार्नवालिस [illegible] [illegible] बनाकर भारत को फिर भेजा गया [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कोई आठ [illegible] की नम[illegible] [illegible] [illegible] का सम्मान [illegible] उनके अन्यायों [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] बाद को ३० वर्ष [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] प्रकार की [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पहुँचाता [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

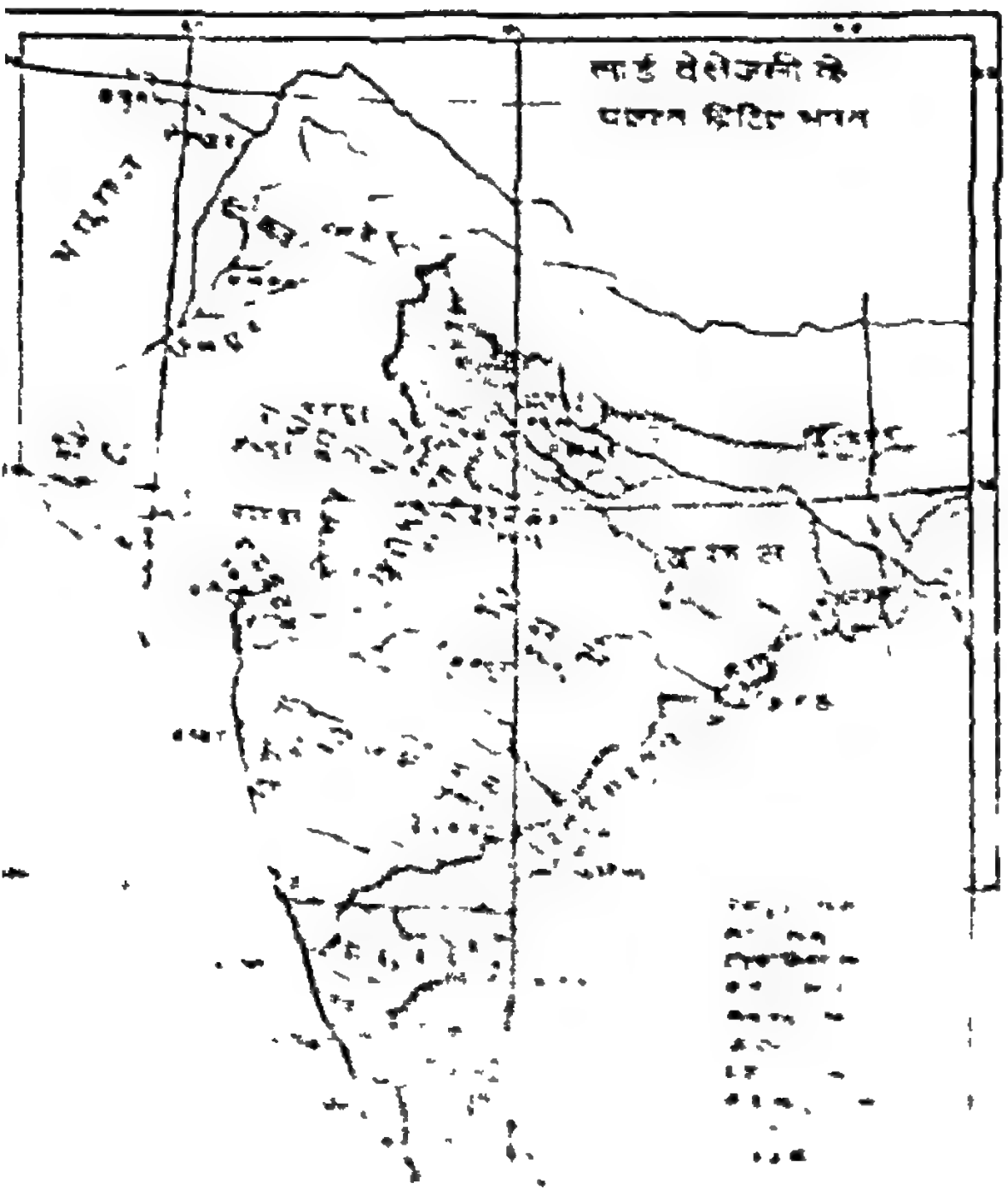

रणजीत सिंह

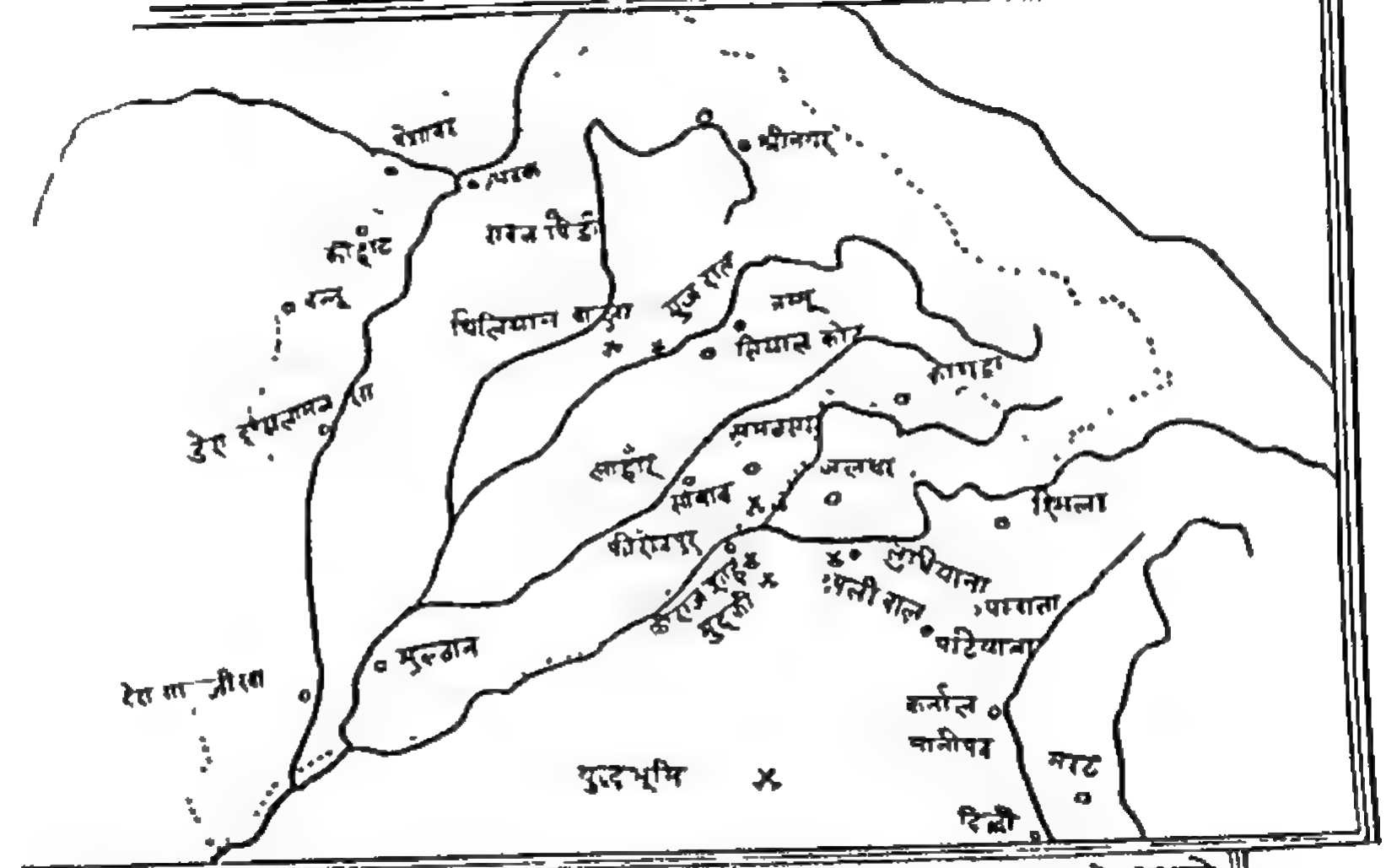

रणजीतसिंह का राज्य और सिक्खों की लड़ाइयां समझाने के वास्ते

कॅसलरीग कम्पनी के विरुद्ध था। कम्पनी का यह कहना था कि भारत में जीता हुआ देश कम्पनी का है। वहाँ वह जैसी व्यापार की परिपाटी चाहे वैसी वह चालू कर सकती है और कम्पनी की सहायता के बिना भारत का काम-काज ठीक ठीक चलना भी कठिन है। लेकिन कम्पनी के इस कथन का सप्रमाण खंडन वहाँ की प्रधान मंडली ने अक्षरशः कर दिया। इस तरह चार मास तक बहस हो चुकने के बाद नीचे लिखी बातों पर अगले बीस वर्षों के लिए कम्पनी को नवीन आज्ञा-पत्र दिया गया—

(१) कम्पनी-द्वारा जीते हुए राज्य का स्वामित्व राजा और कम्पनी का एक समान समझा जाय। (२) कम्पनी के आज्ञा-पत्र की अवधि अगले बीस वर्ष तक बढ़ा कर नौकर-चाकरों की नियुक्ति का काम उसके हाथ में दिया जाय। (३) भारत में चाहे जो व्यक्ति व्यापार कर सकता है, परन्तु चीन से व्यापार करने का अधिकार एक-मात्र कम्पनी को है।

सन् १८१३ में भारत में ईसाई-धर्म का प्रचार करने का प्रस्ताव मंजूर हुआ और कलकत्ते को धर्म-पीठ में एक विशप की नियुक्ति हुई। सन् १८१३ में लार्ड मिण्टो का कार्य-काल समाप्त हुआ और उसके स्थान में लार्ड हेस्टिंग्स की तैनाती हुई। लार्ड मिण्टो का शासन हर तरह से प्रशंसनीय समझा जाता है।

(४) लार्ड हेस्टिंग्स, (सन् १८१४-२२)—यह गवर्नर जनरल बड़ा अनुभवी और वृद्ध समझा जाता था। जिस समय यह इंग्लैंड में था राज्य-वृद्धि के लोभ से भारतीय राजाओं के अंग्रेजों के शस्त्र उठाने के काम का यह बहुत विरोध करता था। वेलेजली के कृत्यों को अन्याय-पूर्ण बता कर इसने उसकी निन्दा की थी और जिस समय यह विलायत से भारत के लिए

हुआ, उस समय इसकी इच्छा शान्ति के साथ भारत में शासन करने की थी। किन्तु यहाँ आने पर इसका निश्चय बिलकुल बदल गया। यहाँ तक कि इसकी भी गिनती उन्हीं लोगों में होने लगी जिनका विरोध वह पहले किया करता था। प्रजा के हित के लिए इस गवर्नर जनरल ने दो काम किये—(१) भारतीय प्रजा को सुशिक्षित बनाने के लिए इसने पतद्देशीय शिक्षा की पाठशालायें खोलीं। और (२) छापेखाने तथा समाचार-पत्रों को प्रोत्साहन देकर चाहे जिस विषय को प्रकाशित करने की आज्ञा दी।

(५) नैपाल-युद्ध (सन् १८१४-१६)—लार्ड हेस्टिंग्स के शासनकाल में युद्ध अधिक हुए हैं। पिंडारियों और मराठों के साथ युद्ध करके उसने लार्ड वेलेज़ली का अधूरा काम भी पूरा कर दिया। इन युद्धों का हाल महाराष्ट्र-इतिहास में दिया जा चुका है। इन युद्धों के अलावा उसने एक दूसरा युद्ध नैपाल के साथ भी किया। (अ) नैपाल का पूर्व वृत्तान्त—भारत के उत्तर हिमालय के दक्षिणी ढाल पर नैपाल नाम का एक उपजाऊ प्रान्त है। आठवीं सदी में भारत में वैदिक धर्म का फिर से प्रचार हुआ। इसलिए बौद्धधर्म को उत्तर और दक्षिण की ओर हटना पड़ा। उस समय गंगा-यमुना के किनारे के मठों को छोड़ बौद्ध हिमालय-पर्वत के प्राकृतिक शोभा से भरे स्थानों में जा बसे। तिब्बत में लासा उनका मुख्य धर्म स्थान बना। नैपाल के दक्षिण में हिमालय के नीचे एक बड़ा लम्बा-चौड़ा वन है। उसके आगे एक मैदान है, जिसमें दलदली भूमि है। इस मैदान को तराई कहते हैं। नैपाल में मुसलमानों की बस्ती नहीं है। वहाँ पहले छोटे छोटे राज्य थे। उनका नाश होकर वहाँ

तीन प्रबल राज्य थे। [illegible] था। उसी को ईस्ट इंडिया कम्पनी नैपाल का नेवार राजा कह कर पुकारती थी। ये नेवार लोग खेती और व्यापार से अपना जीवन बिताते थे। ईस्ट इंडिया कम्पनी का व्यापार नैपाल के साथ अच्छा होता था। कम्पनी के व्यापारी तिब्बत से बंगाल में सोना लाते थे। काश्मीर में गारखे नाम के लड़ाके लोग रहते थे। उन्होंने सन् १७६७ में नैपाल पर द्रव्य और राज्य के लोभ से चढ़ाई की। उन्होंने काठमांडू के राजा को हरा दिया। इस राजा ने अंग्रेज़ों से मदद माँगी। अंग्रेज़ों ने कुछ फ़ौज भी भेजी लेकिन बरसात के दिन थे, इसलिए जो फ़ौज वहाँ गई वह तराई में अटक गई तथा सिपाही भी बीमार पड़ गये। उनमें बहुतों को रोग ने मार डाला। इसलिए इस फ़ौज को वापस लौटना पड़ा। पृथ्वीनारायण गोरखों का सरदार था। इसे "महाराज" कह कर लोग पुकारते थे और इसके सरदार भारदार कहलाते थे। इन भारदारों की सहायता से पृथ्वीनारायण ने नेवारों को जीत लिया और नेवार-राजा और इसके सरदारों को भी मार डाला। उनकी सम्पत्ति ज़ब्त करके अपने भारदारों में पृथ्वीनारायण ने बाँट दी। इसके बाद उसने सन् १७६७ से स्वयं काठमांडू में राज्य करना शुरू किया। राज्य के शासन के काम में राजा की मदद करने के लिए इन भारदारों की एक सभा रहती थी। नैपाल की स्थायी फ़ौज बारह हज़ार थी। वह प्रति वर्ष बदल जाती थी। प्रति तीन वर्ष बाद वही लोग फिर सैनिक बनाये जाते थे। इस तरह १२ हज़ार को वेतन मिलता, पर ३६ हज़ार सैनिक राज्य की रक्षा

के लिए सदा तैयार रहते थे। जिस प्रकार भारत में दशहरे का उत्सव बड़े ठाठ से होता है, उसी प्रकार यहाँ पंजानी का मेला होता है। इसी अवसर पर नई फ़ौज की तैनाती और सरकार के सब पुराने नौकर बदल कर नये तैनात किये जाते। सारांश यह कि प्रत्यक्ष महाराज को छोड़ कर प्रति वर्ष सब कुछ बदल दिया जाता था। इस शासन-पद्धति को ध्यान में रखना चाहिए, क्योंकि सरदारों की सम्मति से शासन चलाने की यह प्रथा पूर्व देशों में से इसी एक देश में मिलती है।

सन् १७७१ में पृथुनारायण की मृत्यु हुई। तब उसका लड़का रणबहादुर केवल एक वर्ष का शिशु था। उसको लोगों ने गद्दी पर बैठा कर उसके चाचा को उसका संरक्षक तैनात किया। इस चाचा के मन में राज्य हड़पने की इच्छा पैदा हुई। इसलिए इसने रणबहादुर को अनेक बुरी बुरी बातें सिखाईं। इस समय गोरखों की फ़ौजें काश्मीर, भूटान, सिकम और तिब्बत इत्यादि देशों को जीतने में लगी थीं। इन लोगों ने लासा का पवित्र देवालय लूट लिया। इस बात पर नाराज़ होकर चीन के बादशाह ने ७० हज़ार फ़ौज नैपाल पर भेजी, उस समय घबरा कर गोरखों ने अंग्रेज़ों से मदद माँगी। लेकिन उस समय गोरखों और अंग्रेज़ों में व्यापारिक प्रतिस्पर्धा चल रही थी, इसलिए अंग्रेज़ों ने उन्हें कोई मदद न दी। चीन की फ़ौज ने गोरखों को हरा दिया और प्रति वर्ष कर देने का वादा नैपाल के राजा से लेकर वह चीनी फ़ौज अपने देश को वापस चली गई। बाद को रणबहादुर ने बड़े होकर अपने चाचा को क़ैद किया और सब राज-काज अपने हाथ में ले लिया (सन १७९५)। यह रणबहादुर बड़ा क्रू

पुरुष था। उसको दामोदर पांडे नाम के एक सरदार की
यता से नैपाल के लोगों ने काशी भेज कर देश निकाले
दण्ड दिया।

काशी में रणबहादुर का लार्ड वेलेज़ली ने बहुत सत्कार
और उसके खर्च के लिए भी बहुत सा धन दिया। उसके
एक चतुर अँग्रेज़ नौकर रख दिया। यही अँग्रेज़ दूत बन
काठमांडू के दरबार में रणबहादुर की ओर से बात-चीत
को गया। इस अँग्रेज़-दूत ने नैपाल-दरबार के सामने यह
पेश की कि जो धन अंग्रेज़-सरकार ने रणबहादुर को दि
वह अंग्रेज़ों को वापस मिले और रणबहादुर को अच्छी पेंशन
जाय। लेकिन इससे कुछ लाभ न हुआ। बाद को रणबह
नैपाल वापस गया। वहाँ उसकी हत्या हो गई।

(आ) युद्ध के कारण—गोरखे लोग अपनी राज्य-
दक्षिण की ओर बढ़ाने लगे। उन्हें इस काम से रो
के लिए वालों और मिण्टो ने बड़े प्रयत्न किये। ले
गोरखों ने एक न मानी। पिछले २० वर्षों में गोरखों ने
मग दो सौ गाँव ब्रिटिश राज्य-सीमा से ले लिये। यह बात
हेस्टिंग्स को विदित हुई तब उसने पहले फौज भेज कर भुट
शहर ले लिया। यह समाचार जब काठमांडू पहुँची तब दरबा
यह विचार होने लगा कि अंग्रेज़ों से मेल करना चाहिए या
करना ठीक है। अंत में लड़ने का निश्चय हुआ और युद्ध की तै
गोरखों ने कर दी। उन्होंने पहले फ़ौज भेज कर भुटवल
अधिकार कर लिया। वहाँ के अंग्रेज़ अफ़सर और पुलिस
१८ लोगों को जान से मार डाला। हेस्टिंग्स ने यह समा

पाते ही युद्ध-घोषणा कर दी। गोरखों का सामना करने के लिए सतलज-नदी की घाटी से कर्नल जिलेस्पी को भुटवल की राह से, वुड को पश्चिम की ओर से शिमला की राह से, प्रधान सेनापति आक्टरलोनी को और जरनल मार्ले को काठमांडू पर भेजा इस प्रकार उसने चारों तरफ़ से नैपाल पर चढ़ाई की।

(इ) पहली लड़ाई (सन् १८१४-१५)—जनरल जिलेस्पी कलुंग क़िले पर हमला करते समय गोली से मारा गया और उसके ७०० सिपाही घायल हुए (३१-१०-१८१४)। दिल्ली से मदद लाकर कर्नल माँबे ने क़िला लेने का प्रयत्न किया। लेकिन उसके साथ के भी ६०० ७०० लोग मारे गये और उसे वापस आना पड़ा। उसकी जगह पर जनरल मार्टिंडेल तैनात हुआ और उसने जयठक स्थान लेने की कोशिश की। लेकिन वह भी सफल न हुआ। जनरल वुड की सेना की भी यही दशा हुई। जनरल मार्ले तो और भी अधिक कमज़ोर हो गया। काठमांडू पर हमला करने के लिए वह जिस समय मौका देख रहा था उसी समय गोरखों ने उसकी सारी फ़ौज काट डाली और उसकी तोपें वग़ैरह सब सामान छीन लिया। उसकी मदद के लिए दूसरी फ़ौज आई। उसका भी कोई उपयोग न हुआ। अन्त में फरवरी सन् १८१६ के दिन वह छिप कर दानापुर को भाग आया। केवल आक्टरलोनी की टुकड़ी को थोड़ी बहुत सफलता मिली। उसने सन् १८१५ की १८ वीं अप्रैल को गोरखों का एक बड़ा मज़बूत क़िला छीन लिया। इस क़िले का नाम मालौन है। तब उनका वीर सेनापति अमरसिंह काठमांडू गया

आठवाँ अध्याय

लार्ड एमहर्स्ट

सन् १८२३-२८

१—ब्रिटिश सत्ता की अवस्था में अंतर
२—पहला बरमी युद्ध
३—जाट लोगों से युद्ध
४—फुटकर बातें

(१) ब्रिटिश सत्ता की अवस्था में अन्तर—सन् १८२३ के जनवरी मास में लार्ड हेस्टिंग्स वापस गया और लार्ड एमहर्स्ट गवर्नर जनरल बना। जिस समय वह आया उस समय यहाँ शान्ति थी। लार्ड हेस्टिंग्स के समय में मराठों का राज्य अँग्रेज़ों को मिल जाने से भारत का बहुत बड़ा भूभाग उनके अधिकार में आगया था। भारत के एक एक करके सभी देशी राज्यों के अंग्रेज़ों के अधिकार में धीरे धीरे चले जाने की बातों पर ध्यान देने से विदित होगा कि सन् १७४४ से ब्रिटिश सत्ता का प्रारम्भ हुआ। पहले तीस वर्ष अर्थात् १७४४-७४ तक ब्रिटिश सत्ता यहाँ के अन्य राज्यों की अपेक्षा अधिक दुर्बल रही। वारेन हेस्टिंग्स के समय में यह ब्रिटिश शक्ति अन्य राज्यों के समान प्रबल होगई। यह समान अवस्था ३० वर्ष तक यानी १७७४-१८०४ तक रही। वेलेजली के समय में यह ब्रिटिश सत्ता सार्वभौम शक्ति बन गई। यह विशेष शक्ति मिलनेवाली थी कि लड़ाइयों का धर्म मच गई और पृथिवी के अन्य राष्ट्रों में प्रधान

पद मिलने में उसे और ५०-५५ वर्ष लग गये (१८०४-५०)। इस पिछले काल में (१) मराठे, राजपूत और मुसलमान राजाओं पर ब्रिटिश सत्ता की सार्वभौमिकता का प्रभाव पूरी तौर से जम गया। (२) बाहर के प्रदेशों में अपना राज्य बढ़ाने की इच्छा होने पर सिंध के अमीर, ब्रह्मदेश के राजा और पंजाब के सिखों, अफ़ग़ानों इत्यादि अनेक सरहद्दी लोगों के साथ अँग्रेज़ों का झगड़ा हुआ। इन झगड़ों में अँग्रेज़ी राज्य की सीमा स्थिर हुई और वह मज़बूत बनाई गई। सारांश यह कि इन ५० वर्षों में राज्य की भीतरी शांति और बाहिरी वृद्धि दोनों ही बराबर जारी रहीं। इस काल के बाद जो युद्ध हुए वे सभी राज्य-सीमा से बाहर हुए। जिस नैपाल-युद्ध का वर्णन पिछले अध्याय में हुआ है वह भी सीमान्त युद्ध में सम्मिलित है।

(२) पहला बरमी युद्ध, (अ) पहले युद्ध का हाल—बंगाल के पूर्व में दक्षिण से उत्तर तक एक प्रायद्वीप फैला हुआ है इस प्रायद्वीप का नाम ब्रह्मदेश या बरमा है। इस देश के बीच में होकर इरावदी-नदी बहती है। इस नदी के आस-पास का प्रदेश बड़ा ही उपजाऊ है बरमा का उत्तरी भूभाग 'अपर बरमा' और दक्षिणी भूभाग 'लोअर बरमा' के नाम से प्रसिद्ध है वहां के निवासी हिन्दू-चीनी मिश्रित गौरवर्ण के हैं वे बौद्ध धर्म को मानते हैं पहले वे भी वैदिक धर्म का ही पालन करते थे उनमें जाति भेद बाल विवाह परदा इत्यादि का प्रचार नहीं है व्यवहार और बाज़ार का सब काम स्त्रियां ही करती हैं उनका रहन-सहन राजपूतों के समान है उनमें धार्मिक प्रेम अधिक है प्रत्येक गांव में कम से कम एक बौद्ध मंदिर और उसी के साथ एक विद्या मठ अवश्य ही मिलेगा

बरमा में पहले अनेक छोटे छोटे राज्य थे उत्तर में आवा

आये हुए आदमियों को वापस करना स्वीकार कर लिया था। लेकिन लार्ड वेलेज़्ली ने इन भागकर आये हुए आराकानियों को वापस करने से इनकार कर दिया और बरमी राजा के साथ संधि करने के लिए अपने दूत भेजे। राजा अपनी बात पर अड़ा रहा और अपने आदमी वापस माँगे। सन् १८१२ में उसके सेनापति महाबंधुल ने आसाम, मणिपुर इत्यादि राज्य जीत लिए। इससे बरमा-राज्य की सीमा अब अंग्रेज़ी राज्य-सीमा से आमिला। शाहपुर नामक एक छोटे से द्वीप को अपना समझ कर बरमी लोगों ने वहाँ से अंग्रेज़ी फ़ौजों को निकाल बाहर कर उस पर अपना अधिकार कर लिया। लेकिन अंग्रेज़ों ने फ़ौज भेज कर उसे फिर ले लिया और आवा के राजा को एक पत्र लिखा। इस पर राजा ने अंग्रेज़ों के साथ युद्ध करना निश्चित कर महाबंधुल को सेना देकर अंग्रेज़ों के विरुद्ध भेजा।

(ङ) लड़ाई और संधि (सन् १८२४-२६)—मार्च सन् १८२४ में बरमा पर अंग्रेज़ी फ़ौज ने चढ़ाई की। जल-मार्ग होकर कुछ फ़ौज सर आर्चिबाल्ड कैम्पबेल के साथ रंगून पहुँची। बंगाल की सीमा पर कैप्टन नार्टन के साथ कुछ फ़ौज थी। उस पर महाबंधुल ने हमला करके उसे हरा दिया। केवल मद्रास की फ़ौज को इरावदी-नदी के युद्ध में विजय मिली। रंगून शहर बरमी लोगों ने ख़ाली कर दिया था। उसे अपने अधिकार में कर और वहाँ छावनी बना अंग्रेज़ ठहर गये। उनको हराने के लिए राजा ने महाबंधुल को आसाम से बुलाया। और जिस समय अंग्रेज़ों का जहाज़ी बेड़ा उत्तर की ओर आगे बढ़ रहा था, महाबंधुल ने डोनोबू में मोर्चाबंदी करके अंग्रेज़ों का सामना किया। सन्

डेविड आक्टरलोनी उस समय उस प्रान्त में अँग्रेज़ों की ओर से एजेंट था। भरतपुर के दंगे में भारत भर में गड़बड़ फैलेगी, इस भय से अपना रोब जमाने के लिये उसने बलवंतसिंह की ओर से वहाँ फ़ौज भेजी। लेकिन गवर्नर जनरल ने भरतपुर के मामले में हाथ डालना ठीक न समझ फ़ौज वापस बुलाने का हुक्म भेज दिया। यह अपमान आक्टरलोनी के लिए असह्य हुआ और उसने अपनी नौकरी से इस्तीफ़ा दे दिया। उसी दुख से दो मास बाद उसकी मृत्यु हो गई। बाद को दुर्जनसाल का झगड़ा अधिक बढ़ते देख गवर्नर जनरल ने अपनी भूल मान कर भरतपुर पर कार्म्बरमियर के साथ फ़ौज भेजी। बहुत समय तक तो किले की चिकनी दीवारों पर तोपों का कुछ असर ही न हुआ। अन्त में बारूद भरकर दीवार उड़ाने से दीवार फट गई। इसी राह से अँग्रेज़ लोग किले में घुसे। उन्होंने दुर्जनसाल को क़ैद किया और बलवंतसिंह को गद्दी पर बिठाकर अपने हाथ में शासन का काम ले लिया (सन् १८२६)। भरतपुर के इस युद्ध से अँग्रेज़ों का सारे देश में प्रताप जम गया।

(४) कुटकर—मद्रास के लोकप्रिय गवर्नर सर टामस मौर ने इस समय मद्रास आहाते में मालगुज़ारी वसूल करने की रैय्यतवारी पद्धति का प्रचार किया। ज़मींदार का बीच में न रख सारी धरती नाप कर उसे किसानों के नाम चढ़ा देना और उनसे स्वयं सरकार का मालगुज़ारी वसूल करना ही रैय्यतवारी प्रथा है। बम्बई आहाते में एलफ़िन्स्टन ने मालगुज़ारी की जो प्रथा जारी की थी उस वहाँ वैसा ही चलने दिया। क्योंकि इस आहाते में मालगुज़ारी वसूल करने की जो पद्ध

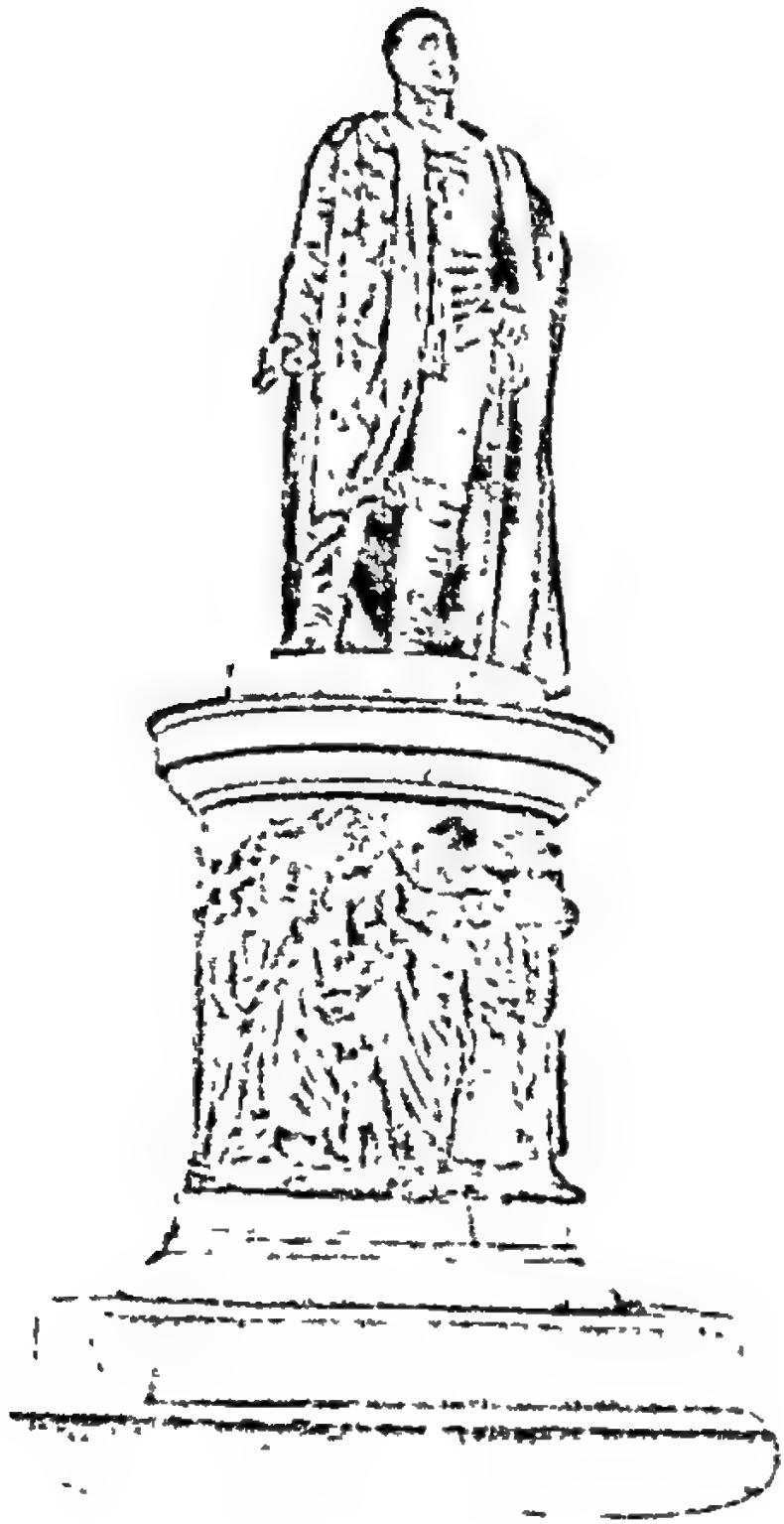

लार्ड विलियम बेंटिक

और कार्य-दक्ष था। कृष्णराज जब बड़ा और काम सँभालने के योग्य हुआ तब सन् १८११ में उसने अपना काम अपने हाथों में ले लिया। इसके बाद ही पूर्णय्या की बहुत शीघ्र मृत्यु हो गई। कृष्णराज बुरे स्वभाव का पुरुष निकला। उसके हाथ से शासन का काम ठीक ठीक नहीं होता था। इसलिए उसको वार्षिक साढ़े तीन लाख रुपये और राज्य की आय का पाँचवाँ भाग देने का निश्चय कर मैसूर का शासन रेज़ीडेंट-द्वारा होने की आज्ञा गवर्नर-जनरल ने सन् १८३१ में दी। यह व्यवस्था अनेक वर्षों तक वैसी ही चलती रही। अन्त में सन् १८८१ में मैसूर का राजकाज वहाँ के राजा को वापस सौंप दिया गया। इसी तरह अपने राज्य में सुधार करने की चेतावनी निज़ाम को भी दी गई।

(३) राज्यों की ज़ब्ती—(अ) कछार (सन् १८३०)—आसाम और बरमा की सीमा पर कछार का प्रान्त है। जिस समय बरमा के साथ अँग्रेज़ों का युद्ध चल रहा था, यह प्रान्त भी अँग्रेज़ों के आश्रय में था। यहाँ के राजा गोविन्दचंद्र की मृत्यु सन् १८३० में हुई। उसके राज्य का कोई हक़दार न था। इससे उसका राज्य अंग्रेज़ी राज्य में मिला लिया गया। (आ) कुर्ग (१८३४)—मैसूर और मालाबार के बीच में कुर्ग या कोडगा नामक एक पहाड़ी प्रदेश है। उसका कुछ भूभाग बहुत उपजाऊ भी है। वहाँ हाथी तथा अन्य जंगली जानवर बहुत रहते हैं। यहाँ के निवासी वीर हैं। इनमें एक भाग आर्य और ३ भाग अनार्य हैं। सोलहवीं सदी में यह प्रान्त विजय-नगर-राज्य का एक भाग था। उस समय एक साधु इकरी प्रान्त से निकलकर कुर्ग में धर्म प्रचार के बहाने से आया और उसने यहाँ अपने

करके खेती इत्यादि के काम दिये गये। (३) विद्यादान—भारत के सार्वभौम बनने पर अँग्रेज़ों के सामने दो बड़े कठिन प्रश्न पेश थे पहला यह कि भारत की प्रजा को विद्या पढ़ाकर उन पर शासन करना सुलभ है कि उनको अज्ञानी बनाये रखकर शासन ठीक ठीक चलाया जा सकता है। इस प्रश्न पर बहुत दिनों तक विचार होता रहा। अन्त में बेंटिक ने भारत की प्रजा को शिक्षित बनाना निश्चित किया। इस निश्चय के पक्ष में विलायत के लोग भी थे। इसलिए बेंटिक को इस प्रश्न के सुलझाने में देर न लगी। दूसरा प्रश्न यह था कि जिस शिक्षा का प्रचार भारत में किया जाय उसकी प्रणाली क्या होनी चाहिए। यूरोपीय प्रणाली या भारत की प्राचीन शिक्षा-प्रणाली। इस समय यूरोप के कितने ही विद्वानों ने संस्कृत-साहित्य का अच्छा अध्ययन कर लिया था। अतः उन्हें भारत के ज्ञान-भांडार का अच्छा पता था। वे भारतीय ज्ञान को बड़े आदर की दृष्टि से देखते थे। उन विद्वानों में एक का नाम होरेस विलियम था। यह उनका अगुआ था। उसने कहा कि भारत के लोगों को उनकी प्राचीन विद्या की ही शिक्षा दी जानी चाहिए। उनको पाश्चात्य प्रणाली से पाश्चात्य विद्या का ज्ञान देना व्यर्थ है। हिन्दुओं के प्राचीन संस्कृत-ग्रंथ किसी तरह कम योग्यता के नहीं हैं। उनमें नवीन विचारों का समावेश है। किन्तु दूसरा पक्ष इस बात के विरुद्ध था। इस पक्ष के लोग कहते थे कि भारत में अँग्रेज़ी भाषा और पाश्चात्य ज्ञान की शिक्षा दी जाय। इस पक्ष का प्रभाव अधिक था। [illegible] चार्ल्स ट्रिवेलियन, डाक्टर इफ, और मैकाले इत्यादि इस पक्ष के अगुआ थे। उनका कहना था कि पाश्चात्य लोगों के पाश्चात्य शोध और उनके स्वतन्त्र विचार बड़े महत्त्व के हैं। इन

(५) सुधार और योग्यता—बेंटिङ्क ने (१) सरकारी कर्मचारियों का वेतन और उनकी नियुक्ति का एक निश्चित नियम बना दिया और फौज के कर्मचारियों को जो भत्ता मिलता था उसे बन्द कर दिया। (२) अफीम का प्रचार रोकने के लिए बेचनेवालों को परवाने देने का नियम बनाया। (३) आगरा और अवध प्रान्त का फिर से नया बन्दोबस्त कर लगान का निश्चय किया।

योग्यता—राज्य-शासन की व्यवस्था, प्रजा-हित, और विदेशी राष्ट्रों की नीति इत्यादि में बेंटिङ्क की कार्यवाही ने क्रांति उत्पन्न कर दी। रणजीतसिंह और सिंध के अमीरों के साथ इसने संधियाँ कीं। इनकी चर्चा आगे के अध्याय में की जायगी। कलकत्ते में इस गवर्नर जनरल की एक स्मारक मूर्त्ति है, उसके नीचे लार्ड मेकाले का लिखा एक लेख है। उसके पढ़ने से इसकी योग्यता का पता लगता है। इसमें लिखा है—"लार्ड विलियम बेंटिङ्क ने सात वर्ष तक बड़ी चतुरता से, भलाई और उदारता के साथ भारत का शासन चलाया। इसकी स्मृति के लिए यह स्मारक खड़ा किया गया है। इतना उच्च पद प्राप्त होने पर भी उसने अपने सादे रहन सहन और नम्रता का त्याग कभी न किया। उसने भारतीय लोगों का इस कल्पना को अपने आचरण से दूर कर दिया कि राजा मनमाना व्यवहार कर सकता है उसकी जगह उसने पाश्चात्य स्वातंत्र्य का चमत्कार दिखा दिया प्रजा का कल्याण करना ही शासन करने का उद्देश है इस तत्त्व को उसने सदैव अपने ध्यान में रक्खा उसने दुष्ट प्रथाओं को बन्द किया। निन्द्य मेडामेट तोड़ दिये। और प्रजा की बुद्धि तथा

में लुधियाने आया और अंग्रेज़ों की शरण में रहने लगा। बाद को कुछ दिनों में उसका भाई शाहशुजा भी हारकर अफ़ग़ानिस्तान से भारत में अंग्रेज़ों के पास आ गया। फ़तहख़ाँ चतुर और वीर था। उसने अफ़ग़ानिस्तान की बड़ी उन्नति की। फ़तहख़ाँ सन् १८२८ में मारा गया और उसके भाई दोस्त महम्मदख़ाँ को अफ़ग़ानिस्तान का राज्य मिला। इसके समय में अफ़ग़ानिस्तान शान्त हुआ। ईरान के शाह और रूस के ज़ार की निगाह इस देश पर थी। पेशावर इत्यादि पूर्वी अफ़ग़ानिस्तान पर शाहशुजा का ही अधिकार था। इसी प्रकार पश्चिमी अफ़ग़ानिस्तान पर भी अधिकार पाने के लिए रणजीतसिंह को कोहनूर हीरा देकर और उसकी मदद लेकर शाहशुजा ने दोस्त महम्मद पर चढ़ाई की। परन्तु उसकी हार हुई जिस समय वह वापस आ रहा था, रणजीतसिंह ने उसका पेशावर प्रान्त भी छीन लिया। अतः निराधार होकर वह फिर सन् १८३० में अंग्रेज़ों की शरण में लुधियाना पहुँचा और दोस्त महम्मद अफ़ग़ानिस्तान की गद्दी पर कायम रहा।

पेशावर प्रान्त रणजीतसिंह के अधिकार में था। उसे वापस लेने के लिए दोस्त महम्मदख़ाँ ने रूस और अंग्रेज़ों से मदद माँगी। रणजीतसिंह से झगड़ा करना ठीक न समझ अंग्रेज़ों ने कैप्टेन एलेक्ज़ेंडर बर्न्स को बातचीत करने के लिए दोस्त महम्मद के पास भेजा। उस समय पेशावर प्रान्त के बारे में उखाड़ पछाड़ होने पर दोस्त महम्मद ने कहा कि जो कोई मुझे रणजीतसिंह से मेरा पेशावर प्रान्त दिलावेगा उसी के पक्ष में मैं रहूँगा। अन्त में रूस ने उसे पेशावर प्रान्त दिलाने का वचन दिया। तब तो दोस्त महम्मद [illegible] रूस के पक्ष में हो गया। सन्

अब्दुल खाँ

लार्ड आक्लैंड का एक काम ध्यान में रखने के योग्य है। हिन्दुओं के उत्सवों में अंग्रेज़ शुरू से ही शामिल होते थे, परन्तु आक्लैंड के समय में यह निश्चित हुआ कि हिन्दुओं के मन्दिरों तथा उत्सवों में अंग्रेज़ लोग किसी प्रकार का सम्बन्ध न रक्खें।

सन् १८४२ के फ़रवरी मास में जनरल पोलक चला। कंधार और जलालाबाद में अंग्रेज़ लोग किसी तरह अपनी रक्षा कर रहे थे। पोलक के आ मिलने पर काबुल में क़ैद किये गये स्त्री-बच्चों को छुड़ाने के लिए दोनों अंग्रेज़ी फ़ौजें काबुल की ओर बढ़ीं। रास्ते में जनरल पोलक ने तेज़ीन नामक स्थान में अकबरख़ाँ को हराया। इधर नाट ने भी ग़ज़नी की दीवार तोड़कर काबुल में प्रवेश किया। १७ सितम्बर को दोनों फ़ौजें काबुल में एक दूसरे से मिल गईं। इससे पहले ही जिस शाहशुजा के लिए इतना रक्तपात और धनव्यय किया गया था वह बलवाइयों के हाथ से मारा जा चुका था। लेकिन क़ैद किये हुए अंग्रेज़ स्त्री-बच्चों की रक्षा अकबरख़ाँ ने बड़ी अच्छी तरह से की थी। इस क़ैद का हाल जनरल सेल की स्त्री ने बड़ी चित्ताकर्षक भाषा में किया है। केवल जनरल मूलकिस्टन का मृत्यु हो चुका थी। जिस समय ये स्त्रियाँ और बच्चे क़ैद से छूट कर अपनी फ़ौजों से मिले उस समय सभी का बड़ा आनन्द हुआ। लोगों में भय [illegible]

स की विशेष बातें लिख भेजीं। गवर्नर जनरल एलिनबरो इन बातों पर ध्यान न देकर सिन्ध-प्रान्त का प्रबन्ध करने लिए सर चार्ल्स नेपियर को दीवानी और फ़ौजदारी के क देकर वहाँ भेजा (३९-१८४२)। तैनाती फ़ौज के ख़र्च के बर अमीरों से अंग्रेज़ों को ३ लाख रुपये कर के रूप में मिलते । इसके बदले में नेपियर ने उनका २० लाख का राज्य छीन लिया। इसके अलावा उनको कहा कि वे अपने नाम के सिक्के चलावें, अंग्रेज़ी जहाज़ों को ईंधन दें। लेकिन ये बातें अमीरों नापसंद की।

युद्ध (सन् १८४३)—कौट्रम के साथ अभी अमीरों की बातचीत चल ही रही थी कि नेपियर ने उनका मज़बूत क़िला हैदराबाद जीत लिया। इससे अमीरों का धैर्य छूट गया और उन्होंने अंग्रेज़ों की सभी माँगें स्वीकार कर लीं। (१-१-१८४३) लेकिन बलूची लोगों को अमीरों की यह बात पसन्द न आई। उन्होंने नाराज़ होकर रेज़ीडेंसी पर अचानक हमला कर दिया तब कौट्रम वहाँ से जहाज़ पर बैठकर भाग निकला और नेपियर से जा मिला। १७ फरवरी को मियानी के बड़ा घमासान लड़ाई हुई इस लड़ाई में बलूची लोगों की हार हुई नेपियर ने हैदराबाद पर अधिकार कर लिया और वहाँ का ख़ज़ाना लूट लिया। ४ मार्च को हैदराबाद के पास दुबा में फिर अमीरों की हार हुई। इसके बाद अंग्रेज़ों ने मीरपुर ख अलावा अन्य सभी राज्यों को अपने राज्य में मिला लिया अंग्रेज़ों सार्वभौम सत्ता के स्थापन होने पर भी सिन्ध के राज्य क बड़ी बड़ी फौजों के रहने अंग्रेज़ निश्चिंत नहीं रह सकते थे। सिन्ध के अमीर पंजाब के सिक्ख इत्यादि से युद्ध करने का अव

भारत की जनता में बड़ा क्षोभ हुआ और सन् १८५७ का बलवा हुआ, जिसमें असंख्य प्राणहानि हुई। इस ग़दर की जड़ लार्ड डलहौसी के शासन में पड़ी। डलहौसी बचपन से ही बड़ा चतुर था और उसकी प्रसिद्धि भी हो चुकी थी। जिस समय वह केवल २५ वर्ष का था, उसका प्रवेश पार्लमेंट में हुआ। तत्कालीन प्रधान मंत्री पील उससे बहुत प्रसन्न था। उसने डलहौसी को व्यापार-विभाग का प्रधान पदाधिकारी बनाया। बाद को जब रसेल प्रधान मंत्री हुआ तब उसने उसे भारत का गवर्नर जनरल बना कर यहाँ भेजा। इस समय वह ३५ वर्ष का था। लेकिन उसका शरीर बहुत कमज़ोर था, और यहाँ का काम बड़ी मेहनत से करने के बाद जब वह विलायत लौटा तब २-३ वर्ष से अधिक न ज़िन्दा रह पाया। इसके शासन के तीन विभाग हैं। वे यों हैं—(१) सिक्ख और बरमी युद्ध (२) प्रजा-हित के काम, (३) राज्यों की ज़ब्ती।

(३) दूसरा सिक्ख-युद्ध (सन् १८४८-४९)—कारण—मुलतान-प्रान्त पंजाब का एक भाग था। वहाँ का सूबेदार सावनमल जब सन् १८४४ में मरा तब उसका लड़का मूलराज सूबेदारी का काम करने लगा। इस काम के लिए जो नज़राना लाहोर-दरबार को उसे देना चाहिए था वह उसने नहीं दिया था। मूलराज पराक्रमी था उसका निजी व्यापार भी बहुत बढ़ा-चढ़ा था, इसलिए वह एक प्रकार से स्वतंत्र राजा हो था। पहला सिक्ख-युद्ध जब बंद हुआ तब लारेंस कामकाज देखने लगा। उसने मूलराज से नज़राना माँगा और पिछला हिसाब भी पेश करने के लिए कहा। मूलराज ख़ुद लाहोर गया और उपर्युक्त माँग स्वीकार करने में उसने अपना मानहानि समझ सूबेदारी के

फ़ौज थका हुआ होने के कारण उस पर हमला करने में असमर्थ थी, तो भी लार्ड गफ़ ने उन पर हमला करने का हुक्म दे दिया। २४वीं अंग्रेज़ी पलटन आगे गई। शत्रु ने उसको बिलकुल काट डाला। चार तोपों को सिक्खों ने छीन लिया। इस लड़ाई में ८९ अफ़सर और ढाई हज़ार सिपाही मरे। रात हो जाने से लड़ाई रुक गई। (१४ जनवरी सन् १८४९)। फिर शाम ही सब सिक्ख-सरदार एकत्र हुए। अफ़गानों ने भी उन्हें मदद भेजी। लेकिन मुलतान का क़िला लेकर पंजाब की फ़ौज भी सेनापति से आ मिली। इससे अंग्रेज़ों का बल बढ़ गया और गुजरात की लड़ाई में अंग्रेज़ी तोपों की मार न सहकर सिक्ख-सेना भाग खड़ी हुई। पेशावर अंग्रेज़ों के अधीन हुआ और लड़ाई बन्द हुई। (ता० २१ फ़रवरी १८४९)।

युद्ध का परिणाम, पंजाब शामिल—बड़ी लिखा-पढ़ी करने के बाद अन्त में गवर्नर जनरल ने विधिपूर्वक पंजाब का राज्य अंग्रेज़ी राज में मिला लिया और दिलीपसिंह को ५० लाख रुपये सालाना पेन्शन दे दी। वह बाद को ईसाई धर्म स्वीकार कर इंग्लैंड चला गया और वहीं अमीर बनकर रहने लगा। अंग्रेज़ों ने सिक्खों की तोपें ले लीं और उनका हथियार रख लिये। कोहनूर हीरा दिलीपसिंह ने महारानी विक्टोरिया को भेंट किया। इस प्रकार इंग्लैंड और पंजाब की सीमा का प्रश्न तय हुआ। डलहौज़ी ने पंजाब को अपने अधिकार में कर लिया और वहाँ बड़े योग्य अफ़सरों को शासन का काम देकर उनके द्वारा पंजाब का शासन शुरू किया।

१ दूसरा पंजाबी युद्ध सन् १८४८—४९

के समान था। उसने अंग्रेज़-दूत से भेंट भी न की। तब लाम्बर्ट ने सभी यूरोपीय व्यापारियों को अपने जहाज़ पर बुला लिया और बरमी राजा का जो जहाज़ खड़ा था उसे उसने पकड़ लिया। उसी समय युद्ध शुरू हुआ। गवर्नर जनरल को यह बात विदित होते ही उसने नई फ़ौज बरमा को भेजी और आवा के राजा के पास निम्न लिखित माँगें लिख भेजीं—(१) रंगून के अधिकारी निकाल दिये जायँ और (२) राजा दस लाख रुपया दंड दे। जवाब देने के लिए ५ सप्ताह का समय दिया गया। गवर्नर जनरल ने जनरल गाडविन को मुख्य सेनापति बनाया। इरावदी-नदी में संधि का पत्र ले जाते समय उस पर बरमी लोगों ने तोपें छोड़ीं।

अप्रेल सन् १८५२ में मार्तावान शहर पर अंग्रेज़ों ने धावा किया और उस पर अपना अधिकार कर लिया। १२ वीं अप्रेल को रंगून पर अंग्रेज़ों ने गोलाबारी शुरू की। वहाँ का शिवा किले के समान एक बड़ा मन्दिर है उसपर हमला करके उन्होंने उसे छीन लिया। १४ वीं को रंगून पर भी उनका अधिकार होगया। बाद को शीघ्र ही बेसिन बंदर के लेने पर पेगू प्रान्त के समुद्र तट पर अंग्रेज़ों का अधिकार हो गया। उसे गवर्नर जनरल ने ब्रिटिश राज्य में मिला लिया। थोड़े दिनों में अंग्रेज़ों ने प्रोम शहर भी ले लिया। डलहौसी स्वयं बरमा गया और सन् [illegible] के नवम्बर तक सभी स्थानों पर अधिकार करके [illegible] बरमा उसने ब्रिटिश [illegible] पत्र उसने आवा के राजा [illegible] का सभी काम समाप्त कर दिया।

[illegible]

के जहाज़ से उतरने की सुविधा बम्बई में की। (३) उसने भारत में रेल-पथ जारी करके व्यापार और फ़ौज के आने-जाने की सुविधा का प्रबन्ध किया। पहला रेल-पथ कलकत्ते के पास और बम्बई से थाना तक तैयार हुआ। सन १८५२ में रेल-गाड़ी चल निकली। यह रेल-पथ बढ़ते बढ़ते अब १९२० में ३८ हज़ार मील लम्बा होकर सारे देश में फैल गया है। पहले केवल नदियों में नावों-द्वारा माल ढोया जाता था। यह अब बंद हो गया है और रेल-पथ-द्वारा व्यापार बढ़ गया है। (४) भारत में तारघरों का काम भी डलहौसी ने शुरू किया। इससे ख़बरें एक कोने से दूसरे कोने को बड़ी जल्दी भेजने का प्रबन्ध हुआ। (५) हिन्दुस्तान से इंग्लैंड का व्यापार बढ़ाने का उसने उद्योग किया (६) बंगाल के पश्चिमोत्तर में संथाल नाम के लोग रहते हैं। वे लगभग तीस हज़ार लोग अपनी शिकायतें पेश करने के लिए कलकत्ते को चले और राह में उन्होंने दंगा किया। गवर्नर जनरल ने संथाल लोगों पर फ़ौज भेज कर उनके झण्डों का प्रबंध किया। (७) इस देश के राज्यों में अनेक प्रकार के कठिन और क्रूर दण्ड-विधान थे, उन्हें उसने बंद किया। (८) मार्ग, नहरें इत्यादि प्रजा के उद्योग के काम करने के लिए पब्लिक वर्क्स नाम का विभाग खोला। इस विभाग ने अनेक लाभ के काम किये। (९) पहले डाक-विभाग की व्यवस्था ठीक नहीं थी। इससे लोगों को बड़ा कष्ट होता था। डलहौसी ने डाक-महसूल आध आना कर दिया और आध आन में चाहे जहां चिट्ठी भेजने की सुविधा हो गई। इससे डाक-विभाग का काम बहुत बढ़ गया। (१०) लार्ड बाटिक के शासन काल में केवल अंग्रेज़ी पढ़ाने के स्कूल खुले थे, लेकिन डलहौसी ने शिक्षा-विभाग की अलग स्थापना करके लोगों को शिक्षित बनाने का प्रबन्ध किया। (११) सिविल सर्विस की परीक्षा पहले

लिया। ये दत्तक विधि-विधान से हुए थे। यह बात भी रेज़ीडेंट ने गवर्नर जनरल से प्रकट की। किसी भी व्यक्ति के मरने पर उसका कोई उत्तराधिकारी न होने पर उसकी सम्पत्ति सरकार ले लेती है, इस नियम के अनुसार डलहौसी ने कोर्ट आव डायरेक्टर्स को यह लिख भेजा कि "संधियों में दिये गये" वारिस और 'अनुगामी' शब्दों का अर्थ केवल औरस संतति माना जाय और दत्तक विधान को मंज़ूर करना या न करना सरकार की इच्छा पर रक्खा जाय। डायरेक्टरों ने डलहौसी की इस व्यवस्था को स्वीकार कर लिया। इसलिए औरस पुत्र के न होने के कारण सतारे का राज्य अंग्रेज़ी अमलदारी में मिला लेने का हुक्म हुआ। इस हुक्म से सतारा का राज्य समाप्त हो गया। (आ) पेशवा की पेंशन बन्द (सन् १८५३)—बाजीराव पेशवा १४-१-१८५१ को ब्रह्मावर्त में मर गया। मृत्यु के समय उसने अपने गोत्र के धोंडो पंत उर्फ़ नाना साहब को गोद लिया। इस नाना साहब ने पेशवा की पेंशन पाने की प्रार्थना अंग्रेज़-सरकार से की। गवर्नर जनरल ने उसे अस्वीकार करते हुए कहा कि वह पेंशन सिर्फ़ बाजीराव की ज़िन्दगी भर के लिए थी। और उनकी २७ लाख की सम्पत्ति नाना साहब के लिए काफ़ी है। इस उत्तर से नाना साहब बहुत चिढ़ गया और बाद को होने वाले दलव में वह बलवाइयों का सरदार बन गया। (इ) झाँसी १८५३—झाँसी-प्रान्त पहले बाजीराव को बुन्देलखण्ड के राजा छत्रसाल ने दिया था। उस राज्य का प्रबन्धकर्त्ता पेशवा की ओर से उसका सूबेदार रघुनाथ हरि नेवालकर सन् १७९६ में मर गया तब उसका भाई शिवराम भाऊ सूबेदार बना। शिवराम भाऊ

का राज्य भी अंग्रेज़ी अमलदारी में मिला लिया गया। रानी लक्ष्मीबाई भी सन् १८५७ के ग़दर में शामिल हुई।

(२) लावारसी राज्य—(अ) आर्काट, (सन् १८५३)—आर्काट के नवाब के द्वारा ही अंग्रेज़ों का प्रथम प्रवेश भारत में हुआ था। लार्ड वेलेज़ली के समय में ये नवाब केवल नाम-मात्र के रह गये और उन्हें जागीर के रूप में कुछ पेंशन दी जाने लगी। वहाँ का नवाब सन् १८५३ में मर गया। उसके कोई लड़का न था। इसलिए मदरास-सरकार ने सिफ़ारिश की कि नवाब की पदवी छीन कर उसकी जागीर ज़ब्त की जाय। नवाब के कुटुम्ब के निर्वाह-मात्र के लिए वेतन निश्चित कर दिया जाय। डलहौसी ने यह सिफ़ारिश मानकर नवाब की जागीर और नवाब की पदवी ज़ब्त कर ली। (आ) तंजोर (सन् १८५५)—सन् १७९९ में तंजोर का राज्य ज़ब्त करके राजा के कुटुम्ब को एक अच्छी पेंशन दी गई थी और उसे राजा की पदवी भी रखने की आज्ञा मिली थी। सन् १८५५ में राजा शिवाजी निस्संतान मर गया। डलहौसी ने उसकी तीन लाख की जागीर ज़ब्त कर ली। (इ) सम्भलपुर—इस छोटे से राज्य का राजा भी निस्संतान मर गया इसलिए उसका राज्य भी लावारसी के रूप में ज़ब्त हुआ। (इ) नागपुर, (सन् १८५३)—जिन लम्बे-चौड़े राज्यों को डलहौसी ने ज़ब्त किया उनमें से एक नागपुर का भी राज्य है। इस राज्य का क्षेत्रफल ७५,००० वर्ग मील था, इसकी जन-संख्या ३६ लाख से भी अधिक थी। सिंधिया, होलकर इत्यादि राज्यों की भाँति यह राज्य भी अंग्रेज़ों के आने से पूर्व स्थापित हुआ था। नागपुर बरार प्रान्त का द्वार था। सन्

बारहवाँ अध्याय

सन् सत्तावन का ग़दर

मई १८५७—नवम्बर १८५८

१—लार्ड केनिङ्ग
२—ग़दर के पूर्व-कारण
३—तात्कालिक कारण
४—ग़दर का हाल
५—राज्य-शासन का नया क़ानून
६—रानी का प्रतिज्ञापत्र
७—केनिङ्ग की योग्यता

(१) लार्ड केनिङ्ग (सन् १८५६-६२)—लार्ड डलहौसी के बाद लार्ड केनिङ्ग गवर्नर जनरल बनाया गया। केनिङ्ग शान्त और गम्भीर स्वभाव का पुरुष था। वह अपने काम में मेहनत भी बहुत करता था। डलहौसी के शासन-काल में अनेक नवीन बातें जारी की गई थीं, उनके जारी रखने और उन्नति करने के काम लार्ड केनिङ्ग के सामने थे। इस समय किसी नवीन सुधार की आवश्यकता न थी। अतः इस काम को करने में केनिङ्ग सर्वथा योग्य था। जिस समय वह भारत में आया उस समय भारत में जहाँ तहाँ शान्ति दीख पड़ती थी। लेकिन डलहौसी की प्रखर और उग्र नीति से अनेक घटनाएँ हो गई थीं। लोगों में इनके कारण विचित्र भाव उत्पन्न हो चुका था, तथा और भी ऐसी बातें थीं जिनसे देश में असंतोष बढ़ रहा था। उसका फल यह हुआ कि सन् [illegible] में एक बड़ा भयङ्कर ग़दर हो गया। इस ग़दर में अनेक [illegible] काम हुए। इनसे भारत में एक बड़ा [illegible]

कर भगा दिया। इसके बाद अंग्रेज़ों ने झाँसी पर हमला किया। इस हमले में रानी की हार हुई और वह वहाँ से निकल भागी। बाद को तात्याटोपे, रानी, बाँदा का नवाब और नाना साहब का भतीजा राव रावसाहब इत्यादि ने मिल कर ग्वालियर पर हमला किया। इसमें जयाजीराव सिंधिया की हार हुई और वह आगरे को भाग गया (१ जून सन् १८५८)। इसके बाद ग्वालियर पर बलवाइयों का अधिकार हुआ। १६ जून को रोज़ ने ग्वालियर पर हमला किया। इसमें रानी लक्ष्मीबाई के गोली लगी और वह मर गई। सन् १८५९ के अप्रैल मास में तात्या टोपे को अंग्रेज़ों ने पकड़ लिया। इस तरह इस भाग में बलवे का अन्त हुआ। पंजाब-प्रान्त का प्रबन्ध सर जान लारेंस ने बड़ी शान्ति के साथ सिक्ख लोगों की सहायता से किया। सिक्खों ने भी अपने पहले अपमान को भूलकर अंग्रेज़ों का साथ दिया। इसी से दिल्ली पर अंग्रेज़ों का अधिकार हो सका। इसी प्रकार बम्बई और मद्रास की फौजों ने भी बड़ी वफ़ादारी दिखाई। अन्य राजे-रजवाड़ों ने तथा निज़ाम ने भी इस बलवे को शान्त करने में अंग्रेज़ों की पूरी-पूरी सहायता की। जनरल हेवलाक सर कालिन कैम्पबेल और सर ह्यू रोज़ इस बलवे को शान्त करनेवालों में अगुआ थे। सन् १[illegible] के अन्त में [illegible] शान्ति हो गई थी।

(४) भारत के शासन का नया कानून। सन् [illegible]८। भारत के इस भयंकर गदर के कारण इंग्लैंड के लोगों का ध्यान इधर फिरा। गदर रोकने के लिए फौज तो तुरन्त भेज ही दी गई। लेकिन लोगों को शान्त रखने के लिए भी बहुत से

[illegible]

[illegible]

स्थान नहीं दिया। इसके बाद अन्त में २०—२—१९१९ को हबी
बुल्ला की हत्या की गई और उसका लड़का अमानुल्ला गद्दी प
बैठा। उसके साथ उसी समय अंग्रेज़ों का एक छोटा सा युद्ध हुआ
लेकिन शीघ्र ही यह युद्ध बंद हो गया और अफ़ग़ानिस्तान
प्रश्न का रूप पहले की अपेक्षा बिलकुल ही बदल गया। यूरोपी
युद्ध ने पृथिवी की राजनीति को एक दम बदल दिया। रूस
राज्य-क्रान्ति हो गई और वहाँ सोवियट प्रजातंत्र की स्थापन
हो जाने से पहले की रूसी-शक्ति का भय भारत की साम्राज्
सीमा पर नहीं रह गया। दूसरी ओर तुर्की का ख़लीफ़ा
पदच्युत किया गया, जिससे मुस्लिम राष्ट्रों में एक नये परिवर्त
की लहर आ गई।

(४) आगे के चार वायसराय

(१) लार्ड-रिपन (सन् १८८० ८४)—यह वायसराय
१८८० में भारत आया। सन् १८८१ में अफ़ग़ानिस्तान का युद्ध
हो जाने पर शान्ति स्थापित हुई और भारत में अनेक सुधार क
का अवसर लार्ड रिपन के हाथ लगा। लार्ड लिटन ने देश
समाचार-पत्रों पर पुनः नियंत्रण जारी करके राजनैतिक विष
पर प्रकाश डालने का निषेध कर दिया था। इसे रिपन ने रद्द कि
ग़रीबों में शिक्षा का प्रचार करने के लिए उसने एक जाँच-क
शन नैनात किया और उसकी सिफ़ारिशों के अनुसार "प्राथमि
स्कूल खोले जाने के काम में प्रोत्साहन देने के लिए "शिक्षा-विभा
में अनुकूल फेर-फार कर दिया। पहले यूरोपियन अपराधियों
मुक़द्दमा केवल यूरोपीय जज की इजलास में चलाने का नि
था। किन्तु रिपन ने इस नियम को भी रद्द किया और भार

जजों की अपेक्षा उच्च श्रेणी के अधिकारियों को अधिक अधिकार देने का प्रस्ताव किया, किन्तु यह मंज़ूर न हो सका। इसे इल्बर्ट बिल कहते हैं। इस बिल के कारण अंग्रेज़ लोग उससे बहुत नाराज़ हुए। रिपन ने स्थानीय स्वराज्य की व्यवस्था स्वीकृत कर म्युनिसिपेलिटियाँ खोलने का नियम चलाया। बड़े-बड़े शहरों में म्युनिसिपेलिटियाँ खुलीं। उनके प्रबन्ध का काम भारतीय लोगों के हाथ में दिया। इस तरह भारतीय लोगों को अपना कार-बार देखने की योजना उसने की। इससे भारतीय प्रजा उससे बड़ी सन्तुष्ट हुई और उस पर अपना विशेष स्नेह प्रकट किया।

(२) लार्ड डफ़रिन (सन् १८८४–८८) यह बड़ा विद्वान् था और राजनीतिज्ञों की ऊँची श्रेणी में गिना जाता था। इसके शासन-काल में उत्तर बरमा के राजा थीबा ने अंग्रेज़ों के प्रति अपना द्वेष व्यक्त किया। इससे इसने उसके देश को जीत लिया और उसको पदच्युत कर रत्नागिरि में रहने का स्थान दिया। थीबा १६—१२—१९१६ को वहीं मर गया। ब्रिटिश सरकार ने सन् सत्तावन के ग़दर में ग्वालियर का क़िला वहाँ के राजा से ले लिया था। वह क़िला १ जनवरी १८८६ के दिन सिंधिया को वापस दे दिया गया। सन् १८८७ में महारानी विक्टोरिया की ५०वीं वर्षगाँठ का स्वर्ण-उत्सव सारे भारत में मनाया गया। सन् १८८८ में लार्ड डफ़रिन के वापस जाने पर लेडी डफ़रिन के नाम से भारतीय स्त्रियों के लिए दवाख़ाने खोलने का एक फंड खोला गया

(३) लार्ड लेन्स डाउन—(सन् १८८९-९४)—सन्

१८८५ से भारतीय लोगों की एक नेशनल कांग्रेस खुली, इसका हाल आगे दिया जायगा।

(४) लार्ड एल्गिन (सन्

लार्ड एल्गिन का लड़का था। इसके शासन-काल में सीमा पर अफ़रीदी लोगों के साथ अंग्रेज़ों का युद्ध हुआ। १८९५ में भारत में भयंकर प्लेग फैला। सन् १८९५ में प्रान्त अंग्रेज़ी अमलदारी में आ गया। सन् १८९७ में महार विक्टोरिया के शासन के ६० वें वर्ष का अंत होने रत्न जुबिली का महोत्सव सारे भारत में मनाया गया।

चौदहवाँ अध्याय

बादशाह सातवें एडवर्ड और पंचम जार्ज

सन् १९०१-१९१९

१—सातवें एडवर्ड (१९०१-१०)
२—लार्ड कर्ज़न
३—लार्ड मिन्टो
४—पंचम जार्ज
५—लार्ड हार्डिंज
६—यूरोप का महायुद्ध

(१) सातवें एडवर्ड—सन् १९०१ में महारानी विक्टोरिया की मृत्यु हुई। अतः इंग्लैंड की राजगद्दी पर उनके बड़े लड़के सातवें एडवर्ड बैठे। उन्होंने भारत के सम्राट् की पदवी भी धारण की। इसका उत्सव मनाने के लिए सन् १९०३ की पहली जनवरी को दिल्ली में दरबार किया गया। इसमें उनका भेजा हुआ "स्नेह-सन्देश" पढ़ा गया। इस संदेश में बादशाह ने लोकहित की बातों से अपनी सहानुभूति दिखाई। सन् १९०८ की दूसरी नवम्बर को महारानी के सन् सत्तावन के संदेश को दिये हुए ५० वर्ष या आधी शताब्दी बीत चुकी थी। अतः उस अवसर को पुनः स्मरण करने के लिए जो उत्सव यहाँ मनाया गया उसमें बादशाह ने अपना सहानुभूति-प्रदर्शक संदेश भेजा था। इसमें उन्होंने अपने शासन की उदार नीति को स्पष्ट किया था। इस बादशाह के शासन-काल में दो वायसराय भारत में आये।

(२) लार्ड कर्ज़न—(सन् १८९८-१९०५)—बड़ा बड़ा

बनाये। इसके लिए उसने इस पहाड़ी प्रदेश का एक सूबा ही अलग बना दिया। यह सूबा चिमटे के दोनों सिरों के बीच में दाब के समान बड़ा उपयोगी है। ऐसे ही राज्य को बफ़र स्टेट कहते हैं।

४—सर फ्रेंसिस यंग हसबैंडमेन की अधीनता में उसने तिब्बत को एक कमीशन व्यापार बढ़ाने के लिए भेजा, लेकिन वह सफल न हुआ।

५—खेती की उन्नति करने के लिए भी लार्ड कर्ज़न ने कितने ही उपाय किये। अकाल या बाढ़ आ जाने पर लगान में कमी या मुआफ़ी करने का क़ानून बनाया। साहूकारों से पंजाब के किसानों को बड़ा कष्ट होता था। उसे दूर करने के लिए ज़मीन की मिलकियत गिरवीं रखने या बेचने के बारे में भी उसने क़ानून बनाये। किसानों को धन की मदद देने के लिए सहयोगी बैंकों का चलन चलाया। बिहार-प्रान्त में पूसा का कृषि-कालेज खोला। इसमें वैज्ञानिक ढंग से खेती के काम की खोजें की जाती हैं। इस प्रकार कुल बारह बड़े-बड़े उद्योगों के विषय कर्ज़न ने बढ़ाये।

६—पुरानी इमारतें और अन्य बनाये गये कामों के खंडहर इस देश में प्रायः सर्वत्र हैं। उनकी रक्षा करने के लिए कर्ज़न ने पुरानी वस्तु के रक्षण का नया क़ानून बनाया और उसका उपयोग कर प्रायः सभी पुरानी ऐतिहासिक इमारतों की रक्षा का काम शुरू किया। उसके ये सब काम बड़े लाभ-प्रद थे। अतः प्रजा उसको धन्यवाद देती थी। वह बड़ा मेहनती और महत्वाकांक्षी था। उसकी अधीनता में जितने छोटे-बड़े सरकारी काम काज करनेवाले नौकर थे उन सब पर उसका रोब जमा रहता था। सभी विभागों का निरीक्षण वह स्वयं करता और उन सब में यथोचित सुधार

भारतीयों का अधिक प्रवेश होने लगा। लेकिन केवल इतने ही अधिकार से प्रजा को सन्तोष न हुआ।

६ मई सन् १९१० को बादशाह सातवें एडवर्ड की मृत्यु हुई। अतः इंग्लैंड की राजगद्दी पर उनके ज्येष्ठ राजकुमार पंचम जार्ज बैठे। लार्ड मिंटो का कार्य-काल नवम्बर सन् १९१० में समाप्त हो गया था। इसलिए उसके स्थान पर लार्ड हार्डिंज की तैनाती हुई। बादशाह की नवीन उदार नीति का अधिकांश श्रेय लार्ड हार्डिंज को है। इसका सारा जीवन परराष्ट्र-विभाग के कार्यों में ही बीता है। पहले लार्ड हार्डिंज रूस-सम्राट के दरबार में इंग्लैंड का राजदूत था। जिस समय स्वर्गीय बादशाह सातवें एडवर्ड ने यूरोप में स्थायी शांति रखने के लिए यत्न किया था उस समय उन्हें "शान्ति-स्थापक" की पदवी मिली थी। उन्होंने यूरोप की मुख्य-मुख्य शक्तियों के पास स्वयं जाकर शान्ति बनाये रखने के लिए मित्रता की संधियाँ की। उस समय यही लार्ड हार्डिंज उनके साथ रह कर उनके दाहने हाथ बन रहे थे। इसी नीति की दृष्टि से उसको भारत के वाइसराय का पद दिया गया था। एडवर्ड के परलोक वासी होने पर उनके ही कान अथवा नीति का पोषण वर्तमान बादशाह कर रहे हैं।

(४) बादशाह पंचम जार्ज—ये सन् १९१० के मई मास में राजगद्दी पर बैठे। इसका उत्सव इंग्लैंड में जून सन् १९११ में हुआ। स्वयं भारत आकर इन्होंने दिल्ली में १२ दिसम्बर सन् १९११ को एक बड़ा दरबार किया और अपने राज्यारोहण का विज्ञप्ति भारत में प्रकट की। इस दरबार में भारत के १३०

अबदुर हमान

लाड रिपन

प्रान्तों या संस्थाओं से चुनने का अधिकार भी गवर्नर-जनरल को दिया गया। इनके चुनने का अधिकार प्रजा को बिलकुल नहीं दिया गया। लोगों की रुचि या आवश्यकता जानने या उसकी सुविधा अथवा सुख के साधन इत्यादि समझने की सरकार के पास एक भी इससे पहले उपर्युक्त प्रक्रिया न थी। लोगों के पास अपनी अभिरुचि प्रकट करने के लिए एकमात्र साधन क्रान्ति करना ही था। जब क्रान्ति करते तभी सरकार की आँखें भी खुलती थीं। यह त्रुटि उनके सामने प्रकट हुई। उपर्युक्त प्रजापक्ष के १२ सदस्यों की कौंसिल में यहाँ खुली चर्चा होने से उभय पक्ष की नासमझी दूर करने की आवश्यकता उस समय थी। इसी प्रकार उस समय बम्बई, बंगाल, मद्रास और आगरे में स्वतंत्र क़ानून बनाने के लिए उन-उन प्रान्तों में कौंसिलें खुलीं। सन् १८६१ का यह क़ानून लोगों की माँग उपस्थित करने पर नहीं बना। उसे तो सरकार ने केवल अपनी सुविधा की दृष्टि से बनाया था—यह बात ध्यान में रखनी चाहिए।

(३) लोकमत का पहला स्वरूप—प्रारंभ में सर्व साधारण को अपने अधिकारों की जानकारी न थी और अपना कारबार स्वयं देखने व चलाने अथवा सरकार से अपने कुछ अधिकार माँगने की इच्छा भी उनमें न थी। सन सत्तावन के ग़दर की हलचल जिस समय जारी थी, उस समय बम्बई, मद्रास और कलकत्ते में विश्वविद्यालय (यूनिवर्सिटियाँ) स्थापित किये गये। उनकी सहायता से विद्या का प्रचार होने पर लोगों में अपने हक़ों की जानकारी होने में बहुत समय लग गया। पहले थोड़ी ही शिक्षा प्राप्त कर लोगों को ऊँची-ऊँची नौकरियाँ मिल

[illegible]

(४) भारतीय राष्ट्र-सभा [illegible] [illegible] अर्थात् भारतीय राष्ट्र-सभा [illegible] इस संस्था का पहला उद्देश्य यह था कि विभिन्न प्रान्तों के नेताओं का परस्पर परिचय हो, सब मिलकर [illegible] के [illegible] विचार करें, और पार्लमेंट के [illegible] [illegible] दादा भाई नौरोजी, [illegible] रानडे, फीरोजशाह मेहता, [illegible] बनर्जी, सुब्रह्मण्य [illegible] इस संस्था को स्थापित करने में अग्रणी थे। [illegible] इसकी पहली बैठक सन् १८८५ के बड़े दिनों की छुट्टियों में बम्बई में हुई। तब से आज तक इसका अधिवेशन प्रतिवर्ष बड़े दिनों की छुट्टियों में कलकत्ता, मद्रास, बम्बई, इलाहाबाद, लाहौर, नागपुर, अहमदाबाद, पूना, बनारस, दिल्ली, कानपुर

मिल-जुलकर एक मसविदा तैयार किया। उस समय देश के अन्य विभिन्न दल भी उसमें सम्मिलित हुए। मिसेज़ बीसेंट, गांधी, तिलक और जिन्ना आदि नेताओं और पक्षों में ऐक्य हुआ। इससे १९१६ की राष्ट्रीय सभा की माँगें अधिक ज़ोर के साथ हुईं और युद्ध में फँसे रहने के कारण सरकार को भी इन माँगों पर विचार करना पड़ा। भारत में बड़ा आन्दोलन होने पर सभी पक्षों के नेताओं द्वारा स्वराज्य की माँग एक स्वर से प्रकट की गई। वह सरकार को भी स्वीकार करनी पड़ी। सन् १९१७ के जुलाई मास में मांटेग्यू भारत-मंत्री बना और उसने प्रधान-मंडल की अनुमति से २० अगस्त सन् १९१७ को पार्लामेंट में अंग्रेज़ सरकार की ओर से यह सूचना प्रकाशित की कि "भारत के शासन में उत्तरोत्तर भारतीय लोगों को अधिक प्राधान्य देकर स्वराज्य की संस्था धीरे-धीरे परिपूर्ण बना दी जायगी और इसके द्वारा भारत ब्रिटिश साम्राज्य में रहकर अपना शासन स्वयं अपने उत्तरदायित्व पर करेगा। इस अन्तिम अवस्था में पहुँचाने के लिए उसे समय-समय पर क्रम-क्रम से अधिक अधिकार दिये जाँयगे। यह सूचना भारत-सरकार और इंग्लैंड-सरकार दोनों की सम्मति से प्रकट की जाती है।" यह सूचना इस प्रकरण में अत्यन्त महत्व की है। सन् १८५७ के ग़दर के महारानी के संदेश प्रकाशित होने के बाद राज्य-शासन-सम्बन्धी आगे की महत्व की बात इस सूचना से प्रकट हुई। इससे लोगों का आन्दोलन भी कुछ ठंढा पड़ा और युद्ध का भी अन्त हुआ और भारत के शासन-प्रकरण ने एक नया ही रंग पकड़ा। एक दृष्टि से राष्ट्रीय सभा का पहला उद्देश्य सिद्ध हो गया और उसके आगे के उद्योगों में बड़ा रूपान्तर हो गया।

...

कपड़ा पहनना आदि बातें महात्मा गान्धी के उपर्युक्त आन्दोलन में शामिल हैं। सन् १९२० में लोकमान्य तिलक परलोक-वासी हुए तब लोकपक्ष का नेतृत्व गान्धी को मिला। इन्होंने ऊपर लिखे अनुसार अपना आन्दोलन चलाया। इससे सरकार को सुधार-योजना का यथावत् प्रभाव जनता पर न पड़ सका।

(३) ख़िलाफ़त का आन्दोलन—इसी समय हिन्दू और मुसलमानों में एकता हो जाने का एक और कारण हो गया। महायुद्ध से पहले तुर्की का बादशाह ही सब मुसलमानों का ख़लीफ़ा अथवा धर्मगुरु समझा जाता था। तुर्की ने जर्मनी का पक्ष लिया था। इससे अंग्रेज़ों ने उसको चारों तरफ़ से घेर लिया। उस समय भारत के मुसलमानों की अवस्था बड़े पेंच की हो गई और उनको अपने धर्म-भाइयों से युद्ध करना पड़ा। बाद को अंग्रेज़ों के साथ तुर्की की संधि हो गई। इसका निर्णय करने में डेढ़ वर्ष लग गये। यह संधि सन् १९२० के मई मास में हुई। इसके अनुसार अरब, सीरिया, पेलेस्टाइन, मेसोपोटामियाँ तुर्कों से छीन लिये। लीग-आव-नेशन्स की आज्ञा से अंग्रेज़ और फ्रेंचों ने उनपर अधिकार कर लिया। तुर्कों के बादशाह को यूरोप से निकाल दिया गया। इससे कांसर्टेंटिनोपल और ख़लीफ़ा का सम्बन्ध टूट गया। ख़लीफ़ा की बादशाही टूट गई। अपने धर्म-गुरु की पुरानी राजधानी टूटने के कारण भारत में मुसलमानों को क्षोभ हुआ और इस ख़लीफ़ा को फिर से वहाँ बैठाने के लिए वे प्रयत्न करने लगे। मुसलमानों की इस मनोवृत्ति को देखकर महात्मा गान्धी ने उनके नेताओं को अपने सत्याग्रह के आन्दोलन में शामिल किया। दोनों समाजों ने यह निश्चित किया कि जब तक जलियाँवाला-हत्याकांड के

नायर बने। ये सर शंकरन नायर पहले गवर्नर-जनरल की कार्यकारिणी-कौंसिल के समासद थे और पंजाब के दंगे के सम्बन्ध में सरकारी नीति से नाराज़ होकर उन्होंने अपने पद से इस्तीफ़ा दे दिया था, लेकिन मतभेद अधिक होने से बम्बई की यह सर्वदल-समिति टूट गई। तब बाद को वर्त्तमान स्वराज्य-दल की स्थापना हुई।

सरकार और जनता की परस्पर बिगड़ती ही गई। सन् १९२२ के आरंभ में जिस समय प्रिंस-आव-वेल्स भारत में आये, उस समय बम्बई तथा अन्य स्थानों में उनका बहिष्कार किया गया। उस समय बम्बई में दंगा भी हो गया। इसलिए सरकार ने गांधी को गिरफ़्तार कर प्रतिबंध में रक्खा। अतः नेता के न होने से आन्दोलन ठंडा हो गया। इधर स्कूल व अदालतों का बहिष्कार भी असम्भव समझा गया। केवल कपड़े के बहिष्कार के सम्बन्ध में अनेक लोगों ने चरखा चलाकर स्वयं सूत कात खादी पहननी शुरू की। गान्धी की इस शिक्षा को बहुतेरे लोगों ने स्वीकार किया और उसका सम्बन्ध राष्ट्रीय सभा में भी पहुँचा। बाद को सन् १९२३ में तुर्कों ने एका करके राज्यक्रान्ति की और ख़लीफ़ा को पदच्युत करके मुस्तफ़ा कमालपाशा को अध्यक्ष बनाकर अंगोरा में प्रजासत्तात्मक राज्य की स्थापना की। इससे ख़िलाफ़त का प्रश्न अपने आप हल हो गया और हिन्दू-मुसलमानों में जो परस्पर ऐक्य था वह नष्ट हो गया। गान्धी का भी बाद को क़ैद से छुटकारा हुआ। हिन्दुओं में अनेक जातियाँ होने के कारण और इसी प्रकार भारतीयों में मुसलमान, ईसाई व पारसी इत्यादि अनेक विभिन्न धर्मी लोगों की खिचड़ी होने से राष्ट्रीयसभा के

कड़ होने पर स्वराज्य की गति तनिक अधिक तेज़ हो गई। अंग्रेज़ी नौकरशाही ने आन्दोलन किया कि स्वराज्यपक्ष राजद्रोही है। लेकिन लार्ड आलिवर ने कहा कि स्वराज्य-दल राजद्रोही नहीं है, उसकी पद्धति नीति-युक्त है। उसी समय से स्वराज्य-दल का कार्य बड़ी मज़बूती से होने लगा। यह मज़बूती इतनी बढ़ी कि बड़ी व्यवस्थापक सभा में लोक-पक्ष की बार-बार जीत होने लगी और सरकारी पक्ष की हार हुई। सरकार का कहना था कि प्रस्तुत क़ानून के अनुसार दस वर्ष तक कोई परिवर्त्तन होने का नहीं। तब जनता के प्रतिनिधियों ने यह माँग पेश की कि द्विविध शासन बिलकुल निरुपयोगी है, उसे नष्ट कर प्रान्तीय सरकारों को बिलकुल स्वतन्त्रता दे दी जाय। इस विवादात्मक प्रश्न पर विचार करने के लिए एक जाँच-कमेटी बैठाई गई। इस जाँच-कमेटी के अध्यक्ष सर मुडीमेन बने। इस समिति के अपनी जाँच प्रकाशित करने के पहले ही विलायत का लेबर मंत्रि-मण्डल टूट गया और उसके स्थान पर कंज़रवेटिव दल अर्थात् अनुदार ने अपना मंत्रिमण्डल बनाया। इसमें भारतीयों को लाभ की बहुत कम आशा रह गई। मुडीमेन-समिति में भी मतभेद हो गया। इसमें भारतीय सदस्यों के मत और सरकारी मत में परस्पर बड़ा विरोध था। तब उस समय इस प्रश्न का निर्णय करने के लिए सन् १९२५ की गरमियों में लार्ड रेडिङ्ग को सरकार ने लंदन में बुलाया। वहाँ विचार होने पर भारत-मंत्री लार्ड बर्कनहेड ने यह प्रकाशित किया कि दस वर्ष पूरे होने से पहले शासन-व्यवस्था में किसी प्रकार का फेरफार नहीं हो सकता। जो सुविधायें पहले दी जा चुकी हैं उनका उपयोग जनता सरकार के साथ सहयोग करके करे।

इसके बाद आगे का मार्ग देखा जायगा। इस प्रकार ब्रिटिश सरकार ने अपना मनोभाव बार बार प्रकट किया। सुधार कानून की पहली किश्त की अवधि सन् १९२१ में पूरी होती है। प्रति तीन वर्ष का नवीन चुनाव होता है। इस नियम के अनुसार सन् १९२६ के अन्त में एसेम्बली और कौंसिल का निर्वाचन हुआ। उसमें लोकपक्ष के प्रतिनिधियों में सरकार का विरोध पहले के ही समान है। सन् १९२६ के एप्रिल मास में रेविंग का कार्य काल समाप्त हुआ और उनकी जगह पर पहले के सर चार्ल्स वुड के नाती एडवर्ड वुड को लार्ड अर्विन की उपाधि मिली और वह भारत का गवर्नर-जनरल बनाया गया। भारत में खेती ही लोगों का मुख्य धंधा है। उसमें लोगों को जैसा लाभ होना चाहिए, वैसा नहीं होता। इस सम्बन्ध में विशेष उपाय करने का निश्चय भारतमंत्री और लार्ड अर्विन ने मिलकर किया। और इस विषय की जाँच करने के लिये बादशाह ने एक कमीशन बैठाला। वह अभी भारत में जाँच कर रहा है (१९२७)।

(५) सरेन्द्र-मण्डल—भारत में छोटे बड़े ७३१ भारतीय राज्य ब्रिटिश-सरकार के अधीन हैं। सारे देश का ⅓ भूभाग और सारे देश की जनसंख्या का चतुर्थांश भाग इन देशी रजवाड़ों के अधीन है। इन सब रजवाड़ों में निज़ाम का राज्य बहुत बड़ा है। भीतरी मामलों में वह बहुत कुछ स्वतंत्र है। लेकिन सब के लिए एक ही कानून लागू नहीं है। अंग्रेज़ी सत्ता जैसे-जैसे बढ़ती गई और देशी रजवाड़ों का उससे जैसा सम्बन्ध होता गया वह वैसा ही आज तक बना हुआ है। अर्थात् कई देशी [illegible] पंजाब के सिक्ख, सिन्ध के अमीर इत्यादि अंग्रेज़ों ने

लड़ाई लड़कर जीते हैं। कुछ ऐसी भी रियासतें हैं, जिनका निर्माण ही अंग्रेज़ों के समय में हुआ है; जैसे मैसूर, काश्मीर इत्यादि। कई ऐसी भी रियासतें हैं जिनकी मित्रता शुरू से ही अंग्रेज़ों के साथ होगई थी। जैसे बड़ोदा, कोल्हापुर, हैदराबाद इत्यादि। राजपूतों की रियासतें बाद में विशेष संधियों-द्वारा ब्रिटेन के अधीन हुईं। वास्तव में चाहे किसी रियासत के साथ मित्रता की संधि हो, चाहे किसी को जीतकर संधि की गई हो—सभी रियासतों पर इस समय ब्रिटिश सत्ता का समान अधिकार है। जिस रियासत के साथ जैसी संधि है, उसके अनुसार कार्रवाई की जाती है। यदि किसी रियासत में गड़बड़ या दुष्प्रबन्ध हो तो उसमें हाथ डालकर उसे सुव्यवस्थित करने के अधिकार को अवश्य ही ब्रिटिश सरकार काम में लाती है। विदेशी राज्यों के साथ व्यवहार स्थापित करने का अधिकार किसी राज्य को नहीं है। पहले अनेक रियासतें गोद लिये वारिसों को नामंज़ूर कर ज़ब्त कर ली गईं। लेकिन सन् १८५८ से उत्तराधिकारी न होने पर किसी रियासत के ज़ब्त न किये जाने का वचन महारानी विक्टोरिया ने अपने संदेश में दिया है। तैनाती फ़ौज की पद्धति सब रियासतों के लिए जारी की गई। तब दोनों पक्षों का व्यवहार सफल करने के लिए सरकार ने सभी रियासतों में रेज़ीडेंट की नियुक्ति की। यह सरकारी पदाधिकारी है। रेज़ीडेंट को स्वतंत्र अधिकार कुछ भी न था। लेकिन उसकी सिफ़ारिश पर ही गद्दी और राज्य दोनों का हितादित निर्भर करने से अप्रत्यक्ष रूप में उसका प्रभाव बहुत बड़ा। राजा ज़रा दोषदार हुआ कि उसके और रेज़ीडेंट के बीच में खटका गाँठ, और राजा कुछ नरम हुआ तो

में उनकी पैदावार और श्रेणी के अनुसार उनका गट बाँध दिया गया है। उसका ही पालन शासन-सम्बन्धी कार्यों में किया जाता है। रियासत की भीतरी व्यवस्था अथवा असंतोष बढ़ने पर केवल पहले की संधियों के अनुसार व्यवहार किया जाय अथवा सरकार बीच में पड़कर अव्यवस्था को दूर कर दे इस विषय का एक प्रश्न हाल में उठा था। इसका स्पष्ट निर्णय लार्ड रेडिङ्ग ने सन् १९२६ में यह किया कि सब प्रजा की यथा योग्य रक्षा करने तथा उसकी अभिवृद्धि करने का भार सार्वभौम सरकार पर अन्ततः निर्भर है। इस कर्त्तव्य का पालन करने में किसी संधि के किसी नियम का ध्यान न रक्खा जायगा। सभी रियासतों के मान व उनके पद की रक्षा करने में सरकार हर तरह से दृढ़ है। ब्रिटिश-भारत में जनता को अपना शासन करने का विशेष अधिकार खुल्लम-खुल्ला देने का उपक्रम सरकार ने किया है। सरकार की इच्छा है कि इसी परिमाण में रियासतें भी अपने-अपने राज्यों में जनता को वैसे ही अधिकार दें। महायुद्ध में इन रियासतों ने जो भारी सहायता सरकार की है उसकी चर्चा पहले की जा चुकी है। युद्ध के अनन्तर लोगों को स्वराज्य का अधिकार मिलने की आवश्यकता विदित हुई। यही आवश्यकता इन रियासतों में भी उपस्थित हुई। लेकिन नौकरशाही के लिए इस तृतीयांश भारत का इतना आधार अति महत्व का प्रतीत होने से, इन रियासतों के कारबार में बाहरी आन्दोलनों का संपर्क न होने देने के लिए "प्रिंसेस-प्रोटेक्शन बिल" "अर्थात् रियासत-दारों के बचाव का क़ानून" बनाया गया। सारांश यह कि भारत की ब्रिटिश प्रजा व देशी रजवाड़ों की प्रजा का एक होना कठिन है। महायुद्ध में जो सहायता इन देशी रजवाड़ों ने की उसके बदले में सरकार ने उनको पूर्ण अन्तर्गत स्वातंत्र्य दे

सभा की इच्छा के अनुसार राजा-द्वारा चलाया जाता है। पार्लामेंट में एक लार्डों की सभा, दूसरी सामान्य प्रजा की सभा, इस प्रकार दो सभाएँ हैं। सामान्य सभा में ६१५ लोक-निर्वाचित सदस्य हैं। इनमें अधिकारी दल की ओर के २१ सदस्यों का एक प्रधान मंडल बनाकर मंडल-द्वारा राज्य का समस्त कारबार चलाया जाता है। इस प्रधान मंडल का अध्यक्ष ही प्रधानमंत्री बनता है और बहुमतवाले दल का नेता होता है। इसी मंडल में भारत के राज-शासन का निरीक्षण करनेवाला भारत-मंत्री भी एक सदस्य होता है। उसकी सहायता के लिए ८ से १२ सदस्यों तक की एक परामर्श-दात्री-समिति भी रहती है। इस कौंसिल में आजकल ३ भारतीय सदस्य रहते हैं। वास्तव में भारतमंत्री का भारत के शासन में कोई स्वतंत्र अधिकार नहीं। अधिकार पार्लामेंट और राजा का रहता है, लेकिन इस अधिकार के अनुसार जो कुछ कार्रवाई होती है वह केवल इसी भारत-मंत्री के द्वारा ही हुआ करती है। जमा-ख़र्च के विषय में उसे अपनी परामर्श-दात्री-समिति के ही अनुसार चलना पड़ता है। अन्य बातों में वह अपनी समिति के अनुसार न भी चले तो कोई रुकावट नहीं पड़ती। पूरे भारत की मिलकियत या उसका शासन-प्रबन्ध करने की सत्ता सर्वथा ब्रिटिश पार्लामेंट के ही हाथ में है। यह बात ध्यान में रखनी चाहिए।

२—क़ानून—किसी भी नवीन क़ानून को बनाने या पुराने क़ानून को तोड़ने का अधिकार बड़ी व्यवस्थापिका सभा को है। ऐसे क़ानूनी मसविदों पर विचार करने के लिए सभा के सामने पेश करने की आज्ञा सरकार से लेनी पड़ती है। सरकार की स्वीकृति मिलने पर वह मसविदा छापकर सभा के

सुधार किये गये। अतएव यहाँ का शासन करनेवाले नौकरों की एक विशिष्ट संस्था ही बन गई है। इसे इण्डियन-सिविल-सर्विस कहते हैं। इसकी परीक्षा इंग्लैंड में होती है और इस परीक्षा में उत्तीर्ण हुए व्यक्तियों को यहाँ नौकरी मिलती है। शासन के विभिन्न विभागों में सभी उच्च व महत्व के पदों पर इन लोगों की तैनाती की जाती है। सारा कार-बार बड़ी नेकनियती से इस संस्था द्वारा होने पर इसकी सब जगह बड़ी तारीफ़ होती है। भारतीय भी इंग्लैंड जाकर इस परीक्षा में बैठते हैं और योग्यता के अनुसार उनका पद मिलते हैं। भारतीयों को उत्तरोत्तर अधिक पद देने का निश्चय अब सरकार ने किया है। इसके अलावा प्रत्येक प्रान्त में प्राविंशियल इन्डियन-सिविल-सर्विस है जो बिलकुल निम्न नौकरियों की सबार्डिनेट सर्विस है। प्रत्येक के नियम और वेतन अलग-अलग निश्चित हैं। इधर अब सिविल-सर्विस की परीक्षा भारत में भी ली जाने लगी है।

५—फ़ौज, जलसेना और विमान—देश की रक्षा करने के लिए फ़ौज और जलसेना की योजना पहले से ही है। इधर हवाई जहाज़ भी रक्खे जाने लगे हैं। भारत के पास कोई स्वतन्त्र जल-सेना नहीं है, ब्रिटिश जल-सेना की ही एक शाखा यहाँ पर तैनात है। फ़ौज के पैदल, घुड़-सवार, तोप-ख़ाना और इञ्जीनियर आदि चार मुख्य अंग हैं। इन सब का बड़ा अफ़सर सेनापति कमांडर-इन-चीफ़ है। यह बड़ी व्यवस्थापिका सभा और गवर्नर-जनरल की कार्य-कारिणी कौंसिल का एक सदस्य है। इस सम्पूर्ण सेना के चार विभाग किये गये हैं। उनके रहने का स्थान उत्तर में मरी, दक्षिण में पूना, पूर्व में नैनीताल और पश्चिम में क्वेटा है। कुछ भारतीय स्वयं-सेवक तैयार करना

हैं। इन सब का अध्ययन करने से समग्र भारतीय शासन में सरकार का कितना प्रभाव पड़ता है और सरकार की निगाह चारों तरफ़ कितनी तेज़ है, यह बात जानी जा सकती है। समग्र शासन को चलाने के लिए प्रत्येक ज़िले में कौन-कौन सरकारी पदाधिकारी रहते हैं, यह जानने के लिए एक कोष्टक परिशिष्ट में दिया गया है। इसे देखने से विद्यार्थी ज़िले के शासन को स्वयं समझ लें।

८—स्थानीय स्वराज्य—लोगों को अपना शासन स्वयं अपनी संघ-शक्ति-द्वारा चलाने के लिए विभिन्न स्थानों में विशिष्ट संस्थाएँ हैं। इनके द्वारा सार्वजनिक हित के अनेक काम करने का अधिकार सरकार ने लोगों को दिया है। लोगों की आवश्यकताएं व अड़चनें इतनी हैं कि उनके ही स्थानों में, उनकी सुविधा के अनुसार जैसा प्रबन्ध हो सकता है, वैसा प्रबन्ध दूर रहनेवाले सरकारी पदाधिकारी नहीं कर सकते। इसलिए उनकी कठिनाइयों को दूर करने का अधिकार उन्हें ही देने पर उन्हें कोई शिकायत करने का मौक़ा नहीं मिलता और इससे उनको राज्य चलाने का व लोक निर्वाचित संस्था के चलाने का अनुभव भी मिलता है। यह विषय बड़े महत्व का है। प्राथमिक शिक्षा, पुस्तकालय, मार्ग, जल-प्रबन्ध, रोगों का निवारण, रोशनी, गंदगी दूर करने आदि की व्यवस्था, दवाख़ाने, दूध देनेवाले जानवरों की निगरानी—इस प्रकार के अनेक छोटे-मोटे परन्तु सार्वजनिक हित के विषय इस संस्था को सौंपे गये हैं। ये संस्थाएँ तीन दर्जों में बटी हैं। बड़े शहरों की संस्थाओं को म्युनिसिपेलिटी कहते हैं, परन्तु राजधानी की म्युनिसिपेलिटी को कार्पोरेशन कहते हैं। प्रत्येक बड़े गाँव में एक ग्राम-पंचायत रहती है। इन पंचायतों-द्वारा छोटे-छोटे झगड़ों

पश्चिमी समुद्र को पाटने के लिए बेकवेरिफ्लेमेशन इत्यादि की गिनती भी ऐसी ही संस्थाओं में होती है। आजकल भारत में ७५० म्युनिसिपेलिटियाँ हैं। अंग्रेज़ी अमलदारी शुरू होने से पहले भी यहाँ लोकनिर्वाचित ग्राम-संस्थाएँ थीं। ये उपर्युक्त सभी काम उनके द्वारा होते थे। इस प्रकार अधिकांश कारबार उन्हीं के हाथों में था। इन ग्राम-संस्थाओं या गाँव की पंचायतों का फिर से निर्माण किये जाने का प्रयत्न आजकल चल रहा है। सहकारी बैंक से, अर्थात् एक-दूसरे की ज़ामिनगरी द्वारा, लोगों को क़र्ज़ मिल जाता है। इससे अनेक उपयुक्त लोकोपयोगी काम करने की योजना आजकल सारे देश में जारी है। पाठशालाओं में 'बालचर' अर्थात् ब्वाय स्काउट की शिक्षा देने का प्रारम्भ अनेक स्थानों में हो गया है। युनिवर्सिटियों में फ़ौजी शिक्षा के क्लास प्रारम्भ हो गये हैं। इनको युनिवर्सिटी-ट्रेनिङ्ग-कोर (यू० टी० सी०) कहते हैं।

७—ब्रिटिश साम्राज्य—अर्वाचीन काल में संसार में अनेक साम्राज्यों का प्रसार हुआ। रोमन बादशाही, अरबी खिलाफत, यूरोप में शार्लमेन का साम्राज्य और भारत में मुग़ल बादशाही सामान्यतः समकालीन हैं। प्राचीन काल में अशोक का साम्राज्य अथवा उसके बाद गुप्त, हर्ष इत्यादि के राज्य, भारत में उदय हुए। परन्तु आजकल के राज्य-तन्त्र से यदि उनकी तुलना की जाय तो पता चलेगा कि जितनी बातें प्रस्तुत राज्य-तन्त्र की विदित हैं उतनी बातें अन्य राज्यों की नहीं विदित हैं। इसी प्रकार चीन की बादशाही हज़ारों वर्ष रही, उसकी भी अनेक बातें अज्ञात हैं। इन सब से ब्रिटिश साम्राज्य की अनेक बातें बिलकुल भिन्न हैं। एक तो यही कि यह साम्राज्य अविच्छिन्न

के साथ अनबन हो गई। सन् १७५६-६३ तक सात वर्ष का युद्ध हुआ। इसमें फ्रांस की हार हुई और अंग्रेज़ों की समुद्री सत्ता स्थापित होगई। इसके बाद इस शक्ति के बल पर उसने अपना व्यापार, अपने उपनिवेश और राज्य बढ़ाने का प्रारंभ किया। उपर्युक्त सात वर्षों के युद्ध के बंद होने पर उत्तर अमरीका के संयुक्त राज्यों ने इंग्लैंड की अधीनता अपने ऊपर से हटा दी और वे स्वतंत्र हो गये। बाद को नैपोलियन के युद्ध में उसकी उन्नति में जो कुछ बाधा पड़ी, उसकी पूर्ति महारानी विक्टोरिया के शासन-काल में पूर्ण हो गई। वर्त्तमान अंग्रेज़ी-साम्राज्य निम्नांकित सात विभागों में विभक्त है—

१—इंग्लैंड, स्काटलैंड, वेल्स—ग्रास स्वामी की मूल मातृभूमि।

२—आयर्लैंड—इसे अब "फ्री स्टेट" कहते हैं। इसे स्वतंत्र राज्य मिला है।

३—स्वतंत्र उपनिवेश—कनेडा, आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड, और दक्षिण-अफ्रीका—इनको पूर्ण अन्तर्गत-स्वातंत्र्य मिला है।

४—क्राउन कालोनीस—माल्टा, जमैका, सीलोन, मलाया इत्यादि, इनका शासन पार्लमेंट द्वारा तैनात किये गये गवर्नर करते हैं।

५—अधीन देश—भारत इत्यादि—ये परतंत्र हैं। अपने अन्तर्गत शासन-स्वतंत्रता चाहते हैं। भारत में ७०० देशी रियासतें हैं, जिन्हें अन्तर्गत-स्वातंत्र्य प्राप्त है।

६—संरक्षित प्रदेश (प्रोटेक्टरेट्स)—इजिप्ट, ब्रिटिश पूर्व अफ्रीका, नैजीरिया इत्यादि। ये विशिष्ट संधियों द्वारा इंग्लैंड की अधीनता में आ गये हैं।

ईसाई मिशनरियों की [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] शिक्षा [illegible] [illegible] विकसित हुई। [illegible] [illegible] [illegible] अंग्रेजी का [illegible] [illegible] विद्यार्थियों का [illegible] करने के लिए [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] इस [illegible] के द्वारा [illegible] [illegible] [illegible] उसका बहुत [illegible] [illegible] [illegible] इसका परिणाम यह हुआ कि लोगों की [illegible] [illegible] इन सरकारी स्कूलों और युनिवर्सिटियों [illegible] [illegible] [illegible] का [illegible] [illegible] [illegible] शिक्षा के विषय को पूर्ण रूप से अपने अधीन करने के लिए प्रयत्न हुए। इसका प्रारम्भ पहले बंगाल में हुआ और शीघ्र ही [illegible] अर्थात् राष्ट्रीय शिक्षा की व्यवस्था का प्रयास प्रारम्भ होने लगा। लेकिन इसके साथ ही साथ राष्ट्रीय का प्रचार रोकने के लिए सरकार ने इन संस्थाओं पर अपना नियंत्रण कुछ और अधिक रखा। बाद को लार्ड हार्डिंज ने लोक-रक्षा का दमन करने के लिए जो अनेक उपाय किये उनमें उसने लोक-शिक्षा पर से सरकारी नज़र बहुत कुछ हटा दी। मिसेज़ बीसेंट का थियासफी के द्वारा लोक-शिक्षा का उद्योग बहुत दिनों तक जारी रहने से बनारस में उनका एक सेंट्रल हिन्दू-कालेज बहुत प्रसिद्ध हुआ। इस संस्था के क्षेत्र को और भी अधिक विस्तृत करके वहाँ हिन्दू-युनिवर्सिटी स्थापित करना और उसमें हिन्दू-धर्म की व अन्य विषयों की शिक्षा यथेष्ठ रीति से देने के उद्देश से पंडित मदन

लेकिन यूरोपीय उपनिवेशोंवाले भारतीय प्रवासियों को बराबरी के नाते के अधिकार नहीं देते, इससे अनेक पेचीदे प्रश्न उपस्थित होते हैं और उनसे ब्रिटिश-साम्राज्य का शासन बड़ा जटिल हो जाता है। विशेषतः दक्षिण व पूर्व अफ्रीका में भारतीय प्रवासियों की बस्ती अधिक है। इसलिए वहाँ यूरोपियों और भारतीय-प्रवासियों के अनेक विषयों के झगड़े खड़े होते हैं। उपनिवेशों के भीतरी शासन में दखल देने का अधिकार ब्रिटिश सरकार को न होने से कई मौक़ों पर उनकी स्थिति बड़ी जटिल हो जाती है। इधर उपनिवेशवालों का जी दुखाया नहीं जा सकता और उधर भारतीयों के योग्य अधिकारों की रक्षा करने की ज़िम्मेदारी पूरी नहीं हो पाती। ब्रिटिश-सरकार अजब ऐसी अड़चन में पड़ जाती है। पूर्व-अफ्रीका में केनिया नाम का एक उपनिवेश है। इस प्रदेश में बहुत पहले से भारतीय रहते हैं। पहले यह भू-भाग जर्मनी के अधिकार में था, युद्ध के बाद यह अंग्रेज़ों को मिल गया। केनिया का यह उपनिवेश भारतीयों के बसने के लिए अलग रखने की माँग भारतीयों ने सरकार से की थी, लेकिन सरकार ने उसे नामंज़ूर किया और केनिया के उत्तम भूभाग यूरोपीयों के बसाने के लिए अलग रखे गये हैं। इस मामले में भारतीयों और सरकार में बड़ी अनबन हो गई। मतलब यह कि ब्रिटिश-साम्राज्य के शासन में जो जटिल प्रश्न किसी प्रकार उपस्थित हो जाते हैं उनकी कल्पना इस उदाहरण से की जा सकती है।

८—भारत की विद्योन्नति—साम्राज्य का विस्तार, शासन, व्यापकत्व इत्यादि की जानकारी भारतीय लोगों को लार्ड कर्ज़न के ज़माने से विशेष रूप से होने लगी। विभिन्न विश्वविद्यालयों

में वहाँ के विद्यार्थियों की संख्या बढ़ने लगी। इसके अलावा अधिकाधिक संख्या में भारतीय विद्यार्थी इंग्लैंड, जर्मनी, फ्रांस इत्यादि विदेशों में जाने से भारतीय जनता की दृष्टि विस्तृत हुई। तरुणों में उत्साह की वृद्धि हुई और वे अपने अधिकारों को जानने लगे। ऐसी स्थिति में लार्ड कर्ज़न ने विद्यार्थियों का नियंत्रण करने के लिए युनिवर्सिटी-एक्ट अर्थात् भारत के समस्त विश्वविद्यालयों के लिए एक नवीन क़ानून बनाया। इस एक्ट के द्वारा सब की व्यवस्था व देखरेख एक सी रख उसका बहुत कुछ काम सरकार ने अपने हाथ में ले लिया। इसका परिणाम यह हुआ कि लोगों की भावना बदल गई और उन सरकारी स्कूलों और युनिवर्सिटियों में लोक-हित-पोषक शिक्षा का अभाव उन्हें देख पड़ने लगा। लोग शिक्षा के विषय को पूर्ण रूप से अपने अधीन करने के लिए तत्पर हुए। इसका प्रारम्भ पहले बंगाल में हुआ और नेशनल एज्यूकेशन अर्थात् राष्ट्रीय शिक्षा की स्वतंत्र संस्था स्थापित होने लगी। लेकिन इसके साथ ही साथ राजद्रोह का प्रसार होता देख सरकार ने ऐसी संस्थाओं पर अपना नियंत्रण कुछ काल तक अधिक रक्खा। बाद को लार्ड हार्डिञ्ज ने लोक-क्षोभ का शमन करने के लिए जो अनेक उपाय किये उनमें उसने लोक-शिक्षा पर से सरकारी मुट्ठी बहुत कुछ हटा दी। मिसेज़ बीसेंट का थियासफी के द्वारा लोक-शिक्षा का उद्योग बहुत दिनों तक जारी रहने से बनारस में उसका एक सेंट्रल हिन्दू-कालेज बहुत प्रसिद्ध हुआ। इस संस्था के क्षेत्र को और भी अधिक विस्तृत करके वहाँ हिन्दू-युनिवर्सिटी स्थापित करना और उसमें हिन्दू धर्म की व अन्य विषयों की शिक्षा यथेच्छ रीति से देने के उद्देश से पंडित मदन

मालवीय इत्यादि कितने ही धर्माभिमानियों ने चन्दे की बड़ी-बड़ी रक़में एकत्र कीं और सरकार की परवानगी लेकर सन् १९१५ में बनारस-हिन्दू-युनिवर्सिटी स्थापित की। वह युनिवर्सिटी बड़ी उन्नति कर रही है। इसी नमूने का मुसलमानों का एक स्वतंत्र विद्यालय अलीगढ़ में था। उसका क्षेत्र बढ़ाकर मुसलमानों ने भी चंदा एकत्र कर अपनी अलीगढ़ की मुस्लिम युनिवर्सिटी स्थापित की (सन् १९२०)। अर्थात् इन दो सरकार-सम्मत युनिवर्सिटियों का अधिकांश काम लोगों को मिला।

इधर इसी समय यूरोप में महायुद्ध शुरू हुआ। उसका प्रभाव संसार के सभी राष्ट्रों पर पड़ा। इससे पृथिवी के जितने भी राष्ट्र थे उनमें अपनी अन्तःस्थिति को सर्वत्र सुलभ रीति से चलाने का प्रयास हुआ। इसी प्रकार व्यापार-मार्ग एवं व्यापार के साधनों की बाढ़ स्थान-स्थान में होने के कारण अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्नों की चर्चा भी खुलकर होने लगी। इससे प्रत्येक राष्ट्र में नवीन जागृति हुई, अपनी स्थिति व अधिकारों की रक्षा का उत्साह बढ़ा और स्वयं-निर्णय के तत्त्व के अनुसार प्रत्येक राष्ट्र को अपने शासन को सँभालने का अधिकार मिला। वास्तव में यदि देखा जाय तो इसकी जड़ युद्ध के बंद होने पर ही जमी। लीग-आव-नेशन्स नाम का एक अन्तर्राष्ट्रीय संघ स्थापित किया गया। प्रबल राष्ट्रों ने यह निश्चय किया कि अब से आगे सभी राष्ट्र अपने [illegible] का निर्णय पहले इस संघ-द्वारा करालें, और उसका निर्णय [illegible] बिना कोई राष्ट्र युद्ध न करे। तदनुसार आजकल इस राष्ट्र की स्थापना हुई है और वर्त्तमान अन्तर्राष्ट्रीय झगड़ों का निर्णय

इसी संस्था के द्वारा होता है। इससे किसी नये युद्ध का अचानक प्रारंभ हो जाना बहुत कम संभव है। इस संघ में भारत का भी एक प्रतिनिधि है। इस योजना से भी विभिन्न देशों में नई राष्ट्रीय जागृति उत्पन्न हो गई है और उसका परिणाम भारत में भी व्यक्त हुआ है।

इस स्वयं-निर्णय के तत्त्व पर भारत में भी कितने ही महत्त्व के प्रश्न खड़े हो रहे हैं। गान्धी-द्वारा सरकारी स्कूलों का बहिष्कार होने पर, राष्ट्रीय शिक्षा की अनेक संस्थाएँ व शालाएँ स्थान-स्थान पर खुलीं। धन का अभाव होने से यद्यपि ये संस्थाएँ ठीक-ठीक न चल सकीं, तथापि इनसे लोकमत की अनुकूलता दिखाई पड़ती है। पूना में तिलक महाविद्यालय और अहमदाबाद में गुजरात-विद्यापीठ राष्ट्रीय संस्थाएँ हैं। आर्य-समाज-द्वारा कांगड़ी, जालंधर इत्यादि स्थानों में स्थापित 'गुरुकुल' संस्थाएँ भी राष्ट्रीय पद्धति पर चल रही हैं। इससे सम्पूर्ण लोक-शिक्षा के विषय में सरकार ने अपनी पहले की नीति बहुत कुछ बदलकर जनता की माँगों को अधिकांश में स्वीकृत किया है। ढाका, रंगून, पटना, लखनऊ, दिल्ली, नागपुर, मैसूर, आगरा व हैदराबाद की उस्मानियाँ युनिवर्सिटियाँ स्थापित हो गई हैं तथा अन्य स्थानों में भी खुलने की चर्चा हो रही है। इसी विषय में किन्तु भिन्न प्रकार का एक और उद्योग रवीन्द्रनाथ ठाकुर का विश्व-भारती है। गांधी व रवीन्द्रनाथ इन दोनों के प्रयत्नों द्वारा प्राच्य व पाश्चात्य संस्कृतियों का मेल कराकर समस्त भूमंडल की मानव-जातियों में समभाव और प्रेम-भाव उत्पन्न किया जा रहा है। इन दोनों के कार्यों में अन्तर केवल

धारा के बहने का सतत प्रवाह है। एक समय वह था कि जब आर्य-संस्कृति का फैलाव चीन से पश्चिमी एशिया तक तथा पूर्व एवं पश्चिम के समुद्रों तक पहुँच गया था। जावा-द्वीप में बोरो बुदूर में बुद्ध-स्तूप का मन्दिर सन् ईस्वी के ८ वें शतक का भारतीय कला का नमूना है। ऐसी अप्रतिम स्थापत्य-रचनाएँ भूतल पर इनी-गिनी ही हैं। सारांश यह कि हमारे राष्ट्रीय इतिहास के संशोधन और खोज का कार्य अभी प्रारम्भ हुआ है। यह कार्य प्रस्तुत अंग्रेज़ी शासन-काल में शक्य है। अतः इसे स्वयं सिद्ध करने की सामर्थ्य प्राप्त करनी चाहिए। ऐसे शान्तिमय काल को प्रस्तुत करने के लिए बादशाह पंचम जार्ज के दीर्घ यशस्वी जीवन की कामना करते हुए तुम उनके प्रति अपने चित्त में श्रद्धा रक्खो। अंग्रेज़ी शासन में ज्ञान-ज्योति का विलक्षण प्रकाश देश में फैल रहा है और पाँच हज़ार मील दूर पर स्थित भाग्यशाली ब्रिटिश राष्ट्र का भारत से सम्बन्ध जुड़ गया है। जन्मोद्धार की ऐसी सुसंधि बड़े भाग्य से ही प्राप्त होती है। तुम बड़े होने पर राज्य-शासकों की सन्तोष-प्रद रीति से सहायता कर उनसे अपनी व अपने देश की उन्नति करा सकते हो। पीछे दिये हुए सायन्त इतिहास को पढ़कर यह उपदेश तुम्हें अवश्य ध्यान में रखना चाहिए। तभी तुम्हारा इतिहास पढ़ना सार्थक होगा।

—अंग्रेज़-मराठा युद्ध पहला १७७५—१७८२

१—सूरत की सन्धि १७७५; २—आरास की लड़ाई १७७६

३—पुरन्दर की सन्धि १७७६; ४—बारला की लड़ाई १७७९

५—बड़गाँव की सन्धि १७७९; ६—सालबाई की सन्धि १७८२

९—अंग्रेज़-मैसूर-युद्ध दूसरा १७८०—१७८४

१—पोर्टोनोवो २—शिवलिंग गढ़ की लड़ाएँ १७८१; ३—मंगलोर का घेरा १७८४, ४—मङ्गलोर की सन्धि १७८४

०—अंग्रेज़-मैसूर-युद्ध तीसरा १७९०—१७९२

१—भारिकेर की लड़ाई १७९१; २—श्रीरङ्गपट्टन की सन्धि १७९२

११—अंग्रेज़-मैसूर युद्ध चौथा, सन् १७९९

१—मलवली की लड़ाई; श्रीरङ्गपट्टन की लड़ाई १७९९

१२—अंग्रेज़ मराठा युद्ध दूसरा सन् १८०३—१८०५

१—बसई की सन्धि १८०२, २—अहमदनगर पर कब्जा, ३—असाई की लड़ाई ४—अरीगाम की लड़ाई ५—दिल्ली की लड़ाई, ६—लासवाड़ी की लड़ाई, ७—आड़गाँव की लड़ाई, १८०३, ८—सिन्धिया से सर्जे अंजनगाँव की सन्धि ९—भोंसले के साथ देव गाँव की सन्धि, होलकर से युद्ध, १०—दिल्ली की लड़ाई १८०४; ११—दीग, १२—फर्रुखाबाद की लड़ाई

१८०१ और १८ [illegible] १८०४

१३—[illegible] युद्ध सन १८१४ १८१६

१—[illegible] १८१६, २—[illegible]

१८१७ ३ [illegible] की लड़ाई १८१८,

४ [illegible] १८१८

१४ पिंडारी युद्ध १८१७ १८१८

१५—मराठा युद्ध तीसरा १८१७ १८१८

१—किरकी की लड़ाई १८१७ २—सीताबल्डी की

लड़ाई १८१७ ३—[illegible] की लड़ाई १८१७,

४ महिदपुर की लड़ाई १८१७ ५—कोरेगाँव

की लड़ाई १८१८ ६—[illegible] १८१८

१६—बर्मा युद्ध पहला १—[illegible] की लड़ाई, [illegible] और

३—[illegible] ४—[illegible] की संधि १८२६

१७—[illegible]-युद्ध १८३४

१८—अफ़गान-युद्ध पहला १८३८ १८४२

१९—सिंध आक्रमण युद्ध १—मियानी और दुब्बा [illegible]

२०—ग्वालियर युद्ध १—महाराजपुर और [illegible] की लड़ाइयाँ

सन १८४३

२१—सिक्ख युद्ध पहला १८४५ १८४६

१—मुदकी २—फीरोजशहर [illegible] अली

वाल और ४—सोब्राँव की लड़ाई [illegible]

लाहौर की संधि १८४६

२२—सिक्ख युद्ध दूसरा सन १८४८-१८४९

१—रामनगर १८४८, २—[illegible]

३—गुजरात १८४९

२३—बर्मा युद्ध दूसरा १—रंगून, २—पेगू [illegible] ३—[illegible]

बरमा पर अधिकार सन् १८५२

२४—सिपाहियों का बलवा सन् १८५७-१८५८

२५—अफ़ग़ान युद्ध दूसरा सन् १८७८-१८८०

१—गन्धमुक की संधि १८१९; मेवर १

कंधार की लड़ाइयाँ १८८०

२६—योरोपीय महायुद्ध १९१४-१८

२७—अफ़ग़ान-युद्ध तीसरा १९१९

प्रसिद्ध व्यक्तियों की नामावली

(१) प्राचीन शासन-काल

कनिष्क, चाणक्य, फाहियान, मेगास्थनीज़, श्री हर्ष,
गौतम बुद्ध, जनक, भोजराजा, याज्ञवल्क्य, हुएनसाङ्ग,
चंद्रगुप्त, पाणिनि, महावीर, विक्रमादित्य ।

(२) मुस्लिम-शासनकाल

अलाउद्दीन खिलजी, जुल्फिकारखाँ, मलिक अम्बर, मार्कोपोलो,
अबुलफ़ज़ल, टोडरमल, महम्मद ग़ज़नी, रामदेवराव
आमफ़खाँ, नूरजहाँ, महम्मद गोरी, राणासांगा,
कुतुबुद्दीन, पृथिवीराज, मुहम्मदबिनकासिम सुबुक्तगीन
चाँदबीबी, प्रतापसिंह, महाबतखाँ, सय्यदबन्धु
जयपाल, बहरामखाँ, मानसिंह, हिमू ।

(३) महाराष्ट्र शासन-काल

अम्बाजी, नानाजी मालुसरे, फतहसिंह भोंसले, रघुनाथराव,
नाराबाई, बाजीप्रभु, रघुजीभोंसले,
गार्दी, धनाजी यादव, बापू गोखले, रामचंद्रपंतअमात्य

[illegible]

[illegible]